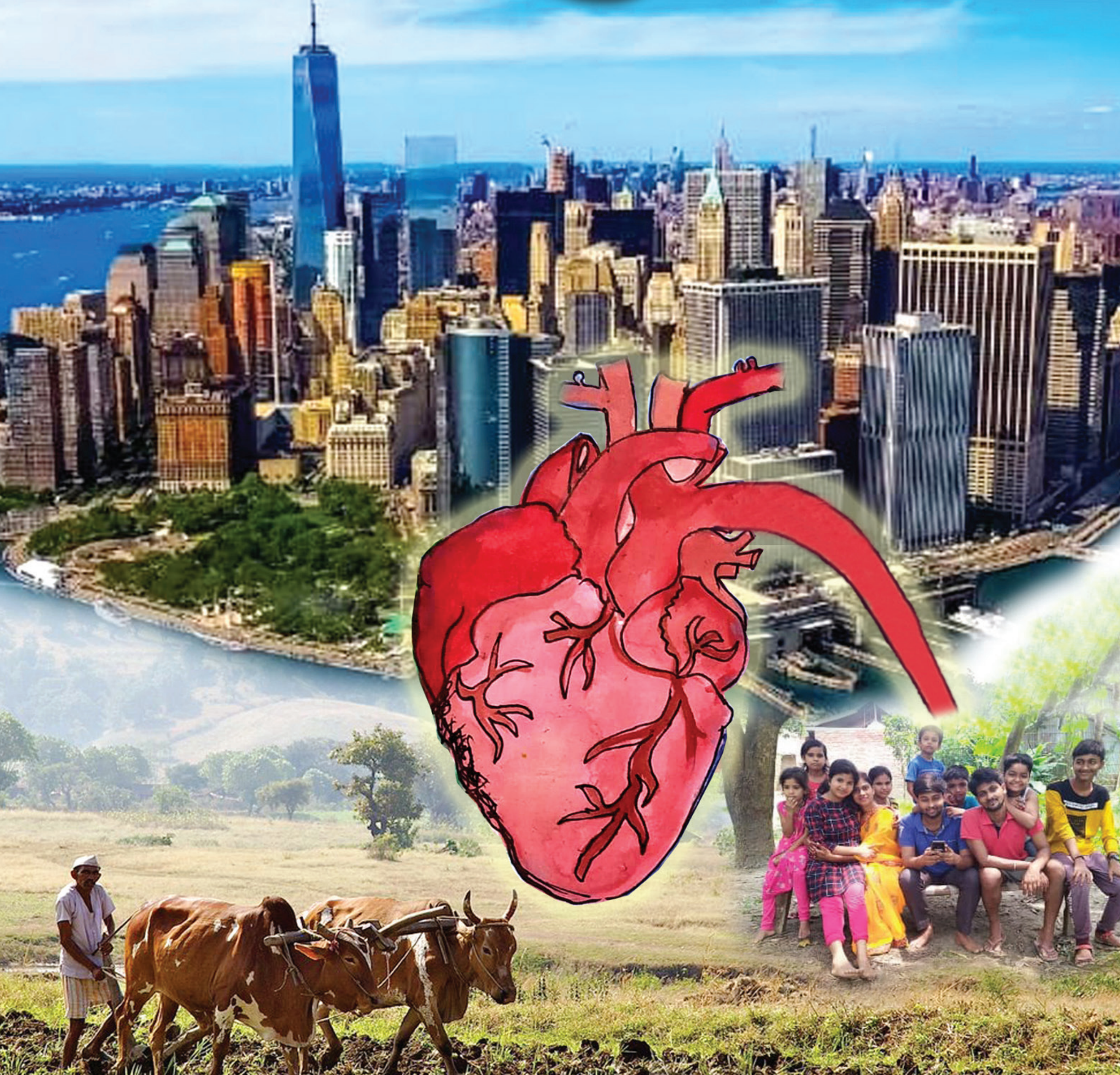
ISSN : 2582-1660
मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 3, अंक : 2, अक्टूबर-दिसंबर 2020
अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका



मिथिला, मैथिली आ मैथिल : ग्लोबल परिदृश्य

सिमानक पार मिथिला

दुनिया भरिमे मिथिला-मैथिलीक किछु गतिविधि सबहक झलकी





इंग्लैंड केर संसद मे आयोजित सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या केर मध्य मैथिली भाषा आ संस्कृति विषय पर संबोधन करैत दिल्ली विश्वविद्यालयक प्रो. अजीत झा (बामा कात), एहि अवसर पर उपस्थित मैथिल प्रतिनिधि मंडल (दहिना कात)



जापान स्थित मिथिला म्युजियममे कलाप्रेमी जापानी छात्रा सभहक संग मिथिला चित्रकला चित्रकारक पद्मश्री बौआ देवी आ श्रीमती विमला दत्त



रूस केर मास्को स्थित प्रवासी मैथिल संघ द्वारा आयोजित एकटा मैथिल मिलन समारोहक दृश्य

मूल्य : ₹ 25
वर्ष : 3, अंक : 2
अक्टूबर-दिसंबर 2020

तीरभुक्ति

RNI No. : DELMAI/2018/76698 ISSN : 2582-1660

अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

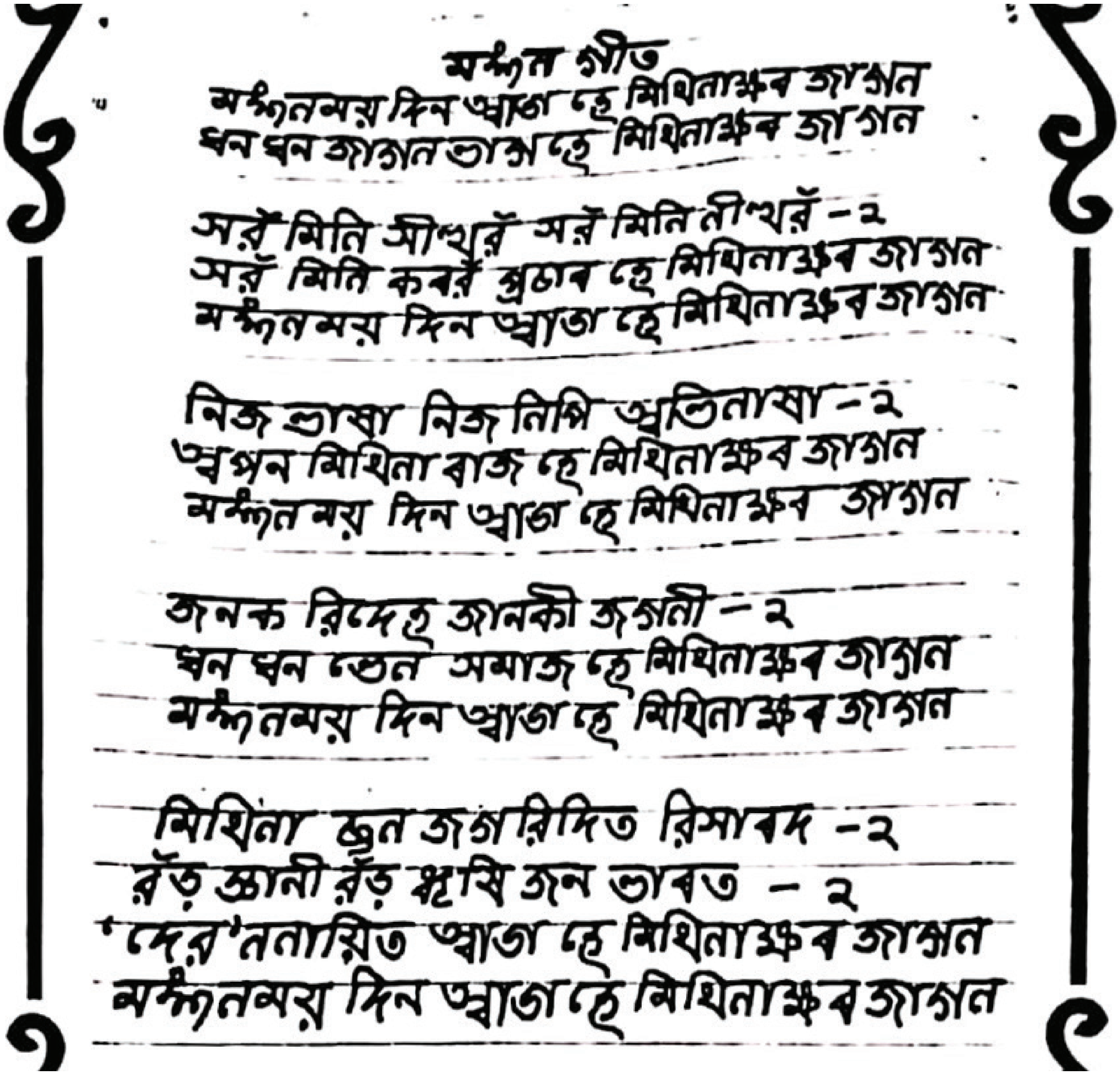
स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062
फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल: teerbhuktimaithili@gmail.com
कृपया पत्राचार लेल ईमेल कें प्राथमिकता देल जाए।

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 10



मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि मैथिलजन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास। एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक प्रत्येक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत। सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत। लिप्यातंरण क' अपन प्रविष्टि teerbhuktimaithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय (20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001) पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता (क्रमांक-8 केर विजेता)

सदरे आलम गौहर, मधुबनी,

मो. 9304012659

संपादकीय

प्रवास वा विस्थापन मनुखेटामे नहि अपितु सृष्टिक आनो प्राणीमे सनातन रूपें दृष्टिगोचर अछि। बेगूसरायक कावर झील सहित अनेकानेक पक्षी विहार सभ प्रवासी पंछी सबहक 'सीजनल' ठेकान बनैत अछि। ओ पंछी सभ अपन नैमित्तिक प्रवास पूर्ण भेलाक बाद अपन मूल ठेकान पर आपिस चलि जाइत अछि मुदा मानव प्रायः अपन नव ठेकानक नव मानव समूह संग समाविष्ट हेबाक यत्नमे रहैत अछि। ई किंशाइत मनुखक विशिष्ट विवेकक प्रतिफल अछि वा ओकर परिस्थिगत मजबूरीक प्रतिफल। ई समावेश कतहु न कतहु ओकर 'सामाजिक प्राणी' हेबाक अवधारणाक अनुरूपहि अछि, तें एहिमे नीक-बेजायक प्रश्न निरर्थक।

अनेकानेक कारण सं अनेक मानव समूह एक ठाम स विस्थापित भ दोसर ठाम स्थापित होइत रहैत ऐछि आ एहि क्रममे परम्परा, संस्कृति, भाषा आदिक संक्रमण सेहो घटित होइत रहैत अछि। ई संक्रमण कोनो एक समूहक पक्षमे धनात्मक त दोसर पक्षमे ऋणात्मक परिलक्षित होइत अछि। तें अस्मितामूलक विमर्शमे प्रत्येक समाज एकर व्याख्या सेहो अपना अपना ढंग स करैत अछि। एकरा किछु उदाहरण सं बुझबाक यत्न करबाक चाही।

लंदनमे रहनिहार 15 वर्षीय मैथिल बालकक ऊहापोह अछि जे ओ कतेक भाषा सीखय। देश काल केर अनुसार अंग्रेजी बिना ओकर काज नहि चलत। ओहिठाम उपस्थित प्रवासी भारतीय लोकनि संग विचार विनिमयमे हिन्दी प्रायः अनिवार्य स्थितिमे अछि। ओतय स्कूल बच्चा सभकें अतिरिक्त भाषा सिखबाक अनिवार्य विकल्प दैत छैक जाहिमे स्पेनी, फ्रेंच, इतालवी, रूसी, जर्मन इत्यादि रहैत छैक। माता-पिता सांस्कृतिक रूपें जागृत छथि, तें, मैथिली सिखबाक विशेष आग्रह छैक। एहन नहि जे ई समस्या मात्र विदेशमे रहनिहार मैथिल लोकनिक मात्र झेल रहलाह, अपनहि देशमे अनेक राज्य सभमे प्रवासित आ स्थायी ठेकान बनौनिहार मैथिल लोकनिक ई स्थिति अछि। विदेशमे प्रवासित भेलाक बाद अनेक भाषेतर संक्रमण सेहो चुनौती प्रस्तुत करैत अछि।

लंदन प्रवासी उपरोक्त बालकक माता-पिताक दुविधा ई रहैत अछि जे ओ अपन बालकक मुंडन-जनेऊ आदि दायित्वक निर्वाह कतय-कोना करथि। ओहिठामक कैलेंडरक हिसाबे जहिया दीर्घकालिक अवकाश भेटैत अछि, ताहि समय मिथिलाक पञ्चाङ्ग हिसाबे शुभ मुहूर्त नहि भेटत। जखन शुभ मुहूर्त रहैत अछि तखन दुइयो हफ्ताक अवकाश मोश्किल। ई त लगन तिहारक गप। छठि-दिवाली एहन समय सेहो एहन प्रवासी अभिभावक लेल बहुत कठिन जिनक बाल-बच्चा ओहिठाम अध्ययनरत छथि। ई त सुखद समाचार जे किछु समय सं अनेक देश सभमे होली मिलन आ छठि संध्याक भ रहल, आ इएह आयोजन सभ 'डूबते को तिनके का सहारा' बनि सुधी लोकनिक सांस्कृतिक पिपासामे स्वातिक बूंद जेना पिपासशमन केर अनुभूति मात्र क रहल मुदा भौतिक दूरीक कसक त रहिए जाइत अछि। ई कसक आ ओकर समाधानक औनाहटि स्कॉटलैंड स न्यू जर्सी धरि विविध रूप-स्वरूप मे परिलक्षित होइत अछि, एहन किछु प्रसंगक उल्लेख एहि अंकक 'सिमानक पार मिथिला' खण्डमे द्रष्टव्य अछि। अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति प्रवासी लोकनिक पिपासा कतेक तीव्र रहैत अछि, से कीर्तिनाथ झा जीक आलेखमे द्रष्टव्य अछि।

ई त धन्य अछि आजुक तकनीक जे भौतिक दूरी सभकें आभासी रूपें कम करबाक पूरा अवसर द रहल। आब मिथिलाक पाबनि तिहार देखबाक लेल विदेशमे मात्र टेलीविजनक आसरा नहि बल्कि, व्हाट्सएप आ जूम एहन युक्ति सभ अहांकें निर्दिष्ट स्थल पर प्रत्यक्ष हेबाक अधिकतम अनुभूति द रहल आ ई सांस्कृतिक संक्रमणक पटल पर हमरा सबहक पक्षमे एकट सकारात्मक ऊर्जाक काज करत, से आस कएल जा सकैछ। सिंगापुरमे रहनिहार एकटा मैथिल परिवार मिथिला चित्रकला, मैथिली संगीत आदि सं अनुराग राखैत छल। आइ एहि तकनीक केर प्रतापें ओ लोकनि मिथिलाक्षर लिपि मे प्रवीण भेलाह, मैथिली साहित्य स हुनक सम्पर्क बढ़ल, आब मिथिला चित्रकला सिखबाक यत्नमे सेहो छथि।

एहि सभ विविध संक्रमण बीच प्रश्न ओतहि रहैत अछि जे एहि यात्रामे सांस्कृतिक प्रवाह सतत रहत वा विस्मृति एकर मजबूरी होएत? नॉर्वे स्थित चिकित्सक आ लेखक प्रवीण झा कहैत छथि जे ई सांस्कृतिक सातत्यक प्रश्न आजुक समयमे कल्चरल आइडेंटिटी धरि सीमित नहि अछि वरन ट्रांसक्लचरल कैपिटल केर रूप ल चुकल अछि आ ई सम्पत्ति मात्र प्रवासी समुदाय लग रहैत अछि। वर्तमान तकनीकी सहजता आ आन घटक पर विचार करी त, एहि अंतरसांस्कृतिक सम्पत्तिक उपयोग नहि मात्र सांस्कृतिक अस्मिताक संरक्षणमे, अपितु आन तरहक उन्नतिक लेल सेहो कएल जा सकैछ। एहि अंकक 'जगजियार मैथिल' खण्डमे जाहि घरमुंहा समर्पण वृत्ति दिश संकेत कएल अछि, ओ वृत्ति तकनीक केर मदति सं आर मजगूत स्वरूप ल सकैत अछि। इंग्लैंडक बाथ सिटीमे डॉक्टरी केलाक बाद अपन मातृभूमिमे शिक्षण प्रकल्प आरम्भ कयनिहार डॉ. रामस्वरूप महतो होथि वा इंग्लैंडहि सं चाकरी क घुरल डॉक्टर रवींद्र नारायण सिंह वा फेर अनेक देशमे प्रवास कयलाक उपरांत अपन गाममे स्वास्थ्य प्रकल्प आरम्भ कयनिहार मोतीलाल ठाकुर, जाहि तरहक प्रयास ओ लोकनि कयलनि, से आर तीव्र रूपें करबाक अनुकूल परिस्थिति आब बनि गेल अछि।

मैथिल डायस्पोराक वैयक्तिक उपलब्धि पर निगाह देल जाए त इहो एकटा संतोषप्रद चित्र उपस्थित करैत अछि। एतय धरि जे मधुबनी स निकलल कलाकार प्रशांत प्रभाकर दुनियाक टॉप 10 सीईओमे गण्य संजय झा होथि वा माइक्रोसॉफ्टमे परचम लहरेनिहार राजेश झा वा फार्मा उद्योगमे विश्वमे अपन नाम स्थापित कयनिहार अजय झा, हिनका लोकनिक उपलब्धि भले ही वैयक्तिक होय, मुदा एक समुदाय रूपमे गर्व करबाक अवसर सम्पूर्ण मिथिलाकें।दैत अछि। एहि वैयक्तिक उपलब्धि सभकें सामाजिक पूंजी सं जोड़बाक आवश्यकता धरि अछि। आब सात समंदर पार सेहो मैथिल संस्था सभ ठाढ़ भ रहल अछि आ ओहि संस्था सभमे एक तरहक घरमुंहा दृष्टि विकसित भ रहल अछि। मिथिला कल्चरल सोसायटी (यूके), मैथिल्स ऑफ नार्थ अमेरिका, एसोसिएशन ऑफ नेपाली तराइन इन अमेरिका, बिझार (सिंगापुर), बिहार फ्राइटर्निटी (जर्मनी), समेत अनेक संस्था सभ सांस्कृतिक सेतु बनेबाक लेल आ किछु सीमा धरि अपन मातृभूमिकें किछु घुरा क देबाक लेल प्रयत्नशील अछि।

विचार करबाक विषय ईहो जे मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा जों जापान मे मिथिला म्यूजियमक स्थापना क सकैत अछि आ टोकियो हासेगावा सं ई कहबा सकैत अछि जे "आपके कोहबर, अरिपन, त्रिशूल आदि एक साथ देखने आपको जापान में मेरे मिथिला म्यूजियम आना पड़ेगा'' त आजुक परिस्थितिमे उपलब्ध अन्तरसांस्कृतिक सम्पदाक उपयोग क मिथिलामे एहन एहन मिसाल किएक नहि स्थापित भ सकैछ? यदि यूट्यूब पर टाई बान्हय केर शताधिक तरीका उपलब्ध भ सकैछ त धोती-साड़ी पहिरबाक दशेक तरीका किएक नहि उपलब्ध कराओल जा सकैछ?

– ऋतेश पाठक

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी केर अधीन कर मे छूट योग्य रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	**अखिल भारतीय मिथिला संघ** **(Akhil Bhartiya Mithila Sangh)**
खाता संख्या	:	**11084229861**
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	**110002087**
बैंक	:	**स्टेट बैंक ऑफ इंडिया**
शाखा	:	**पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली**

विश्व भरिमे प्रवासी मैथिल

✍ भास्कर ज्योति



भास्कर ज्योति संप्रति, बिहार सरकारमे सब रजिस्ट्रारक पोस्ट पर कार्यरत छथि। ओ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सं ''प्रवासी भारतीय'' विषय पर एमफिल आ पीएचडी केने छथि, शोधक क्रममे भारत सरकारक फेलोशिप पर हुनक डेनमार्क आ लंदनक यात्रा भेल छनि। लंदन प्रवास केर दौरान ओ विशेष रूप सं मैथिली डायस्पोरा पर शोध कार्य केलनि जे हुनक पीएचडी थीसिस केर अध्याय सेहो अछि।

संयुक्त राष्ट्र संस्था यूनाइटेड नेशन डिपार्टमेंट फॉर इकनोमिक एंड सोशल अफेयर द्वारा प्रकाशित आंकड़ाक अनुसारें भारत, प्रवासी लोकनिक मामलामे विश्वक अग्रणी देश अछि। भारतक कुल 2.5 करोड़ मजगुत प्रवासी समुदाय विश्वक अलग अलग भू-भाग मे प्रवास क' रहल छथि। एहि संख्याक विशालता कें एहि बात सं बुझल जा सकैत अछि जे विदेश मे प्रवास कर' बला कुल भारतीय नागरिकक जनसंख्या ग्रीस'क कुल जनसंख्या केर दुगुना हेतैक वा ग्रीस आ हंगरी केर कुल जनसंख्या केर योगक समतुल्य हेतैक। विश्वक अनेको प्रमुख विश्वविद्यालयमे आय काल्हि डायस्पोरा स्टडीज एकटा नव पाठ्यक्रमक रूपमे आकार ल' रहल अछि तकर प्रमुख कारण अछि मानव सभ्यता केर घुमन्तू प्रवृत्ति। विश्वक कोन-कोन सं लोक सभ विभिन्न कारणें नित्य एक ठाम सं दोसर ठाम विस्थापित भ' रहल छथि। एहि आलोकमे प्रवासी मैथिल समुदाय केर अध्ययन सेहो आवश्यक बुझना जायत अछि।

डायस्पोरा (प्रवासी) के थिकाह?

आधुनिक इतिहासमे यहूदी सबकें प्रथम प्रवासी मानल गेल अछि। जर्मनी मे यहूदी सभक संग भेल अत्याचारक उपरांत हुनका सभक बृहत् विस्थापन शुरू भेल जेकर बाद ओ सब फिलिस्तीन वा इजराइल मे बसलाह मुदा ओत्तहुं सं अरब इजराइल युद्ध आदिक कारणें हुनका सबकें विस्थापित होम' पड़लनि। एहेन विस्थापित लोक सबकें प्रवासी नागरिक कहल गेल। मुदा बाद मे विस्थापित होम' बला सब लोक कें प्रवासी मानल जाय लागल।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका डायस्पोरा कें परिभाषित करैत लिखैत अछि जे प्रवासी ओ थिक जे अपन पूर्व केर निवास स्थान वा अपन पूर्वज सभक निवास स्थान कें छोड़ि कें दीर्घ काल धरि विदेश मे कोनो स्थान पर रह' लागैत छथि। वैह ठाम भारतक विदेश मंत्रालय डायस्पोरा कें परिभाषित करैत कहैत अछि जे डायस्पोराक अर्थ एहेन कोनो भी व्यक्ति सं अछि जे सम्प्रति भारत गणराज्यक सीमा कें छोड़ि कें विश्व मे कोनो भी आन भूमि पर रहैत छथि, हुनक सखा संतति सेहो डायस्पोरा मानल जायत अछि।

विदेश मंत्रालयक परिभाषाक अनुसारें भारत मे तीन श्रेणीक डायस्पोरा अछि: एन.आर.आई. (अप्रवासी भारतीय), पी.आई.ओ. (भारतीय मूल केर नागरिक) आ ओ.सी.आई. (ओवरसीज सिटीजन ऑफ़ इंडिया)। प्रवासी भारतीय सबपर विशेष रूप सं ध्यान देबाक लेल अटल बिहारी वाजपेयी जीक प्रधानमंत्रित्व कालमे एक गोट पृथक मंत्रालय केर निर्माण कयल गेल, जेकर नाम प्रवासी भारतीय (कार्य) मंत्रालय राखल गेल। हालांकि बाद मे ई मंत्रालय कें विदेश मंत्रालय मे विलय क' देल गेल।

प्रवासी मैथिल

अपन पद्य संग्रह चित्रा मे यात्री जी "मैथिल के छथि?'' केर सवाल सं संशय उठबैत लिखने छलाह जे मिथिला क्षेत्र मे रह' बला एक एक गोटे मैथिल छथि चाहे ओ कोनो भी जाति धर्म वा संप्रदाय सं अबैत छथि। मुदा प्रवासी मैथिल केर

संपर्क : कृष्णा नगर, वार्ड नं.-23, बटराहा, सहरसा, बिहार
मो. : 9015753660, ईमेल: bhaskar_jyoti@yahoo.com

वितान कें बुझबा सं पहिने ई आवश्यक अछि जे मिथिलाक भौगोलिक परिसीमा कें बूझल जाय। पुराण सं ल' कें आधुनिक इतिहास धरि मिथिला केर सीमा निर्धारित करैत एहि कें उत्तर मे हिमालय, पूरब मे कोसी, दक्षिण मे गंगा आ पश्चिम मे गंडकी केर मध्य अवस्थित मानल गेल अछि। नेपालक तराई बला हिस्सा उत्तर मे मिथिलाक सीमा कें नेपालक राष्ट्र राज्य सं पृथक करैत अछि। एहि तरहें देखला सं मिथिला चहुं दिस सं पर्वत आ सरिता सं घेरल एकटा भूभाग बुझना जायत अछि जे मिथिला कें एक गोट पृथक पहिचान प्रदान करैत अछि।

राजनैतिक दार्शनिक क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस केर मानब छनि जे मिथिलाक इतिहास बुझबा लेल मिथिलाक लोक कथाक अवलोकन आवश्यक अछि। हालांकि हुनक ईहो कहब छनि जे कोनो सभ्यता कें लोक कथा सं पढ़बा आ देखबाक दुष्परिणाम ई होयत अछि कि ओहि समाजक खाली मुख्य वर्गक लोककथा बहरायत अछि अन्य वर्ग एहि सं अछूत रहि जायत छथि। मिथिलाक सन्दर्भ मे लोक गाथा आ इतिहास मे बड्ड बेसी आत्म निर्भरता रहल अछि।

मिथिला सं बाहर जेबाक परंपरा आ मिथिला मे आबि कें बसबाक परंपरा कोनो नव नहि अछि। नाना तरहक पौराणिक स्त्रोत केर अनुसार अयोध्या केर राजा निमि त्यागक भूमि मिथिला मे अबै बला प्रथम व्यक्ति छलाह। कालांतर मे हुनक पुत्र मिथि एहि भूमि पर मिथिला राज्यक निर्माण कयलनि। शतपथ ब्राह्मण आ पुराण मे वर्णित कथाक अनुसार सरस्वती नदी पर राज करै बला राज राजा विदेह मिथिलाक भूमि पर आयल छलाह आ बाद मे एतय राज्य स्थापित क' कें एहि प्रदेशक नाम विदेह रखलनि। एवंक्रमेण मिथिला मे आवाजाही लागल रहल।

जनक नंदिनी सीताक विवाह मर्यादा पुरुषोत्तम राम सं भेलनि, तदुपरांत ओ मिथिला सं अवध गेलथिन आ वनवासक क्रम मे हुनक लंका गमन भेलनि। एहि तरहें लिखित पौराणिक इतिहासक अनुसारें मां सीता कें मिथिलाक प्रथम प्रवासी मैथिल मानल जा सकैत अछि। दत्तवती महाकाव्य मे मिथिलाक गुरुकुल सबसं दोसर गणराज्यक गुरुकुल सबमे छात्र सभक आगमन प्रस्थानक विवरण सेहो भेटैत अछि। एहि सब ऐतिहासिक आ पौराणिक स्रोत केर अवलोकन सं मिथिलाक प्रवासी चरित्रक दर्शन होयत अछि।

प्रवासी मैथिलः आधुनिक परिप्रेक्ष्य

भारतमे स्वतंत्रतोपरांत अर्थव्यस्था आ समाजक क्षेत्रमे बड्ड ढांचागत परिवर्तन आयल। एक दिस विदेश नीतिमे परिवर्तन सं विदेश मे पठन पाठनक द्वार खुल्ला दोसर दिस रोजगारक अवसर सेहो द्रष्टव्य भेल। भारत मे 1990 केर दशक'क बाद जखन नव आर्थिक नीति आयल परिणामस्वरूप वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था आ निजी क्षेत्र पर बल विदेश नीतिक प्रमुख हिस्सा भ' गेल। मैथिल सब लेल सेहो ई एकटा नव अवसर ल' कें आयल।

> **मैथिल सब मूल रूपेण रोजगार केर दृष्टि सं विदेशक रूख बेसी कयलनि। मिथिला स्वतन्त्रतोपरांत आर्थिक रूप सं विपन्न क्षेत्र रहल अछि, जाहि ठाम एक दिस शिक्षाक समुचित संसाधनक कमी रहल दोसर दिस तकनीकी क्षेत्र मे रोजगार अथवा वाणिज्य वा व्यवसायक क्षेत्र मे शुरू सं अवसरक कमी रहल अछि।**

मिथिलाक संभ्रांत आ धनाढ्य परिवारक नेना सभ पढ़क लेल इंग्लैंड केर ऑक्स-ब्रिज (ऑक्सफ़ोर्ड- कैंब्रिज) विश्वविद्यालय दिस रूख करै लगलाह। हालांकि पंजाबी वा गुजरती डायस्पोरा समुदायक तुलनामे मैथिल सभक मध्य नै खाली ई ट्रेंड देर सं आयल अपितु संख्याक दृष्टि सं सेहो ई बड्ड कम छल।

मैथिल सब मूल रूपेण रोजगार केर दृष्टि सं विदेशक रूख बेसी कयलनि। मिथिला स्वतन्त्रतोपरांत आर्थिक रूप सं विपन्न क्षेत्र रहल अछि, जाहि ठाम एक दिस शिक्षाक समुचित संसाधनक कमी रहल दोसर दिस तकनीकी क्षेत्र मे रोजगार अथवा वाणिज्य वा व्यवसायक क्षेत्र मे शुरू सं अवसरक कमी रहल अछि। ओहेन परिस्थिति मे गरीब लोक सब आंतरिक रूप सं रोजगार वा सुअवसरक ताकमे दिल्ली-बम्बई विस्थापित भेलाह, मध्यमवर्गीय परिवारक शिक्षित युवा सभ विदेश दिस रूख कयलनि, हालांकि संख्या बड्ड बेसी कहियो नहि रहल।

आन डायस्पोरा सं भिन्नता

मैथिल डायस्पोरा आ आन डायस्पोरा समुदाय यथा पंजाबी, गुजराती मे किछु मूल अंतर अछि। पंजाबी, गुजराती, तमिलनाडु आदिक डायस्पोरा समुदायक तुलनामे मैथिल डायस्पोरा कम प्रसिद्ध आ प्रचलित समुदाय अछि। चूंकि एहि आलेखक लेखक'क शोध कार्य डायस्पोरा पर अछि आ एहि लेल ओ फिल्ड ट्रिप सेहो कयने छथि, ओहि अनुभवक आधार पर ई कहब अनुचित नै हैत जे मैथिल डायस्पोरा केर वैश्विक डायस्पोरा समुदायक मध्य पृथक् पहिचान नहि अछि अथवा बड्ड कम अछि। ओ सब प्रायः बिहारी डायस्पोरा समुदायक रूपेण चिन्हल जायत छथि।

डायस्पोरा पर जे शोध साहित्य उपलब्ध अछि ओ प्रायः पंजाबी वा गुजराती डायस्पोरा पर केंद्रित अछि। एकर पाछु जे मुख्य कारण थिक, से अछि स्वतंत्रता पूर्वक इतिहास। स्वतंत्रता सं पूर्व पंजाबी आ गुजराती व्यावसायिक समुदाय इंग्लैंड भिन्न भिन्न मार्ग सं गेल। किछु गुजराती, सिंधी समुदाय केर लोक सब पहिने पूर्वी अफ्रीका केर देश सब जेना युगांडा, इथियोपिया आदि गेलाह जे सब ओहि समय मे इंग्लैंड केर उपनिवेश छल मुदा कालांतर मे सत्ता परिवर्तन केर उपरान्त युगांडा आदि सं लोक सभ आन-आन देश मे विस्थापित भेलाह। इंग्लैंडक मंत्री प्रीति पटेल जे गुजराती परिवार सं अबैत छथि सेहो युगांडा केर रास्ता सं इंग्लैंड गेल छलीह। एहि तरहें देखल जाय त' पंजाबी वा गुजरातक लोकक विदेश सं संपर्क बड्ड पहिने स्थापित भ' गेल

छलनि। शुरुआत मे हुनका सबकें बड्ड बेसी नस्लीय भेदभाव केर शिकार सेहो होम' पड़लनि, एहि लेल शुरुआत मे हुनका सभक स्थिति पर ढेर साहित्य लिखल गेल आ ओ परंपरा एखनो धरि विद्यमान अछि। एहि लेल डायस्पोरा पर अध्ययन कर' बला लोक कें मुख्य रूपेण हुनके सभपर साहित्य भेटैत छनि, मिथिला वा मैथिली डायस्पोरा समुदाय पर कोनो साहित्य नहि भेटैत अछि।

अफ्रीका केर किछु देश मे ओहि समयक बिहारक भोजपुर क्षेत्रक मजदूर सब अंग्रेज द्वारा ल' गेल छलाह। ओहेन तरहक मजदूर कें गिरमिटिया केर नाम सं जानल जायत अछि। कालांतर मे ओ सब ओहि ठाम बसि गेलाह, आरम्भक इतिहास हुनक सभक संघर्ष आ शोषण केर छलनि मुदा एशिया आ अफ्रीका केर अंग्रेजी गुलामी छुटबाक उपरान्त वैह सब लोक ओत्तुका मूल नागरिक बनि गेलाह आ बाद मे ओहि सभ देशक प्रधानमंत्री आ राष्ट्रपति भेलाह। एहि लेल आय धरि ओ सब देशक नागरिक केर सम्बन्ध बिहारक बक्सर, आरा आदि जिला सं बहरायत अछि, कत्तेको एहेन देश मे यथा मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी आदि मे भोजपुरी भाषा प्रमुखता सं बाजल जायत अछि। मुदा मैथिल सभक गिरमिटियाक एहेन कोनो इतिहास नहि रहल अछि ताहि सं विश्वक कोनो देशमे मैथिल डायस्पोरा केर कोनो पुरान इतिहास वा संपर्क नहि पाओल जायत अछि।

रोजगारमे भिन्नता

पंजाबी वा गुजराती डायस्पोरा समुदाय मुख्य रूप सं अमेरिका वा इंग्लैंड मे व्यवसाय कर' बला समुदायक रूपमे प्रसिद्ध अछि। चूंकि ओ सब आइ सं एक सए बरख सं पहिने सेटल भेलाह एहि लेल तेसर वा चारिम पीढ़िक लोक सभ आब सेवा क्षेत्रमे सेहो आबि रहल छथि। मुदा मैथिल डायस्पोरा समुदाय प्राय: पहिल पीढ़िक डायस्पोरा छथि। मैथिल सब इंग्लैंड वा अमेरिका पढ़ि लिखिं कें उच्च सेवा सब लेल गेलाह। जं इंग्लैंडक बात कयल जाय त' 1970 केर दशक मे इंग्लैंड मे प्रवासी डॉक्टर सभक बाढ़ि आबि गेल छल। ओहि काल मे मिथिला क्षेत्र सं सेहो अनेक लोक भारत मे डॉक्टरी केर पढाय पूरा क' कें इंग्लैंड गेलाह। इंग्लैंड मे मैथिल डॉक्टर सभक संख्या मे ओहिनो ढेर रास डॉक्टर शामिल छथि जे नेपालक काठमांडू वा धरान सन जगह सं डॉक्टरी केर पढाय पूर्ण केलाह। एहेन कहल जायत अछि इंग्लैंडक प्रतिष्ठित नेशनल हेल्थ सर्विस (एन एच एस) मे अधिकाधिक संख्या भारतीय डॉक्टर केर अछि जाहिमे एक समय मैथिल डॉक्टर सब सेहो नीक संख्या मे छलाह।

मिथिला क्षेत्र मे चूंकि शुरू सं उच्च शिक्षाक बड्ड नीक संस्था सब नहि छल एहि लेल तकनीकी वा प्रोफेशनल शिक्षा हासिल करबाक लेल विदेश जेबाक छोट मोट ट्रेंड रहल अछि। रूस मे मेडिकल केर शिक्षा भारतक तुलना मे सस्ता छल एहि लेल मिथिला क्षेत्र सं सेहो लोक सब रूसमे मेडिकल केर शिक्षाक लेल जायत छलाह। एखनो रूसक बगल मे अवस्थित देश यूक्रेन मे मेडिकल केर शिक्षा सस्ता अछि, मुट्ठी भरि मैथिल यूक्रेन आदि सं सेहो मेडिकल केर डिग्री लैत छथि। मुदा शिक्षा पूर्ण हेबाक उपरान्त भारत एबाक बजाय ओहिमे सं ढेर रास लोक इंग्लैंड वा रूसे मे बसि गेलाह, ई पैटर्न मेडिकल डिग्री हासिल कर' बला मैथिल समुदाय मे एखनो विद्यमान अछि।

मुख्य रूप सं मैथिल डॉक्टर आ इंजिनियर सब हि विदेश मे अपन सेवा द रहल छथि, मुदा एकटा जे नव ट्रेंड हालक दशक मे देखल गेल अछि रोजगारक क्षेत्र मे से अछि इंजिनियर आ डॉक्टर सभक पत्नी द्वारा अलग अलग क्षेत्र मे कार्य करब।

1990 केर दशक के बाद अमेरिका केर सिलिकन वैली हो वा इंग्लैंडक लंदन, मैथिल इंजीनियर सभक उपस्थिति सब जगह दर्ज कयल गेल। ज' त 1970 – 1990 धरि अमेरिका वा यूरोप मे मैथिल डॉक्टरक संख्या केर आधिक्य छल आब हुनका सबकें सॉफ्टवेयर इंजिनियर सब पाछां छोड़ि देने छथि। आईबीएम, टीसीएस, इनफ़ोसिस एहेन कंपनी सब ऑनसाईट कार्य लेल इंजिनियर सबकें विदेश भेजैत अछि। लंदन मे कत्तेको इंजिनियर सब पैघ-पैघ इन्वेस्टमेंट बैंकर केर कार्य क' रहल छथि।

मुख्य रूप सं मैथिल डॉक्टर आ इंजिनियर सब हि विदेश मे अपन सेवा द रहल छथि, मुदा एकटा जे नव ट्रेंड हालक दशक मे देखल गेल अछि रोजगारक क्षेत्र मे से अछि इंजिनियर आ डॉक्टर सभक पत्नी द्वारा अलग अलग क्षेत्र मे कार्य करब। बेसी मैथिल डायस्पोरा पुरुष छलैथ जिनका विदेश मे रोजगारक अवसर भेटलनि आ समयोपरांत हुनका सबकें ओहि देश सभक नागरिकता भेट गेलनि। विवाहोपरान्त हुनक सभक पत्नी सब सेहो विदेश मे अपन अपन शैक्षणिक योग्यताक अनुसारें कार्य कर' लगलीह, एहि तरहक कार्य मे सर्वोपरि अछि प्राथमिक स्कूल सभमे शिक्षकक कार्य, कंपनी सभमे ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट केर कार्य वा स्वरोजगार। किछु एहनो महिला सब छलीह इंग्लैंड मे जिनका स्थानीय किछु परीक्षा पास करबाक उपरान्त स्थानीय निकाय सबमे सरकारी नौकरी सेहो भेट गेल छलनि। बड्ड कम संख्या मे मुदा किछु लोक व्यवसायक क्षेत्र मे सेहो छथि मुदा अधिकतम संख्या सेवा क्षेत्र'क अछि। खाड़ी देश सबमे किछु एहनो मैथिल सब छथि जे मेहनत मजदूरीक कार्य करैत छथि। मुख्य रूप सं एहेन तरहक ब्लू कालर कार्य कर' बला लोक सब मुस्लिम समुदाय सं अबैत छथि।

एकरा सं पृथक् किछु एहनो मैथिल सब छथि जे विदेश मे भारत सरकारक मंत्रालय वा उपक्रम सबमे पदाधिकारी वा प्रतिनिधि केर रूपमे रहैत छथि। उदहारण स्वरुप इंग्लैंडक लिस्टर शहर जेकि पंजाबी डायस्पोरा सं आच्छादित शहर अछि ओत्त' बैंक ऑफ़ बड़ौदा मे मैनेजर श्री प्रवीण चंद्र नामक एकटा मैथिल कत्तेको साल

सं पोस्टेड छथि। ताहिना अफ्रीका केर युगांडा मे भारतीय एम्बेसी मे केशव भारद्वाज जी कत्तेको साल सं अपन सेवा द' रहल छथि। विश्व बैंक केर पश्चिमी एशिया क्षेत्र केर निदेशक केर रूप मे सरोज झा कत्तेको साल पश्चिम एशियाई देश सबमे प्रवास कयलनि। एवंक्रमेण भारत सरकार सेवा मे सेहो ढेर रास मैथिल अलग अलग देश मे प्रवास क' रहल छथि आ ओत्तुका प्रवासी समुदाय सं मिलि कें कार्य करैत छथि।

निवास स्थान मे भिन्नता

जेना कनाडा या अमेरिका केर किछु विशिष्ट क्षेत्र पंजाबी डायस्पोरा समुदाय केर आधिक्य सं वैह पहिचान सं जानल जा लागल अछि ओहेन तरहक कोनो पैटर्न मैथिल डायस्पोरा सं सम्बंधित कोनो स्थान सं जुड़ल नहि अछि। इंग्लैंड मे वेम्ब्ले नामक जगह मुख्य रूप सं गुजराती डायस्पोरा सं भरल अछि, ओहि क्षेत्र मे जेबा सं लोक कें पल भरि लेल विस्मृत भ' जेतैक जे ओ भारत मे नहि छथि, ओहिना लंदन मे साउथहॉल नामक जगह अछि। साउथहॉल कें त' लोक मिनी पंजाब धरि कहैत छथि। सड़कक कात मे जिलेबी केर दुकान, ढेर रास गुरुद्वारा इत्यादि ओहि जगह कें पंजाबक पहिचान दैत अछि , मुदा मैथिल सभक एहेन कोनो विशिष्ट इलाका नहि अछि।

मैथिल सब अपन अपन रोजगारक हिसाब सं ओहि देशक अलग अलग स्थान पर निवास करैत छथि। मैथिल सब मे ईहो देखल जायत अछि जे ओ स्थानीय नागरिक सभक संग मिलि जुलि कें रहैत छथि। कोनो विशिष्ट स्थान नै हेबाक जे प्रमुख कारण अछि से अछि पंजाबी वा गुजराती डायस्पोरा केर तुलना मे कम संख्या हैब आ दोसर कारण रोजगार मे विविधता। मैथिल सभमे विदेश मे रहि कें ओहि देशक प्रति एकटा राष्ट्रीयता केर भाव देखल जायत अछि वैह ठाम पंजाबी वा गुजराती डायस्पोरा मे क्षेत्रीयता केर भाव प्रबल रहैत अछि।

विदेश मे मैथिल संस्कृति केर निर्वाह

मैथिल सभक संख्या ओना त' आन प्रवासी समुदायक तुलनामे कम अछि कोनो भी आन देशमे मुदा ई देखल गेल अछि जे हुनक सभक मध्य मिथिला मैथिलीक सांस्कृतिक प्रवाह अविरल भाव सं प्रवाहित अछि। सब देश मे रह' बला मैथिल सब अपन अपन सांस्कृतिक संगठन बनौने छथि, जाहि केर अंतर्गत ओ सब आपसमे एक दोसर सं संपर्क मे रहैत छथि। इंग्लैंड मे मिथिला कल्चरल सोसाइटी फॉर यूके नामक एकटा संगठन अछि, जेकर अपन वेबसाइट आ फेसबुक पेज सेहो अछि वैह ठाम अमेरिका मे मैथिल्स ऑफ़ नार्थ अमेरिका (Mona) आ असोसिएशन ऑफ़ नेपाल तराईएन इन अमेरिका (ANTA) सन संस्था सब मैथिल सबकें एकजुट कर' मे मदद करैत अछि।

जे मैथिल परिवार रोजगार आदि केर दृष्टि सं विदेश मे जा कें बसि गेलछथिन हुनका सब लेल किछु चुनौती सेहो छनि, एहि चुनौती केर वितान सांस्कृतिक, सामजिक, आर्थिक सं ल' कें भाषायी धरि अछि। एहेन तरहक सर्वोपरि चुनौती मे सं एक अछि अपन भाषा कें संरक्षित क' कें रखनाय।

मैथिल्स ऑफ़ नार्थ अमेरिका नामक संस्था द्वारा विगत किछु वर्ष सं अमेरिका मे विद्यापति पर्व समारोहक आयोजन कयल जा रहल अछि जाहिमे मैथिल सांस्कृतिक कार्यक्रम आ मैथिल खान पान होयत अछि। एहि संस्था द्वारा हालमे मिथिला फिल्म फेस्टिवल सेहो आयोजित कयल गेल छल। सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा मिथिलाक लोक संस्कृति, विरासत आ मिथिला पेंटिंग आदि कें बढ़ावा देल जायत अछि।

मिथिला कल्चरल सोसाइटी फॉर यूनाइटेड किंगडम द्वारा सालमे एकबेर जनरल बॉडी मीटिंग कयल जायत अछि आ ओहि उपलक्ष्य मे सांस्कृतिक कार्यक्रम सब सेहो कयल जायत अछि। ई संस्था केर अध्यक्षा श्रीमति वंदना कर्ण जे इंग्लैंड मे डॉक्टर छथि, केर अनुसार, लगभग 100 मैथिल परिवार ई संस्था सं जुड़ल अछि आ ओ सब आन आन अवसर पर एक दोसर सं भेंट-घांट करैत रहैत छथि। वार्षिक सम्मलेनक उपलक्ष्य मे बच्चा सं ल' कें युवा आ बुजुर्ग धरि मंच पर मैथिली मे किछु नै किछु अभिनय करैत छथि, विद्यापति जीक गीत गाओल जायत अछि आ अंत मे मैथिल भोजन भात होयत अछि। एहि संगठनक सदस्यता मिथिला क्षेत्र सं अबै बला कोनो भी जाति धर्मक लोक लेल खुलल अछि, समय समय पर संस्थाक पदाधिकारी सब लेल लोकतांत्रिक तरीका सं चुनाव कराओल जायत अछि। इंग्लैंड मे मिथिला संस्कृति केर निर्वाह आ प्रचार प्रसार मे ई संस्थाक महती भूमिका अछि, हालांकि कतेको एहेन मैथिल छथि जे ई संस्था सं नहि जुड़ल छथि।

एवंक्रमेण देखल जायत त' विद्यापति पर्व समारोह विदेश मे रह' बला मैथिल सबकें एक सूत्रमे बन्हबामे पैघ स्थान रखैत अछि। एहि तरहक समारोह सं मिथिला मैथिली केर तत्व आ पहिचान प्रवासी मैथिल समुदाय सभक मध्य जीवित रहैत अछि। प्राय: देश मे एहेन तरहक आयोजनक उपलक्ष्य मे मिथिला सं कोनो लोक कलाकार कें वा जानल मानल विभूति कें मुख्य अतिथि केर रूप मे आमंत्रित कयल जायत अछि।

प्रवासी मैथिल सब लेल चुनौती

प्राय: जे मैथिल परिवार रोजगार आदि केर दृष्टि सं विदेश मे जा कें बसि गेलछथिन हुनका सब लेल किछु चुनौती सेहो छनि, एहि चुनौती केर वितान सांस्कृतिक, सामजिक, आर्थिक सं ल' कें भाषायी धरि अछि। एहेन तरहक सर्वोपरि चुनौती मे सं एक अछि अपन भाषा कें संरक्षित क' कें रखनाय। पहिल पीढ़ी केर डायस्पोरा समुदाय त' भारत सं मैथिली भाषा अपन संगे ल' गेलाह, मुदा हुनक सभक बाल बच्चा प्राय: मैथिली त' दूर' हिन्दी तक नहि बाजि सकैत छनि। हुनक सभक मातृभाषा अंग्रेजी भ'

जायत छथि। प्रवासी मैथिल सबकें ई बातक बड्ड टीस उठैत छनि जे बच्चा सब अपन बाबा दादी सबसं कोनो तरहें गप नै क' सकैत छथि, किया कि बच्चा कें हिंदी वा मैथिली नहि अबैत छनि आ बाबा नाना कें अंग्रेजी नै अबैत छनि, ई भाषायी अवरोध कें मेटाएब एक गोट पैघ चुनौती अछि।

भारत सरकार द्वारा सब साल प्रवासी भारतीय दिवस मनाओल जायत अछि मुदा एहन तरहक कोनो सम्मेलन मे प्रवासी मैथिल केर कोनो भी प्रतिनिधित्व नहि रहैत अछि किएक त प्रवासी मैथिल एखन धरि कोनो प्रमुख नृजातीय समूह केर रूपमे पहिचान नहि बना सकल अछि। जा धरि एहेन तरहक एक गोट सम्मिलित पहिचान नहि बनतैक ता धरि प्रवासी मैथिल सभक मुद्दा वा हुनक माध्यम सं मिथिलाक मुद्दा वैश्विक स्तर पर अपन पहिचान नहि बना सकतैक।

प्रवासी मैथिल सब एखनो धरि विदेशो मे सेवा क्षेत्र वा सरकारी नौकरी आदि कें वरीयता दैत छथि, कमो बेस एहने तरहक ट्रेंड मिथिला मे देखल जा सकैत अछि एहि कारणें मिथिला समाज रोजगार सृजन कर' बला समाजक रूप मे नहि जानल जानत अछि। एकर विपरीत पंजाबी वा गुजराती डायस्पोरा समुदाय रोजगार सृजन केर कार्य करैत छथि जाहि सं ओहि क्षेत्र सं अबै बला नव युवक सबके विदेश मे एकटा बनल बनाओल मंच भेटैत अछि। एहने तरहक प्रयास प्रवासी मैथिल समुदाय कें सेहो कर' पड़तनि ताकि मिथिला क्षेत्रक प्रतिभावान युवक सबकें विदेश मे अवसर भेट सकतनि। रोजगार आ व्यवसाय सं राजनैतिक रसूख सेहो बढ़ैत अछि, वर्तमान परिदृश्य मे मैथिल सभक राजनैतिक उपस्थिति शून्य केर बराबर अछि।

निष्कर्ष

पहिने प्रवासी समुदाय कें ब्रेन ड्रेन केर रूपमे देखल जायत छल, मुदा वर्तमान परिवेश मे प्रवासी समुदाय कोनो देश आ समाज लेल संपत्ति मानल जायत अछि। विदेश मे प्रवास कर' बला मैथिल समुदाय नै खाली मिथिला कें वैश्विक पहिचान दियौने छथि अपितु मिथिला समाज कें आर्थिक सामाजिक रूपेण समृद्ध कर' मे सेहो अग्रणी भूमिका निभा रहल छथि। मैथिल लोक जे ज्ञान परंपराक लेल जानल जायत छथि ओ ज्ञान परंपरा कें प्रवासी मैथिल विश्वक कोन-कोन मे प्रवाहित क' रहल छथि। मुदा विदेश मे रह' बला मैथिल समुदाय द्वारा मिथिलाक उत्थान लेल एखन धरि तेहेन सन कोनो सम्मिलित आ संगठित डेग नहि उठाओल गेल अछि। विदेशक हुनक सभक अनुभव, ज्ञान, आ तकनीक मिथिलाक नव भाग्यक सृजन क' सकैत अछि। प्रवासी मैथिल सबकें संगठित भ' कें वैश्विक स्तर पर एक सम्मिलित आवाज़ केर रूपमे पहिचान स्थापित करबाक जरुरत अछि, तखने ओ सम्मिलित आवाज़ भारत स्थित मिथिलाक विसंगति दिस वैश्विक मंच आ समुदाय केर ध्यानाकर्षण करत आ मिथिला बाढ़ि, गरीबी, अशिक्षा आदि संताप सं मुक्त हैत। केरल सन राज्यमे प्रवासी लोक सब विकास आ क्रांति केर सूत्रपात क देने छथि, ओहने सन किछु समर्पित डेग केर मिथिलावासी अपन प्रवासी मैथिल सं अपेक्षा करैत छथि। ■

सन्दर्भ

1. Ballard, R. (1994), Desh Pardesh: The South Asian Presence in Britain, C. Hurst & Co. Publishers
2. Ballard, R. (1989) 'Differentiation and Disjunction Amongst the Sikhs in Britain', in N.G. Barrier and A.V.A. Dusenbery (eds.), The Sikh Diaspora: Migration and the Experience Beyond Punjab. Delhi: Chanakya Publications, 200-34.
3. Jyoti Bhaskar (2016), Political Participation of the Indian Diaspora in the United Kingdom, Mphil thesis, Jawaharlal Nehru University
4. Jyoti Bhaskar, Caste Among the Indian Diaspora in the United Kingdom
5. Mithila Cultural Society For UK, http://mithila.uk/go/
6. Singh Shubhangi, "Maithili speaking community celebrates 'Vidyapati Samaroh' in North America" available at Zee News https://zeenews.india.com/india/maithili-speaking-community-celebrates-vidyapati-samaroh-in-north-america-2252635.html
7. Visram Rozina (2015), Asians in Britain: 400 Years of History

शोक समाद

मृदुला सिन्हा

(27.11.1942-18.11.2020)



प्रसिद्ध हिंदी लेखिका आ गोवाक पूर्व राज्यपाल मृदुला सिन्हा केर देहांत 18 नवम्बर 2020 कें भ गेल। हुनक जन्म 27 नवम्बर, 1942, कें मुजफ्फरपुरक ग्राम छपरा मे भेल छल। ओ राजनेता हेबाक संग समाजसेवी आ प्रखर लेखिका छलीह। साहित्य आ सांस्कृतिक जगतमे हुनक योगदान उल्लेखनीय रहल। ओ पांचवां स्तम्भ नामक पत्रिका सेहो प्रकाशित करैत छलीह। हुनक प्रकाशित कृति सभ अछि : राजपथ से लोकपथ पर (जीवनी), नई देवयानी (उपन्यास), ज्यों मेंहदी को रंग (उपन्यास), घरवास (उपन्यास), यायावरी आंखों से (लेखों का संग्रह), देखन में छोटे लगें (कहानी संग्रह), सीता पुनि बोलीं (उपन्यास), बिहार की लोककथायें-एक (कहानी संग्रह), बिहार की लोककथायें-दो (कहानी संग्रह),ढाई बीघा जमीन (कहानी संग्रह), मात्र देह नहीं है औरत (स्त्री-विमर्श), विकास का विश्वास (लेखों का संग्रह), साक्षात्कार (कहानी संग्रह), अतिशय, स्पर्श की तासीर, क ख ग, मानवी के नाते, पुराण के बच्चे, विकास का विश्वास, एक दिए की दीवाली।

प्रवासी मैथिलः सांस्कृतिक सातत्य आ विस्मृति

✍ डॉ. प्रवीण झा



डॉ. प्रवीण झा सम्प्रति नॉर्वे के कॉन्सबर्गमे विशेषज्ञ चिकित्सक (रेडियोलॉजिस्ट, हेल्सेहुसे कॉन्सबर्ग ओ पूर्वमे वह पुणे, अमरीका, दिल्ली, आ बेंगलुरू मे भिन्न-भिन्न अस्पताल मे कार्य कएने छथि। स्वास्थ्य आ आन विषय पर स्तंभ लिखैत छथि। हिन्दी मे हुनक पोथी 'कुली लाइन्स' (वाणी प्रकाशन) आ 'वाह उस्ताद' (राजपाल प्रकाशन) बहुचर्चित रहल अछि। फेसबुक पर हिनक मैथिली पेज 'नील मोईसक सिपाही' सेहो वेश लोकप्रिय अछि।

प्रवास पर लिखैत काल पहिल प्रश्न जे हमर मोन मे उठैत अछि- प्रवास लोक किएक करैत अछि? आदम काल सं एकटा सिद्धांत चलि आबि रहल अछि जे कतओ अवसर'क खगता रहय आ कतओ प्रचुरता तं लोक एक ठाम सं दोसर ठाम चलि जाइत अछि, कम अवसर सं बेसी अवसर दिस। एहि तरहक प्रक्रिया कें जीव-विज्ञान मे 'ऑस्मोसिस' (परासरण) कहल जाइत छैक। मुदा ई 'पुश-पुल' सिद्धांत आब पुरान भेल। आब हमरा सभ देखि रहल छी जे प्रवास एकटा 'स्टेट ऑफ माइंड' (मानसिक स्थिति) छैक। ओ स्थिति यदि रहल तं अहां लग कुबेरक खजाना किएक नहि रहए, अहां प्रवास क' जाएब।

मारवाड़ी आ पंजाबी अहां के भरि देसमे पसरल भेटताह, गुजराती आ पंजाबी सं बेसी विदेस मे प्रवासी नहि भेटताह। आब ई सभ राज्य वा समुदाय तं कोनो जंगलराज सं उठि क' तं नहि गेल छथि? विदर्भ दिस चलि जाउ वा हिमाचलक कोनो नुकायल गाम। कतओ सुखायल खेत आ कतहु कठिन जीवन। मुदा लोक अप्पन स्थान नहि छोड़त। हुनक मानसिक स्थितिए प्रवासक नहि छनि। अहांकें गाम मे कतेको लोक भेटताह जनिका ठेल-ठालि क' दिल्ली-बंबई पठाओल गेल हेतनि आ घूरि-फिरि आबि क' गाम मे दतमनि करैत भेट जेताह। हुनका कोनो तरहक सुख अप्पन गाम सं बेसी प्रिय नहि आ कोनो तरहक खगता वा जीवन-संकट गाम छोड़य लेल विवश नहि क' सकैछ। कश्मीरी पंडित मे सेहो कतेक लोक अप्पन जमीन नहि छोड़लनि अछि। प्रवासक स्थायित्व केर दोसर कारण छैक 'इन्टैंगलमेंट' माने ओझरा जेनाय। अहां गाम सं प्रवास कयलहुं जे सड़क नहि अछि, बिजली नहि अछि आ आब सड़क-बिजली सभटा सुविधा अछि तखनहुं नहि घूरब। किएक तं अहां आ अहांक परिवार कतओ ओझरा गेल अछि, आब परिवार घूरय नहि चाहैत अछि।

सांस्कृतिक सातत्य मे प्रवासक कारणक पैघ भूमिका छैक। जखन प्रवास एकटा समुदायक परिभाषा बनि जाइत छैक तं ओ अप्पन चारू कात एकटा इकोसिस्टम (पारिस्थितिकी तंत्र) बनबय लगैत अछि। जेना अप्पन एकटा संगठन बना लेलहुं, पूजा-स्थल बना लेलहुं, नियमित जुटान करय लगलहुं, संगीत-साहित्य कें जोड़ि लेलहुं, राजनीति सं जुड़ि गेलहुं। अहां रहैत छी कनाडा मे, मुदा अहांक इकोसिस्टम अछि मैथिल। मुदा एहि इकोसिस्टम कें हम 'बोनसाई' संस्कृति कहैत छियैक। अप्पन माटि-पानिक बिना ई विशाल बड़'क गाछ नहि बनि सकैत अछि। प्रवासी मैथिल समुदाय अपन ड्राइंग रूम मे संस्कृतिक एकटा 'बोनसाई' मात्र राखि सकैत छथि। मुदा एहि संस्कृतिक बोनसाई राखय केर कारण की? लोक किएक अप्पन संस्कृति बचा क' राखय? प्रवासित स्थानक संस्कृतिमे घुलि-मिलि किएक नहि जाए?

मैथिल चाहैत छथि जे मिथिला मे जे केओ रहथि से मैथिली बाजथि। तमिल आ मराठी सेहो सैह चाहैत छथि। अहां इंग्लैंडक नागरिकता ल' लेलहुं आ भारत-इंग्लैंड मैच मे भारतक झंडा लेने ठाढ़ छी, तं लोक कहि सकैत छथि जे 'खाय छी लंदनक आ गाबय छी दिल्लीक'। मुदा अहांक दस पीढ़ी इंग्लैंड मे रहि गेल तइयो

संपर्क : ईमेल : *doctorjha@gmail.com*

अहांकें की इंग्लैंडक मूल निवासी लोक मानि लेताह? अहांक रंग-रूप, चालि सभ पर अहांक 'आइडेंटिटी' अंकित अछि आ ओकरा मिटेनाय असंभव छैक, ताहि दुआरे सांस्कृतिक सातत्य आवश्यक छैक। प्रवासीक सांस्कृतिक सातत्य एहि दुआरे आवश्यक नहि जे मिथिला भूमि पर मैथिल अस्मिता बांचल रहय मुदा एहि दुआरे जे अप्पन अस्तित्व, अप्पन 'आइडेंटिटी' बांचल रहय। ई गप्प स्पष्ट कहनाइ एहि दुआरे आवश्यक जे प्रवासी मैथिल उत्साहित भ' क' एकरा एना प्रस्तुत करैत छथि जे ओ सभ मिथिलाक अस्मिताक रक्षक छथिन; जखन की, मिथिला तं अप्पन माटि-पानि सं सक्षम अछि। ओहि लेल 'रिमोट-कंट्रोल' क' आवश्यकता नहि। हं! अप्पन-अप्पन अस्तित्व बचबैत चलू किएक तं अहांक माटि-पानि भिन्न भ' गेल।

मात्र 'आइडेंटिटी' नहि, आब एकरा एकटा संपत्तिक रूप मे देखल जाइत छैक। पहिने एकरा सांस्कृतिक संपत्ति कहल जाइत छलय, आब एहि मे 'अंतर-सांस्कृतिक संपत्ति' (ट्रांसकल्चरल कैपिटल) क' प्रयोग भ' रहल छैक। ई संपत्ति मात्र प्रवासी लग छनि। ई दू टा संस्कृतिक मेल सं बनैत छैक। ई शब्द बॉर्द्यू आ तकर बाद मीनहॉफ़क देल छनि। एहि सं पूर्व जी.जे. लेविसक कथन छनि, "प्रवास एकटा द्विपक्षी प्रक्रिया थिक। एक दिस ई आर्थिक आ सामाजिक परिवर्तन आनैत अछि आ दोसर दिस ई आबय बला परिवर्तनक उत्प्रेरक छै। जतय लोक प्रवास क' रहल छथि आ जतय सं लोक प्रवासित भ' रहल छथि।"

आब एकरा बूझल जाए, जखन मैथिल कतओ प्रवास कएलनि, ओ अपना संगहि अप्पन संस्कृति नेने गेलाह आ जखन कखनहुं घूरला, दोसर संस्कृति सेहो नेने अएलाह आ दुनू संस्कृतिक मेल सं एकटा रचनात्मक क्रिया भेलय। ई इतिहास मे वर्णित छैक जे जाहि ठाम सं प्रवास बेसी भेलय ताहि ठाम सतत परिवर्तन आबैत गेलय। जतय सं नहि भेलय ओ एकटा बन्न समुदाय (क्लोज्ड कम्युनिटी) बनि क' रहि गेल। कूप-मंडुक। एहि मे नीक-खराब दुनू। मुदा परिवर्तन अवस्स आयल। ई अंतर-सांस्कृतिक संपत्ति मात्र प्रवासी लग छनि। जेना 'चटनी संगीत' कैरीबियन देशक नहि मूल निवासी गाबि सकैत छथि, आ ने भारतक निवासी। ई तं वैह गाबि सकैत छथि जे भारत सं कैरीबियन देश गेलाह। ई प्रवासक देन थिक। तहिना प्रयोग सभ आब मैथिली साहित्य आ संगीत मे देखाय लागल अछि। पहिने सेहो छल, मुदा आब एकर विस्तार बेसी। करीब पांच बरख पूर्व हम मैथिली मे रॉक संगीत सुनलहुं, आब रैप संगीत सेहो सुनि रहल छी। एकरा सातत्य कहबय वा विस्मृति? ई दुनू मे सं किछु नहि।

अहां सान फ्रैंसिस्को मे जरदालू आमक गाछ रोपि कहबय जे ओहन सुआद नहि भेटि रहल अछि तं ई कुतर्क भेल। ओतुका जरदालू मे दुनू दिसक सुआद आओत, जे ताहि दुआरे जन्मल जे केओ ओ जरदालू कें अमरीका जा क' रोपलनि। आ ओ सुआद पहिने नहि कखनहुं मिथिला मे भेटल छलैक, नहि अमरीका मे। ई नब सृजन थीक।

एकर आलोचना भ' सकैत अछि जे ई मिथिलाक संस्कृति नहि। मुदा अहां सेन फ्रैंसिस्को मे जरदालू आमक गाछ रोपि कहबय जे ओहन सुआद नहि भेटि रहल अछि, तं ई कुतर्क भेल। ओतुका जरदालू मे दुनू दिसक सुआद आओत, जे ताहि दुआरे जन्मल जे केओ ओ जरदालू कें अमरीका जा क' रोपलनि। आ ओ सुआद पहिने नहि कखनहुं मिथिला मे भेटल छलैक, नहि अमरीका मे। ई नब सृजन थिक।

मुदा नब सृजन संगहि मैथिल संस्कृति वा कोनो संस्कृतिक एकटा मुख्य अवयव छैक- ज्ञान परंपरा (नॉलेज ट्रैडिशन)। ज्ञान परंपरा ककरो निजी संपत्ति नहि। ई समाज मे कहिया सं चलैत आबि रहल अछि, सेहो कहनाय असंभव। जे किछु हमरा सभहक अपन पूर्वज आ समाज सं भेटल, से आगू अगिला पीढ़ी कें हस्तांतरण केनाय हमर सभहक उत्तरदायित्व अछि। एहि मे किछु ह्रास भ' सकैत अछि। विस्मृति भ' सकैत अछि। अप्पन माटि-पानि सं फराक रहला पर पाबनि-तिहार सं संपर्क छूटल जाइत छैक। समाज छोट रहल तं एकरा बचा क' रखनाय आओर कठिन। जेना न्यूयॉर्क-न्यूजर्सी मिला क' हज़ार सं ऊपर मैथिल हेताह, ओतय समुदाय-बोधक संभावना छैक। मुदा भरि नॉर्वे मिला क' दस टा मैथिल परिवार भेटनाय कठिन, ओहि ठाम ज्ञान-परंपरा अप्पन घरहि तक सीमित। एहन परिवेश मे ज्ञान-परंपरा कोना बचय?

एहि ठाम ज्ञान-परंपरा कें डॉ.क्यूमेंटक रूप मे रखबाक आवश्यकता छैक। मुदा डॉ.क्यूमेंट करबय की? संस्कृति कोनो ISO सर्टिफिकेट बला वस्तु नहि कि सभ किछु लिखल जा सकय। मुदा आब एहि तरहक संरक्षण भ' रहल छै जे मानि लिय' सांस्कृतिक प्रलय आबि गेलय आ संस्कृति खत्म भ' गेलय तखन की करबय? जेना बैजन्टाइन साम्राज्य जखन खत्म हुअए लागलय तखन कुस्तुनतुनिया सं सभटा पोथी-पतरा सभ ल' क' विद्वान सभ इटली देस पड़ा गेलाह आ ओहि पोथी सभ दुआरे कतेक दर्शन आ खगोलशास्त्र आ धार्मिक ग्रंथ सभ बांचि गेल। ईसाई धर्मक पुनर्जागरण मे ओकर बड्ड पैघ भूमिका रहल। आब प्रवासी लोक सभक संतानक जे इच्छा हेतनि कि जड़ि दिस घूरि, पाबनि-तिहार बूझी, लोकगीत सभ गाबी तं कतय ताकय जेताह? के सुनाओतनि लगनी आ के बूझौतनि जे, नयना-जोगिन की होइत छैक? ई सभ तं मौखिक ज्ञान-परंपरा थिक, कोनो कागज-पत्तरक काज कखनो रहय नहि। मुदा आब एकरा बूझय बला लोक सभ घटल जा रहल छथि, आ जे बूझय चाहैत छथि तिनका बूझौनिहार सहजता सं भेटैत नहि छथिन।

एहि श्रृंखलामे स्व. सीता मिश्रक तीन टा पोथीक उल्लेख करब। 'पाबनि तिहार'

जाहि मे मिथिलाक पाबनि सभक गीत आ प्रक्रिया लिखल अछि। 'विधि व्यवहार' जाहि मे जन्म सं मरण धरिक संस्कार विधि आ गीत सभ लिखल अछि आ 'भानस भात' जाहि मे मिथिलाक भोजन सामग्रीक विधि लिखल अछि। ई तीनू पोथी प्रवासी सभहक मैनुअल बनल जा रहल अछि। किएक तं पुरुषाही पूजा-पद्धति सभ तं उपलब्ध अछि, मुदा स्त्रीगण सभहक विधि छपल नहि भेटैत रहैत छैक। एहि मे समस्या छैक जे ई लिखित छै, जखन कि आब ऑडियो-विजुअल आर्काइवक जमाना अछि। राजस्थानी लोक परंपराक आर्काइव बहुत किछु बनि चुकल छैक, मुदा मिथिलाक एहन संगठित आर्काइव भेटनाय कठिन। आब प्रवासी लोकनि कें एकर खगता बूझाइत छनि जे बियाह मे कोन विध-वाध, कोन गीत कोन लय-सुर मे गाओल जायत, तकर ज्ञान नहि। ई डिजि़टल युग छै आ यू-ट्यूब सं लोक सीखि लैत अछि। मुदा यू-ट्यूब पर एहि ज्ञान-परंपराक पहुंचेनाय कोना संभव होयत? हमरा एहि मे नेपालक मैथिल समुदायक प्रयास खूब प्रभावित कयलक। देखि रहल छी जे प्रवासी धीया-पुता सभ कोनो नेपाली मैथिली कार्टून चैनल देखि-देखि मैथिली सीखि रहल अछि। बच्चा सभ आब भाषा कार्टून चैनल आ गीत सभ सं सीखैत अछि, किएक तं प्रवास मे आन बच्चा सभ आन भाषा बजैत अछि। माय-बाप सं सुनैत-बजैत तं सीखिते अछि, मुदा बच्चा बच्चे सं बेसी सीखैत अछि।

प्रवास रोकल नहि जा सकैत अछि। किएक तं ई आब पलायन नहि रहि गेल। प्रवास वैश्वीकरण आ फूजल अर्थव्यवस्था (ओपेन इकॉनॉमी) क' परिणाम थिक। अहांक कोन कंपनीमे कतय नौकरी होयत, के कहत? आ नहियो होयत तं लोक किएक नहि अप्पन सीमा विस्तृत करत? मुदा प्रवास मे अप्पन संपत्ति आ अप्पन चिह्न सभ बांचल रहय, यैह आवश्यक। सातत्य रहय, विस्मृतिक उपचार होइक आ नब सृजन होइत रहय। ■

संदर्भ:

1. **हियर, निकोलस आ बैकवेल, ओलिवर आ लॉन्ग, कैटी:** पुश-पुल प्लस: रिकंसिडरिंग द ड्राइवर्स ऑफ माइग्रेशन, जर्नल ऑफ एथ्निक एंड कल्चरल माइग्रेशन स्टडीज। 44. 1-18, (2011)
2. **ग्रांट थॉर्नटन इंडिया:** ओवरसीज पैटर्न्स फ्रॉम इंडिया, डिटेल्ड रिपोर्ट, (2016)
3. **पांडेय, अशोक कुमार:** कश्मीर और कश्मीरी पंडित, राजकमल प्रकाशन, 2020
4. **फॉकेन, मार्गरेट:** बियॉन्ड बिइंग कूलीज एंड कंत्राकी, वर्लोरेन पब्लिशर्स, (2018)
5. **मीनहॉफ, यू. एच. आ ट्रायंडाफिलडू, ए. :** बियॉन्ड द डायस्पोरा, ट्रांसकल्चरल यूरोप, पालग्रेव मैकमिलन, (2006)
6. **लेविस, जी. जे. ह्यूमन माइग्रेशन:** अ जियोग्राफिकल पर्सपेक्टिव, पालग्रेव मैकमिलन, (1982)
7. **डूरां, एस. आ लॉर्ड सी.एम.:** एशेज इन माइग्रेटरी एस्थेटिक्स, लीडेन, (2007)
8. **मिश्र, सीता:** पाबनि तिहार, विधि व्यवहार आ भानस भात, पद्ममुक्ता प्रकाशन, (2010)

शोक समाद

श्री रामभद्र कर्ण

(1935-2020)



हिनक जन्म नेपालक धनुषा जिलाक कुर्था गाममे सन 1935 भेल छलन्हि। वृत्ति सं अंग्रेजी विषयक शिक्षक छलाह मुदा धीरेन्द्र जी हिनका मैथिली कथाक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छैथ। श्री रामभद्र जी'क कृति कें अवलोकन सं धीरेन्द्र जी'क कथन सर्वथा सत्य लगैत अछि। नेपालमे मैथिलीक पहिल मोनोड्रामा लिखबाक श्रेय हिनके जाइत छनि। हिनक कथामे प्रतीकात्मकता'क अद्‌भुत छटा भेटैत अछि। सामाजिक कुरीति सभकें चित्रण कर बामे, विषय कें चिन्तनीय बनएबामे आ पाठक'क मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोडबामे ई सिद्ध-हस्त छलाह। लेखनी हिनक केवल कथां धरि सिमटल नै रहल अपि तु आलोचना, कविता आ नाटक दिश भ्रमण करैत आर बेसी चपल भ गेल छल।

स्रोत : फेसबुक पर श्री गजेन्द्र ठाकुरक पोस्ट

डॉ. सर्वनारायण मिश्र

(14.01.1944 – 08.12.2020)



जगदीश नन्दन महाविद्यालय, मधुबनीमे अर्थशास्त्र विभाग केर पूर्व विभागाध्यक्ष, डॉ. सर्वनारायण मिश्र केर निधन लगभग 80 वर्षक अवस्थामे 8 दिसम्बर, 2020 कें भ गेलनि। ओ चारि दशकसं बेसीए महाविद्यालयमे अध्यापन कार्य कयलनि आ ओहि अवधिमे ई विभिन्न प्रशासनिक दायित्वक सफलतापूर्वक निर्वहन सेहो कयलनि। ओ अत्यंत सरल, सहज एवं मृदुभाषी स्वभावक छलाह। सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधिमे हिनक सहभागिता जगजाहिर छल। मधुबनीक कतोक संस्था सं ई सम्बद्ध छलाह, आ ओकर केंद्रीय भूमिकामे रहैत छलाह। मैथिली हिनका हृदय मे धड़कैत छलनि, आ अंत अंत धरि कतोक मैथिली-हिन्दी संस्था सं सम्बद्ध रहलाह। मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनीक ई स्थापना काले सं सक्रिय सदस्य रूपमे सहयोग करैत रहलाह।

स्रोत : प्रो. दमन कुमार झा जीक फेसबुक वाल

प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थिति

✍ कीर्तिनाथ झा



लेखक सेना चिकित्सा कोर सेवा मे कर्नल पदसं सेवानिवृत्त नेत्र चिकित्सक छथि। संप्रति पुद्दुचेरी स्थित महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट सं संबद्ध छथि। मैथिलीमे हिनक पांच गोट पोथी प्रकाशित छनि। नवीनतम पोथी लोहना रोड टू लांस एंजिल्स प्रवासी मैथिल जीवनक विविध पक्षसं साक्षात्कार करावैत अछि। आन पोथी जड़ि (कविता संग्रह), किछु परान गप्प, किछु नव गप्प, टूटल पांखि (खलील जिब्रानक अरबी उपन्यासक अनुवाद), कुरल मैथिली भावानुवाद।

दिनांक 06 सितम्बर 2009, रवि दिन। स्थानः न्यूयॉर्क सिटी, अमेरिका। हमरा लोकनि टाइम्स स्क्वायर लग घूमैत रही। हमरा संग हमर पत्नी, कन्या, जमाय आ हुनक एकटा गुजराती मित्रक परिवार रहथि। सड़कक कातक साइड-वाक पर नीक चहल-पहल छलैक। अकस्मात्, हमरा लागल, पाछूसं छूबि केओ हमर ध्यान आकृष्ट केलनि-ए! उनटिकय देखैत छी, तं एकटा मैथिल परिवार... युवक, पत्नी, बरख दसेक एकटा बालक आ एकटा छोटि कन्या। मुसुकाइत कहलनि, 'अपने सब कें मैथिली बजैत सुनलहु, तें...' एतेक दूरमे अपन भाषा बजैत नागरिकसं भेंट भेने जेहने हर्ष आ कौतूहल ओहि मैथिल परिवारकें भेल रहनि, तेहने हमरो लोकनिकें भेल छल। हमरा लोकनि ओत्तहि ठाढ़े-ठाढ़ पांच मिनट परिचय-पात कयल आ अपन-अपन बाट धयल। मधुबनी जिलाक निवासी ओ युवक न्यूयॉर्कहिंमे काज करैत रहथि। न्यूयॉर्कक टाइम्स स्क्वायरक भीड़मे मैथिली सुनि एहि परिवारक अचानक आकृष्ट हयब एतबा तं अवश्य सिद्ध करैछ, जे विदेशहुमे रहला उत्तर, मातृभाषा एकटा चुम्बक प्रमाणित होइछ। तथापि, प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थितिके महत्वकें प्रमाणित करबाले केवल एकटा ई उदाहरण पर्याप्त नहिं। तें, एहि विषयक कनेक विस्तारसं जांच करी।

सत्यतः, प्रवासी जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थितिक जांचलेल दू प्रकारक मापदंड चाही। एक, प्रवासी मैथिल लोकनिक बीच सर्वेक्षणसं ई ताकल जाय जे ओ लोकनिक अपन जीवनमे मिथिला आ मैथिलीक केहन उपस्थितिक अनुभव करैत छथि; दू, भारतसं विदेश जाइत मैथिल अपन देखल अनुभवक आधार पर स्वतंत्र निष्कर्ष निकालथि जे ओ लोकनि विदेशमे प्रवासी मैथिल लोकनिक जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक केहन उपस्थिति देखलनि। हमरा लठा अपन निष्कर्ष निकलबाक हेतु एहि दुनू मे सं कोनो मापदंड नहिं अछि। तें, हमरा अपन परिवारजन सहित अनेको प्रवासी लोकनिक संग देशसं बाहर आ भारतक भीतर जे सम्पर्क भेल अछि, ओही सम्पर्कक अनुभवक आधार पर हम अपन विचार एतय रखैत छी।

जं प्रवासी लोकनिकें कनेक काल लेल छोड़ि दी, तं, अपन इलाकाक प्रति लगावक एकटा भिन्न उदाहरण दैत छी। ईसवी सन 2006 मे एगारह बजे रातिक करीबक एक ट्रेन मे चढ़बाक क्रममे धक्का-धुक्कीक कारण, तीन गोटे नई दिल्ली स्टेशन पर अबैत ट्रेनक सामने रेलक पटरी पर खसिकय मरि गेलाह। हमरा अनुमान अछि, फगुआ, दसमी, आ छठिक पूर्व दिल्ली-नई दिल्ली स्टेशन पर घरमुंहा बिहारी लोकनिक एहन भीड़ बहुतो गोटे कें देखल हयत। प्रश्न उठैछ, पर्व-त्यौहारक अवसर पर लोक गाम अबैले कोना आफन तोड़ने रहैछ, देशक भीतरक प्रवासी लोकनिकें गाम अपना दिस किएक एना घीचैत छनि, जखन कि दशहरा-होली-दिवाली-छठि आब दिल्लिओमे मनाओल जाइछ, एहि सब पर्वक छुट्टी दिल्लीओमे होइत छैक। माने,

संपर्क : महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीच्युट, पिलैयारकुप्पम, पाण्डिचेरी-607403, मोबाइलः 9443655640, ईमेलः kirtinath.jha@gmail.com

पर्वक आलावा सेहो गाम मे एहन किछु अदृश्य आकर्षण अवश्य छैक जे लोककें गाम दिस झिकैत छनि: ककरो माता-पिता, ककरो परिवार आ नेना आ ककरो केवल अपन भूमि आ कमला-कोसीक धार, वा गोसाउनि-ब्रह्मबाबा अपना दिस झिकैत छथिन। विदेश बसैत प्रवासी भारतीय लोकनि सेहो अपन भूमिक दिससं एहने घिचावक अनुभव करैत छथि, से सब कहताह। किन्तु, कतेको बेर समयक अभाव, दूरी, आ व्यय बाधा बनि ठाढ़ भ' जाइछ। एतबे नहिं, देश दिस घिचाव आ जुड़ाव केर आ अनेको सूत्र छैक, जे कखनो आवश्यकतासं प्रेरित होइछ, आ कखनो महज भावनात्मक तन्तुक जोरसं सेहो।

हम अनेको परिवारसं परिचित छी जे जीवन समुद्र पार बितौने छथि, किन्तु, सन्तान लोकनिक हेतु जीवन संगीक तलाश मिथिलहिमे आबि कय कयने छथि। एकर अपवादो अवश्ये भेटत। किन्तु, ई प्रवासी लोकनिक जीवन मे मिथिला आ मैथिलीक उपस्थितिक एकटा बिन्दु भेल तं अवश्य।

आब एकटा दोसर गप्प। की प्रवासी लोकनि अपन जीवनमे मैथिल समाजक अभावक शून्यताक अनुभव करैत छथि? हमरा जनैत, सब दिन जं नहिओ तं, कहिओ काल अवश्य। प्रवासी लोकनि जतय कतहु छथि अपन देश आ भूमि पर छूटल अपन समाजक अभावक अनुभव अवश्य करैत छथि। तें, जतहु मैथिल लोकनिक पर्याप्त संख्यामे छथि, अपन गाम-घरक मैथिल समाजक कमी कें दूर करैक हेतु, मिथिला-मैथिलीक संस्था बनाकय, एक दोसराक सम्पर्क मे रहैत छथि। आओर नहिं किछु, तं, 'कठौती मे गंगा' तं सब सुननहिं छी। सएह सही। लन्दनमे मिथिला कल्चरल सोसाइटी यू के नामक एकटा संस्था सक्रिय अछि से तं हमरा बूझल अछि। ई संस्था यूनाइटेड किंगडम (UK) क विभिन्न भागमे काज करैत, आ बसल, मैथिल लोकनिक संस्था थिक। एहि संस्थाक सदस्य लोकनि अपन संस्थाक दिससं समय-समय पर सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करैत छथि, आ अपन पर्व-उत्सव मनबैत छथि। भारत सं अबैत साहित्य आ ललितकलासं जुड़ल व्यक्ति सबहक संग सम्मेलन, आ हिनका लोकनिक अभिनन्दनक हेतु सेहो, ई संस्था आयोजन करैत अछि, से सुनल अछि। संस्थाक माध्यमसं सबहक एक दोसराक सम्पर्क मे रहलासं बेर-कुबेर पर एक दोसराक सहायता सेहो होइत छैक।

एतय एकटा गप्प बूझब आवश्यक, जे घर सं जतेक दूर जायब, अपन देश-प्रदेशमे सामान्यतया जे छोट-छोट देवाल देखबामे अबैछ से सब खसय लगैछ। तें, इंग्लैंड-अमेरिका तं छोड़ू बंगलोर धरिमे मैथिल लोकनि समस्त बिहार-उत्तर प्रदेशक हिंदी-भोजपुरी-मैथिली भाषी लोकनि संग मीलिकय सामूहिक संस्था चलबैत छथि। एहिसं समूह सेहो पैघ होइछ आ एके संग अनेक भाषिक समुदायकें अपन समाजक संम्पर्क मे रहबाक बोध सेहो होइत छैक। तें, विदेशमे सेहो संस्थासब राष्ट्रीय स्वरूप ल' लैछ। तें, विदेशमे भारतीय नागरिकक वृहत समाजक प्रतिनिधि संस्था सब सेहो लोककें क्षेत्रीय मित्रभाव आ मेलजोलक अवसर आ सुविधा दैत छैक।

आब अमेरिकाक गप्प करी। अमेरिका आकारमे योरपक देश सबसं बड्ड पैघ। शहर सभक आकार सेहो तहिना। तें, पैघ शहरक गप्प हम नहिं कहि सकब। किन्तु, हमरा अमेरिकाक नार्थ कैरोलिना राज्यक एकटा छोट-सन यूनिवर्सिटी टाउनशिप, चैपल हिलमें, किछु दिन रहबाक अवसर भेल छल। ओहि समयमे चैपल हिलमे किछु मैथिल छात्र आ नोकरिहा लोकनि रहथि। हुनका लोकनिसं हमरा सम्पर्क भेल छल। ओतय ओ लोकनि एक दोसरासं जुड़ल अवश्य रहथि। हमरा एक गोटेक ओतय जयबाक अवसरो भेटल। ई दम्पति, दुनू, मैथिल। घरमे जनमौटी नेना रहनि। बच्चाक जन्ममे सहायताक हेतु नेनाक नानी आयल रहथिन तें हुनकोसं भेंट भेल। हिनका लोकनिक परिवारमे भाषा मैथिली आ सामान्यत: भोजन-सांजन मैथिल रुचिक।

हालमें, अमेरिकामे रहैत नेपाली मैथिल लोकनिक सांस्कृतिक गतिविधिक एकटा समाचार काठमांडूसं प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक The Rising Nepal 28 दिसंबर 2019 क अंक मे भेटल। समाचारक अनुसार एसोसिएशन ऑफ़ नेपाली तराईअन इन अमेरिका (ANTA) आ मैथिल्स ऑफ़ नार्थ अमेरिका (MoNA) क संयुक्त सहयोगसं अमेरिकाक न्यूजर्सी शहरमे 14 दिसंबर 2019 क विद्यापति समारोह आयोजित भेल छल। एहि समारोह मे नेपालसं आमंत्रित किछु कलाकार आ साहित्यकार सेहो ओतय गेल रहथि। समाचारक अनुसार एहि समारोह मे अमेरिकाक विभिन्न भारतीय आ नेपाली समुदायक नेता लोकनि सेहो सम्मिलित भेल रहथि।

हमर अनुभव कहैछ, मैथिल विदेशमे जतय छथि, अपन पीढ़ी धरि मैथिली बजैत छथि, आ बहुधा अपन रुचि आ सुविधाक अनुसार भोजन-सांजनमे मैथिल-जकां खाइत-पिबैत छथि। किन्तु, दोसर पीढ़ी जाइत-जाइत मैथिली भाषा आ व्यवहार विलुप्त भ' जाइछ। एकर कतेको कारण छैक। पहिल तं सामान्य जीवनमे भाषा आ व्यवहारक अभाव। दोसर, विवाह-दानक हेतु समाजक परिधि जेना-जेना पैघ भ' रहल छैक, परिवारसं मैथिली कतियाअल जा रहल अछि। भारतहु मे बसैत मैथिल परिवारहुक स्थिति एहने अछि। तें, जाहि परिवारमे पति-पत्नी दुनू मैथिली भाषी नहिं छथि, ओहि परिवार मे नेना-भुटकाकें मैथिली सुनबाक अवसर कदाचिते भेटैत छैक। अस्तु, ओतय मैथिली बिलाय लगैछ। मुदा, जं पति-पत्नी दुनू मैथिली भाषी छथि, तं, बच्चाकें लोक भले मैथिलीमे नहिं टोकौक, बच्चा माय-बापक बीचक गप्प सुनिओकय किछु मैथिली अवश्य सीखि लैछ, से हम अनुभवसं कहैत छी। किन्तु, जं अहां पूछब, प्रवासी लोकनिक जीवनमे मैथिलीक स्थान केहन छनि, तं, हम एतबे कहब, जे भारतहिंमे मिथिलासं दूर बसैत मैथिलक जीवनमे मैथिलीक स्थान केहन छनि! उत्तर सूनि हताशा होयब सम्भव, किन्तु, ई सत्य थिकैक। प्रवासी लोकनिमे

जे मैथिलीकें जिया कय रखने छथि, ओ केवल अपन ममत्वसं, आवश्यकतासं नहिं। ततबे नहिं, जहिना भारतमे रहितो बहुतो मैथिल, मैथिली पढ़ब नहिं जनैत छथि, तहिना प्रवासी मैथिल मे सं बहुतो मैथिली ने पढ़इत छथि, ने पढ़ि सकैत छथि। किन्तु, समस्या ई छैक जे प्रवासी मैथिली पढ़हु चाहैत छथि, तं अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग प्लेटफार्म सब पर मैथिलीक पोथीक अभावक कारण मैथिलीक पोथी हुनका सबहक लग पहुंचि नहिं पबैछ। अतः, मैथिलीक प्रति ममत्व रहितो ओ लोकनि मैथिलीसं दूर भ' जाइत छथि। तें, अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग प्लेटफार्म पर मैथिलीक उपस्थितिक आवश्यक। कारण, हमरा जनैत, विदेशमे मैथिलीक मांग सेहो छैक। तकर एकटा प्रमाण मैथिली भाषाक हमर अपन ब्लॉग 'कीर्तिनाथक आत्मालाप' थिक। पिछला दस वर्षमे पाठक लोकनि हमर एहि ब्लॉगक पेजकें आइ धरि करीब 88834 उलटौलनि-ए, से analytics कहैत अछि। आश्चर्यक गप्प ई, जे एहि मे सं अधिकांश पाठक समुद्र पारेक छथि! माने, समुद्र पारहु सं लोक मैथिली तकैत तं अवश्य छथि!

अंतमे, वर्तमान मिथिलाक समाजक हेतु प्रवासी मैथिल लोकनिक योगदानक गप्प करी। सफल पूत सदायसं अपन समाजक उत्थानमे योगदान करैत एलैये। आ तकर आशा उचितो। किन्तु, अपन समाजक उत्थानक हेतु प्रवासी लोकनिक योगदान ले ककरो तं डेग उठबहि पड़तैक। हम पूर्णतः विश्वासक संगई नहिं कहि सकैत छी, जे प्रवासी मैथिल लोकनि सामूहिक रूपें पैघ स्तरपर मिथिलामे शिक्षा, समाज-सुधार, वा आधारभूत संरचनाक सुधारक कोनो अभियानक सहयोगी छथि वा नहिं। किन्तु, व्यक्तिगत स्तरपर कतेको गोटे मिथिलाक छोट-छोट स्थानीय अभियानमे सहयोग करैत छथि तकर एक-दू टा सूचना हमरा लग अवश्य अछि। हमर अनुमान अछि, विदेश गेल बहुतो सफल मैथिल, गाम-घरक लेल आरम्भ कयल ईमानदार आ सार्थक स्थानीय पहलमे कम वा बेसी सहयोग अवश्य करताह। किन्तु, एहि हेतु पहिल डेग तं केओ उठाबथि। ई डेग वा पहल मिथिलहुसं आरम्भ भ' सकैछ। ■

संपादकीय नीति

- 'तीरभुक्ति' प्रत्येक तेसर मासक अंतिम सप्ताहमे प्रकाशित होइछ।
- तीरभुक्तिमे मुख्यतः शोध आलेख प्रकाशित प्रकाशित होइत अछि। संगहि किछु विशिष्ट कॉलम सेहो प्रकाशित होइत अछि।
- तीरभुक्ति केर प्रत्येक अंकएक विशेष थीम पर केंद्रित होइत अछि।एकर सूचना पत्रिकामे आ समाजिक माध्यम सबमे देल जाइछ। लेखकगण सं निवेदन जे थीमहि केर संगत विषय पर शोध आलेख पठाबी। थीम सं भिन्न आलेख यथायोग्य समय अयला पर प्रकाशित होयत।
- तीरभुक्ति Blind Peer Review पद्धति केर शोध पत्रिका अछि। सम्पादक मण्डल आ समीक्षक केर सहमति केर बादहि आलेख प्रकाशित कयल जाइछ।
- प्रत्येक शोध आलेखमे सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख आवश्यक अछि।एहि लेल APA 6जी Edition सन्दर्भ शैलीक प्रयोग कयल जाए।
- शोध आलेखक आरंभमे शोध सारांश (अधिकतम 100 शब्द) आ अंतमे शोध निष्कर्ष लिखब अनिवार्य अछि। सम्पूर्ण आलेख 2000-2500 शब्दक सीमामे हेबाक चाही।
- **हम किएक लिखैत छी** कॉलम आत्माभिव्यक्ति केर कॉलम अछि।एहि कॉलममे युवा रचनाकार लोकनिकें प्राथमिकता देल जाइछ।
- तीरभुक्ति पूर्णतः मैथिली पत्रिका अछि। आन भाषामे लिखल आलेखएतय स्वीकार नहि होइत अछि। लेखक स्वयंएकर मैथिली अनुवाद करा पठा सकैत छथि।
- प्रत्येक आलेखक संग लेखकक उद्घोषणा अनिवार्य अछि, जाहिमे लेख मौलिक आ अप्रकाशित होयबाक सूचना होय। संगहि आलेख कतहु आओर विचाराधीन नहि होय।
- फेसबुक वा सोशल मीडियामे कतहु आन ठाम प्रकाशित आलेख सेहो स्वीकार नहि होयत। लेखकलोकनि सं आग्रह जेएहन आलेख पठाबी।
- कोनो तरहक तथ्यात्मक त्रुटिक लेल लेखक स्वयं उत्तरदायी हेताह। उद्घोषणाक स्वरूप सम्पादकीय टीम स प्राप्त कयल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति त्रैमासिक पत्रिका अछि। ताहिसं आलेख प्राप्तिक बाद प्रकाशन धरि 3 सं 6 मासक समय लागि सकैत अछि।एहि अवधिमे आलेख अन्यत्र कतहु प्रकाशनार्थध विचारार्थ नहि पठाओल जाए। यदिएहन बेगरता होय त सम्पादक कें सूचित क आलेख वापिस लेल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति मे प्रकाशनार्थ सभटा रचना teerbhuktimaithili @gmail.com पर पठाओल जाए। रचना यूनिकोड अथवा कृतिदेव 010 अथवा वाकमैन चाणक्या फॉन्ट मे 14 फॉन्ट साइज़ मे टाइप हेबाक चाही। आलेखएमएस वर्ड आ पीडीएफ दुनु रूपमे पठाओल जाए।
- प्रकाशित भेलाक बाद पत्रिका लेखक लोकनि आ नियमित सदस्य लोकनिकें डाक सं पठाओल जाइछ। सदस्यता विवरण सभ अंक मे प्रकाशित होइत अछि।
- जे नियमित सदस्य नहि छथि, ओ पत्रिका प्राप्ति लेल तीरभुक्ति कार्यालयमे अथवा पत्रिकामे प्रकाशित प्राप्ति स्थल सब पर सम्पर्क क सकैत छथि। ■

मिथिला म्युजियम : जापान मे मिथिलाक शान

✍ चंदना दत्त



लेखिका रांटी मध्य विद्यालय (मधुबनी) मे शिक्षिका छथि। मैथिलीक चर्चित युवा साहित्यकार छथि।
कृति : गंगा स्नान (मैथिली लघुकथा संग्रह)
लाल सोना (साझा संग्रह, हिन्दी)
पुरस्कार : चेतना समिति, पटना द्वारा डॉ. महेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार 2014
रक्तदान सृजन सम्मान, रोहतक।

भागलपुरी सिल्क, गयाक तिलकुट, पसाका मनेरक लड्डू, मगही पान सन जेना बिहारक नाम विश्व मे ऊंच करबामे मिथिला पेंटिंग केर अमूल्य योगदान अछि।

मिथिला पेंटिंग जे अदौं सं घरैया लूरि मे गनल जाइत छल। कहल जाइत अछि जे जखन जानकी जीक स्वयंवर मिथिलेश जनकजी ठनलनि तखन प्रसिद्ध राजा महाराजाकें आमंत्रण पठाओल गेल औ सौंसे जनकपुर कें घर आंगन स्त्रीगणक अद्भुत चित्रकला सं सजाओल गेल। जनकजी केर अंगना-मड़वा, भगवती घर आ कोहबर घरक सुषमा देखबा जोग छल, श्रीराम संग हुनक अयोध्या सं आयल समाज 'चमत्कृत छल जनकपुरीक शोभा देखि। महाकवि पं. लालदास अपन महान कृति 'रामेश्वरचरित रामायण' (मैथिली महाकाव्य) मे करैत छथि-

जन्मभूमि नैहर सीताक,
जतय स्वयं शिवरूप पिनाक
शक्तिपीठ उत्तम स्थान,
उग्रभूमि सभ भांति महान,
भासमान मिथिलापुरी,
रवि सन तेज प्रचंड।
बुझि पड़ अनुपम देश जनि,
महिगत स्वर्गक खण्ड।।

ओहि चित्रकलाकें विश्वप्रसिद्ध करबाक श्रेय सर्वप्रथम 1934 ई. महाप्रलयंकारी भूकंप सर्वेक्षणक मध्य मधुबनीक तत्कालीन एस.डी.ओ. डब्ल्यू. जी. आर्चर (आई.सी.एस.) के भेटलनि। ओ सर्वेक्षणक क्रम मे जे फोटो सब अपन कैमरा सं लेलनि ताहि मे मकान-दोकानक क्षति के चित्रक संग कोनो-नवविवाहित कर्ण कायस्थक घरक देवाल पर लिखल कोबर देखि चमत्कृत भेलाह, देश-विदेशक अखबार मे छपौलाह। भरि दुनियाक लोक भारतक निछछ ग्रामीण मैथिल के कला सं प्रभावित भेल। तकर पश्चात् भारत सरकार कालक्रमे मिथिलाक एहि भित्ति चित्रकलाक विकास दिस ध्यान देलक। सर आर्चर आ हुनक पत्नी मिल्ड्रेड आर्चर मधुबनी चित्रकला पर आलेख लिखि एकरा प्रसिद्धि दियौलनि।

भारत सरकार द्वारा सुप्रसिद्ध कलाकार आ छायाकार भास्कर कुलकर्णी कें मधुबनी पठाओल गेल। ओ बहुत दिन एतय रहि मिथिलानी सभ द्वारा बनाओल भितिचित्रक चित्र सब लेलनि मुदा अपर्याप्त रोशनीक कारणें कोहबर घर सबहक चित्र सुस्पष्ट नहि भेलनि। तखन ओ किछु स्त्रीगण सं चार्ट पेपर पर अपन कलाकृति बनाबय लेल अनुरोध कयलनि। मिथिला मे प्रचलित घोर पर्दाप्रथाक कारणें पुरुषवर्ग ओहि जुल्फी वला छायाकारक सोझा अपन घरक स्त्रीगणकें जाय देबाक लेल सहमत नहि भेलाह। तखन मधुबनीक लगपास गामक किछु प्रबुद्ध वर्गक स्त्रीगण कें सहमति भेटलनि आ ओ हुनका समक्ष अपना कलाकें प्रदर्शित कएलनि। भास्कर कुलकर्णी, उपेन्द्र महारथी, ललित नारायण मिश्र, मणिपद्म जीक सद्प्रयास सं एकर प्रचार प्रसार भेल।

1967 ई. एहि क्षेत्र मे आयल दुर्भिक्षक आकलन करय अयलीह भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर न्यास केर अध्यक्षा पुपुल जयकर, ओ मिथिला

संपर्क : ग्रा+पो: रांटी, थाना: राजनगर, जिला: मधुबनी (बिहार)-847211
ईमेल : duttchandana01@gmail.com, मो. : 44224341

क्षेत्रक विकास एवं स्वरोजगारके उद्देश्य सं मधुबनी मे उद्योग विभागक ऑफिस बनबौलन्हि। जाहि सं कलाकार सबकें देश-विदेश मे अपन कलाक प्रदर्शनीक व्यवस्था भेलनि।

आदरणीया गंगा देवी, जगदम्बा देवी, सीता देवी, महासुंदरी देवी, गोदावरी दत्त, करपूरी देवी, शशिकला देवी, बिमला दत्त आदि अग्रिम पंक्तिक महान कलाकार सब अपन कला साधनाक बले भारतमे अपन नाम ऊंच कएलनि।

अमेरिकन कलाप्रेमी रेमण्ड सरक जीक योजना छलनि सब कलाकार कें अमेरिका ल' जा कए कलाक प्रदर्शनी लगाबी मुदा ओ बीमार भए मृत्यु के प्राप्त भेलाह। एहि बीच मिथिलानी सबहक ई सुंदर हस्तकला विदेश यथा जर्मनी, फ्रांस, जापानमे प्रसिद्धि पाबि रहल छल।

जापानक कलाप्रेमी टोकियो हासेगावा कतहु गंगा देवीक बनाओल 'बाघ' देखलनि। जकर सौंसे देह अर्द्धचंद्राकार छाप देखि ओ आकलन कएलनि जे मुंह बौने ई बाघ चंद्रमा के निगलि गेल। हुनका चंद्रमा सं परम आसक्ति छल ई लोकचित्र हुनकर मोन मोहि लेलकनि। ओहि चित्र के कहुना कीनि ओ अपना लग रखलनि। हुनकर एकगोट उपन्यासकार मित्र अपन उपन्यासक कवर पर एहि लोक चित्र के छपलकनि, हुनक उपन्यास सुप्रसिद्ध भए बेस पुरस्कृत भेलनि।

तखन हुनकर विचार भेलनि सबके आनि अपन शहर निगाटा मे एकटा संग्रहालय बनाबी, जाहि सं भारत आ जापानक संस्कृति केर प्रचार-प्रसार होइ। संग्रहालयक नाम धयलनि 'मिथिला म्युजियम'।

तखन कहुना भारत अएलाह, ने भाषाक ज्ञान ने स्थानक ज्ञान, कहुना कतेक फिरीसान भए गंगा देवी केर खोज कए रसीदपुर गेलाह। फेर रांटी, जितवारपुर घुमैत अनेक कलाकार सबके कलाक परख कएलनि।

तखन कोलकाताक ओ.पी. राय जे ईमानदार सांसद आ कलाप्रेमी छलाह हुनका दुभाषिया बना मधुबनी आबि कलाकार सबहक वीजा-पासपोर्ट बनाकय अपन 'मिथिला म्युजियम' ल' जाए लगलाह।

सबसं पहिने गंगा देवी, महासुंदरी देवी, कर्पूरी देवी के ल' गेलाह। हुनकर सबके रहनाइ-खेनायक मैथिल व्यवस्था जापान मे अतिउत्तम ढंग सं कएलनि। गाम सं जापान आ पुनः जापान सं गाम धरि पहुंचेनाइ हुनक दायित्व छलनि।

1989क मई-जून मे पुनः आ. गोदावरी दत्त रांटी (मिथिला-पेंटिंग) आ जमुना देवी, जितवारपुर (गोदना पेंटिंग) के ल' गेलाह।

पुनः अगस्त 1989 मे मां विमला दत्त, सीता देवी हुनक कनिष्ठ सुपुत्र मास्टर, लीला देवी आ भारत-जापान सांस्कृतिक समन्वय लेल पांच टा बालिका सेहो एक महीना लेल गेल छलीह।

मां बिमला दत्त अपन संस्मरण सुनबैत रहैत छथिन। ओतय भोरे नाश्ता मे ब्रेड आ दूध दैत छलनि संगहि चाउमीन, जे ई सभ नहि खायत छलीह। 10 बजे सं 12 बजे तक म्यूजियम मे बैसिक पेंटिंग करैत छलीह तकर बाद भोजन।

भोजनक पश्चात् ई सब कनेक काल सुतय अवश्य छलीह। हासेगावा के हंसी होयत छल- ''मिथिला इन रेस्ट''। कियैक त' जापानी सभ भरि दिन बहुत सक्रिय रहैत अछि।

पुनः 12 बजे सं पांच बजे तक पेंटिंग करैत छलीह आ तकर बाद टोकियो हासेगावा आ हसिनगा, जे हिनकर सबहक दुभाषिया छल ओ जापानक प्रसिद्ध स्थल सभ घुमबय लेल ल' जाइत छल।

जापान मे सभ कलाकार अपन-अपन श्रेष्ठ कृति के निर्माण करैत छलथि। एक त' सुविधाजनक व्यवस्था आ संगहि कलाकार सबके मान-सम्मान बहुत करैत छलनि जापानी सभ।

समय-समय पर विभिन्न विद्यालय के बालक-बालिका सभ हिनकर सभहक कला सीखय लेल अबैत रहैत छल। कलाकार सब हुनका सब के प्रेमपूर्वक चित्रकारी सीखबय छलथि, संगहि मेंहदी, टीका लगा दैत छलथि। पुनः ओ धिया-पुता अपन माता-पिता संगे आबि किछु-किछु उपहार अवश्य दैत छलथि रुमाल, ग्रीटिंग कार्ड, पर्स, स्वेटर, खाय-पीबय के वस्तु संगहि भारत फोन करबाक लेल कूपन। घर-परिवार सं दूर रहि देश के मान बढ़वैत कलाकार सबके ई प्रेम बड्ड नीक लागनि। लगभग सभ उत्कृष्ट कलाकार के हासेगावा अपन मिथिला म्यूजियम मे ल गेलाह।

शशिकला देवी, महासुंदरी देवी, पुष्पा कुमारी, कर्पूरी देवी, बौआ देवी, गोदावरी दत्त, बिमला दत्त के घर-आंगन सन भ गेल छल जापान। टोकियो हासेगावा सगर्व भारतीय सबके कहय-

''आपके यहां कहीं है इकट्ठे इन महाकलाकारों की कलाकृतियां, आपके कोहबर अरिपन, त्रिशुल, देखने जापान मे मेरे 'मिथिला म्युजियम' मे आना पड़ेगा।''

'मिथिला म्युजियम' मे पद्मश्री गंगा देवीक भारतीय रेल, 'वर-कनिया', 'जंगल मे बाघ', 'कमलदह', 'राधाकृष्ण', मोन खराव भेला के कारणे 'गाछ' अधबनल रहि गेलनि। ई कचनी शैलीमे बनबैत छलीह।

पद्मश्री सीता देवीक 'अर्द्धनारीश्वर', 'गणेश', 'काली-शिव', 'कृष्णा-राधा', 'दुर्गा' बनल छन्हि। ई भरनी शैलीमे रंगीन चित्र बनबैत छलीह आ हिनक चित्र मे मानवाकृति नमगर होइत छलनि।

गोदावरी दत्तक 'दुर्गा', 'विष्णु अरिपन', 'कृष्णा आ गोपी', 'बाल कृष्ण', 'गणेश', 'चक्र', 'अनंत वासुकि', 'अर्द्धनारीश्वर', 'स्त्रीक जीवन आ पर्व' संग्रहालयक शोभा छनि। ई लाल आ कारी रंग सं कचनी शैली मे चित्र बनवैत छथि।

जमुना देवी गोदना चित्रकला क संग 'दुर्गा', 'कछुआ', 'चन्द्रमा', 'सलहेस भगवान' बनेने छथि। ई रंगीन चित्र गोबर सं कागज पोतिक बनवैत छलीह।

शशिकला देवीक 'ताड़ी उतारैत पासीक चित्र', 'गणेश', 'हाथी बांस', 'नन्दी', 'अरिपन' कचनी शैली मे बनल अछि।

लीला देवी क 'राक्षस सं लड़ैत

(शेष पृष्ठ 34 पर)

तीरभुक्ति मे विज्ञापन द प्रबुद्ध मैथिल समाज तक पहुंचाउ अपन सनेश



विज्ञापनक दर

बैक कवर पेज (कलर)	:	50,000
फ्रंट कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
बैक कवर इनसाइड पेज (कलर)	:	30,000
डबल स्प्रेड पेज (कलर)	:	40,000
इनर पेज (श्वेत/श्याम)	:	20,000
हाफ पेज (श्वेत/श्याम)	:	10,000

विज्ञापन राशि अखिल भारतीय मिथिला संघ केर नामे चेक/डिमांड ड्राफ्ट/एनईएफटी कएल जाए। संघक बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (Akhil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

भारतक कूटनीतिमे मैथिल लोकनिक महत्वपूर्ण भूमिका

✍ ललित के झा



लेखक अग्रणी संवाद समिति 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' केर वाशिंगटन संवाददाता छथि। एहि सं पूर्व 'वॉयस ऑफ अमेरिका' आ अनेक आन संस्था सभमे पत्रकारीय भूमिका मे रहल छथि।

ईमेल: lalitkjha@gmail.com

मिथिला अदौसं ज्ञान परम्पराक एकटा केंद्र रहल अछि। अति प्राचीन कालसं एहि क्षेत्रक शिक्षाविद आ पंडित सभहक महत्वपूर्ण योगदान देशक राजनयिक व्यवस्थामे रहल अछि। एहि तरहक योगदान स्वतंत्र भारतमे बेसि देखल गेल। देशक नाजुक हालतिमे मिथिलाक राजनयिक सभहक योगदान विदेश नीति आ राष्ट्रीय सुरक्षामे अति विशिष्ट आ रचनात्मक रहल अछि। उदाहारणस्वरूप सभसं पहिल छलाह 1947 ई. क' पश्चात स्वर्गीय चन्द्रशेखर झा। चन्द्रशेखर झा मिथिलाक पहिल सिविल सर्विस ऑफिसरक रूपमे जानल जाइत छथि। चन्द्रशेखर झा अपन कार्यकालमे विदेश सचिवक पद तक पहुंचल छलाह, जे भारतक छठम विदेश सचिव फरवरी 1965 सं अगस्त 1967 धरि रहलाह।

ई मोन राखय बला गप अछि जे ओ समय भारतक लेल विषम परिस्थिति बला छल, चीन सं तुरंत युद्ध समाप्त भेल छल आ देश प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूक निधनसं शोकाकुल छल, ओहि समयमे विदेश सचिवक कार्यकालक अंतर्गत प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्रीक नेतृत्वमे भारत-पाकिस्तानक मध्य एहन भीषण युद्ध भेल आ किछुए समयक पश्चात शास्त्री जीक संदिग्ध अवस्थामे ताशकंद मे निधन भ' गेल। ओहन समयमे जखन भारत विदेश नीतिमे बहुआयामी चुनौतीक सामना क' रहल छल, विदेश सचिव चन्द्रशेखर झा अपन सफल कूटनीति सं विश्वक धिआन भारत दिस आकृष्ट कराओलनि आ वैश्विक मदद सं पूर्वी पाकिस्तानमे फंसल लोक सभकें रेसक्यू ऑपरेशन सं निकालय मे सफल भेलाह। हुनक बनाओल एकटा मजगूत नींव, आगां आबय बला विदेश सचिव सभकें बांगलादेश मुद्दा पर वैश्विक सहयोग प्रदान केलक। ई कहब कोनो अतिशयोक्ति नहि होयत जे चन्द्रशेखर झा, बांग्लादेश निर्माणमे एकटा अदृश्य भूमिकामे छलाह। बेसी लोक एखनहुं एहि बात सं अनभिज्ञ छथि जे चन्द्रशेखर झा, भारतीय राजनयिकक तौर पर देशक परमाणु नीति जखन अपन नेनपन्न बला अवस्थामे छल, अति महत्वपूर्ण भूमिका निमाहलनि। विशेष बात ई जे ओ संयुक्त राष्ट्र संघमे भारतक दिससं छठम स्थायी प्रतिनिधि जनवरी 1959 सं जुलाई 1962 धरि छलाह।

लक्ष्मी कान्त झा (एल. के. झाक नाम सं प्रसिद्ध) भारतक अमेरिकी राजदूतक तौर पर अत्यंत महत्वपूर्ण काल 1970-1973 मे छला। जखन भारत-पाकिस्तान युद्ध भेल छल आ बांग्लादेसक निर्माण भेल छल, ओहि समयमे ओ महत्वपूर्ण योगदान देलनि। हुनक ठोस कूटनीति कें उच्च अमेरिकी राजनेता हेनरी किस्सिंगर, जे ओहि समयमे राज्य सचिव छलाह, सेहो स्वीकार कयलनि। एल. के. झा विशेष रूपसं रिजर्व बैंकक गवर्नर आ जम्मू कश्मीरक राज्यपालक रूपमे बेस चर्चित आ प्रशंसित भेलाह।

चन्द्रशेखर झाक दू गोट सुपुत्र एन. एन. झा आ प्रेम शंकर झा भारतीय कूटनीतिमे अपन योगदान देलनि। एन. एन. झा, विदेश सेवा अधिकारी, भारतीय राजदूतक तौर पर आयरलैंड,

---

अनुवादक: कुमारी पल्लवी, अधिकारी उत्पाद आ मद्य निषेध विभाग, बिहार सरकार।

विश्व बैंकमे सेहो अग्रणी छथि मैथिल

विश्व बैंक दुनिया भरिक सभ देशकें वित्तीय सहायता आ समग्र विकास लेल काज क रहल अछि। एहि संस्थामे हालमे भारतीय सभ महत्वपूर्ण भूमिकामे आबि रहल छथि। एहि भारतीय लोकनिक मध्य मैथिल सेहो प्रमुखता सं स्थान पाबि रहल छथि आ दुनिया भरिमे विकास काज लेल अपन योगदान क रहल छथि। हालहि मे एक गोट मैथिल श्री आभास झा कें विश्व बैंकक जलवायु परिवर्तन आ आपदा प्रबंधन विभागक प्रैक्टिस मैनेजर (दक्षिण एशिया) बनाओल गेल अछि। अर्थशास्त्री आ भारतीय प्रशासनिक सेवाक पूर्व अधिकारी (1989 बैच) श्री आभास झा मूलतः पूर्णिया जिलाक धमदाहा अनुमंडलक निवासी छथि। हुनक पिता श्री जगदीश चंद्र झा पटना विश्वविद्यालयमे इतिहासक प्रोफ़ेसर रहल छथि। श्री झा 2001 ईस्वी मे विश्व बैंक सं जुड़लनि, विश्व बैंकमे जुड़' सं पहिने श्री झा देशक प्रतिष्ठित भारतीय प्रशासनिक सेवामे छलाह, हालांकि सिविल सेवकक रूपमे हुनक सेवाकाल 12 बरख धरि रहल। श्री झा सिविल सेवकक संग लेखक सेहो छथि, विश्व बैंक लेल हुनक कएकटा पोथी आ आलेख प्रकाशित भ' चुकल अछि जाहिमे प्रमुख अछि, "सेफर होम्स, स्ट्रांगर कम्युनिटीज; ए हैंडबुक फॉर रिकंसट्रक्टिंग आफ्टर डिजास्टर्स" (2010) आ "सिटीज एंड फ्लडिंग: ए गाइड टू इंटीग्रेटेड अर्बन फ्लड रिस्क मैनेजमेंट" (2012)।

एक गोट आओर मैथिल आईएएस श्री सरोज झा सेहो 2005 इसवी सं विश्व बैंक से सम्बद्ध छथि। सरोज झा सम्प्रति मशरक विभागक क्षेत्रीय निदेशक पद पर छथि, जतय गत लगभग तीन बरख सं ओ लेबनान, सीरिया, जॉर्डन आ ईरान आदि दशक काज देख रहल छथि। एहि सं पूर्व ओ लगभग एक बरख धरि विश्व बैंकमे हिंसा, संघर्ष आ संवेदनशील विषय आदि पर ग्लोबल प्रैक्टिस विभागक निदेशक छलाह। फरवरी 2012 सं जनवरी 2016 धरि ओ एहि संस्थामे मध्य एशिया क्षेत्र केर क्षेत्रीय निदेशक रहलाह। ताहि बीच ओ मुख्यतः जल संसाधन, ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन आदि विषय सं सम्बन्धित काज सभ सम्पादित कएलाह। ओ विश्व बैंकमे आपदा नियन्त्रण आ क्षतिपूर्ति हेतु वैश्विक सुविधा (जीएफडीआरआर) केर संस्थापक सेहो छथि। एहि विभागमे ओ 2006 सं 2012 धरि प्रमुख आ आपदा जोखिम प्रबंधन विभागक ग्लोबल मैनेजर सेहो रहलाह। ओ 1990 सं 2005 धरि भारतीय प्रशासनिक अधिकारी रूपमे भारत सरकार विभिन्न पद सभ पर कार्यरत रहलाह। हुनक जन्म सहरसा जिलाक बनगांवमे भेल छल। हालहि मे श्री झा अपना गाम मे युवा प्रतिभा सबहक प्रोत्साहन लेल नव पहल आरम्भ कयलाह अछि। संगहि सेनामे नौकरी लेल इच्छुक युवक सबहक प्रशिक्षण-तैयारी लेल सेहो विशेष काज क रहल छथि।

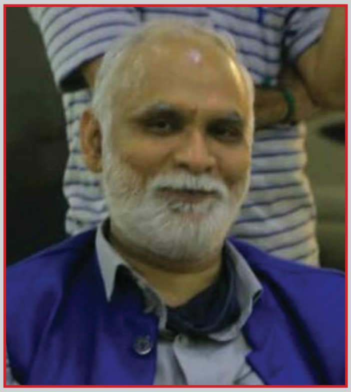
तुर्की, युगोस्लावियामे अपन सेवा प्रदान कयलनि। 1990-1993 धरि ओ श्रीलंकामे भारतक उच्चायुक्त छलाह आ भारत- श्रीलंका संबंध कें फेर सं सुदृढ़ करबामे महत्वपूर्ण भूमिका निमाहलनि। एन. एन. झा, बादमे अंडमान निकोबार द्वीप आ पुड्डूचेरीक लेफ्टिनेंट गवर्नरक पद पर सेहो सेवा प्रदान कायलनि। विभिन्न प्रकारके भारतीय विदेश नीति आ राष्ट्रीय सुरक्षा पर होमय बला महत्वपूर्ण विमर्श मे सक्रिय सहभागिता सं पत्रकार आ लेखकक रूपमे प्रेमशंकर झा भारतक प्रति वैश्विक विचारधाराकें आकार देयमे एकटा महत्वपूर्ण भूमिका निमाहलनि। प्रेम शंकर झा विभिन्न प्रकारक विचारोत्तेजक किताबक रचना सेहो कयलनि, जेहि मे सम्मिलित अछि हिडेन- टाइगर : कैन चाइना एंड इंडिया डोमिनेट द वेस्ट? ओ प्रधानमंत्री वी.पी. सिंहक सूचना सलाहकारक रूपमे सेहो काज कयलनि।

संतोष झा, उज्बेकिस्तानमे भारतक वर्तमान राजदूत, भारतीय विदेश नीतिक उभरैत सितारामे सं एक छथि। मोदी सरकारक विदेश नीति रचनामे, संतोष झाक एक विदेश नीति अधिकारी केर रूपमे अहम भूमिका छनि। अलग-अलग पदभार कें सम्हारैत ओ मॉस्को, व्लादिवोस्टोक, न्यूयॉर्क, ब्रूसेल्स आ कोलोम्बोमे सेवा प्रदान कयलनि, एखन अंतिम वर्ष धरि यू.एस. मे उप राजदूतक पद पर छलाह आ हुनका यू.एस. मुद्दा पर दक्ष मानल जाइत छनि, जे संभवतः भारतक किछु एहन चुनल कूटनीतिज्ञमे सं छथि जे 2016 क' यू.एस. राष्ट्रपति ट्रम्पक जीतक मादे पहिने सं भविष्यवाणी कयने छलाह। पछिला किछु वर्षमे विदेश नीति आ राष्ट्रीय सुरक्षाक दृष्टिकोण सं कूटनीति विशेषज्ञ सभहक सभसं महत्वपूर्ण सभा केर रूपमे रायसीना वार्ता उभरल अछि, जकर श्रेय सेहो झा जी कें जाइत छनि, असलमे ई हुनक दिमागक उपज अछि, जखन 2015 मे हुनका देशक वैश्विक संबंध पर पुनर्निर्माणक काज सौंपल गेल छल।

संतोष झा फराक तरहक द्विपक्षीय, क्षेत्रीय आ वैश्विक वार्ता सेहो शुरू कयलनि। हुनकर अहम भूमिका भारत या यूरोपीय संघक सदन ई.यू. द्विपक्षीय व्यापार आ निवेश, भारत-श्रीलंका कोम्प्रिहेंसिव एकोनोमिक पार्टनर्शिप समझौता कें आगां बढ़बय मे सेहो छनि। आस अछि जे मैथिल कूटनीतिज्ञ सभहक ई सूचि भविष्यमे आर बेसी पैघ होयत, किएक तं पछिला दस सालमे खूब रास मैथिल सभ भारतीय विदेश सेवामे नियुक्त भेलाह अछि। एखन धरि कोनो मैथिल भारतक दिस सं संयुक्त राष्ट्र संघमे स्थायी प्रतिनिधिक तौर पर नहि चयनित भेलाह अछि आ नहिए यू.एस.क राजदूतक रूपमे। चन्द्रशेखर झा आ लक्ष्मी कांत झाक एहि महत्वपूर्ण यात्राक पश्चात, नव पीढ़ी कें विदेश सेवामे चयनित होयबा सं जल्दीए इहो संभव होयत, से विश्वास अछि। ■

अफ्रीका मे मैथिल युवा सभक लेल रोजगार आ अवसरक संभावना

✍ केशव भारद्वाज



लेखक अफ्रीका महादेशक पूर्वी देश युगांडा मे भारतीय दूतावास मे कार्मिक आ कल्याण विभाग मे कार्यरत छथि। अनेक अफ्रीकी देश मे सेवारत रहल छथि। मिथिला आ मैथिलीक विशिष्ट अनुरागी छथि। पूर्वमे भारतीय जीवन वीमा निगम, सीमा सुरक्षा बल, दिल्ली पुलिस, दिल्ली मेट्रो आदि संस्थान सभ मे अपन सेवा देने छथि। संगहि विदेश मंत्रालय मे सेहो दिल्ली आ प्रिटोरिया मे सुरक्षा संबंधी सेवा मे रहल छथि।

अफ्रीका मे बौआएत काल हमरा बेसी काल मिथिला आ मैथिल याद आबि जाइ छथि। किछु अफ्रीकी लोक ततेक ने आलसी आ आरामपसंद होइत अछि जे हिनका सबके देखिते गामघरक किछु ठेठ प्रजातिके लोक स्मरण आबि जेताह। ओ जाबत अपन सर्वस्व नै सुड्डाह करताह, देह नै घुसकेताह। कयेक टा काज के वर्गविशेष आ जाति विशेष स' जोरि लेताह। फेर उनका अपना लेल करबाक लेल किछु बचबे नै करतनि। ताहि बाद सुति क' अपन दिन बिता लेताह। ओही ल' क' व्यवसायमे मिथिलाके छोट सं छोट कस्बा मे बाहरी लोकके प्रभुत्व देखबई। बाहरी मालिक रह'त आ ओकर चाकरी मे स्थानीय लोक लागल भेटताह। इएह हाल अफ्रीका मे छै। बजार ओकर है, आ बाहर के व्यापारी नफा कमा रहल अछि।

अफ्रीका एक युग सं सांस्कृतिक, जातीय आर भाषिक विविधताक केन्द्र मे रहल अछि। अफ्रीकाक अतीत, वर्तमान आर भविष्य एकटा निरंतर कथा छै, जे अहां के आकार देब' मे मदद करत। एतय नब्बे प्रतिशत कामकाजी लोक अनौपचारिक काज मे लागल अछि।

सबसं पैघ बात अफ्रीकाक पक्ष मे ई छै जे ओकरा मे स्वीकार्यता छै। गुजराती अत' सब जगह छिड़ियाल भेटत। ओ सब एक दोसर गुजराती सं सिक्कड़ि जेकां जुड़ल अछि। सब मिल क' आइ मजगुत स्थिति मे अछि। एहि सिक्कड़ि सं अफ्रीकी हाथी तक ओ सब बान्हि लैत अछि। ताही जमाना मे गांधीजी एकटा गुजराती व्यापारी केर व्यवसाय संबंधी केस मे पैरवी लेल दक्षिण अफ्रीका गेल रहथिन। पच्चीस बरखक मोहनदास ओत' एक्कैस बरस रही क' मोहनदास करमचंद गांधी बनि क' स्वदेश घुरलाह। ई अफ्रीके केर गुण धर्म छै जे एकटा सामान्य भारतीय के संघर्ष मे अतेक ऊंचाई पर जयबाक मौका आ स्थान देलकै।

ताहि लेल प्राकृतिक संसाधन प्रचुर छै। खेत-बाड़ी सं ल' क' हीरा-सोना तक ओत' बढ़िया मात्रा मे उपलब्ध छै। सूचना प्राद्योगिकी मे क्रांति अयलाक बाद आजुक मैथिल युवा देश दुनिया मे भ' रहल सब परिवर्तन आ संभावना सं परिचित छथि। दिक्कत छै, खाली जोखिम उठेबाक मानसिकता बनेबाक लेल। हमरा अफ्रीका मे सब जगह मैथिल भेटलाह अछि जे ओत' नीक क' रहल छथि। जरूरत छनि दोसर मैथिल लेल संबल बनबाक मानसिकता राखबाक।

अफ्रीका मे भारतीय मूलक नामी उद्योगपति श्री सुधीर रुपरेलिया केर स्पष्ट कहब छनि – "अफ्रीका मे जों नब काज शुरू करबा सं पहिने सर्वेक्षण, बाजार, लाभ-हानि आदिक अध्ययनक चक्कर मे पड़ब त' कहियो काज नै शुरु क' सकब। अत' जखने जत' मौका बुझाय, मनोयोग सं काज शुरू क' लिय'। लाभ हेबे कर'त।''

अफ्रीका मे रोजगार आ अवसरक संभावना नीचा लिखल क्षेत्र मे हमरा बुझने बहुत बेशी छै।

1. कृषि क्षेत्र

कृषि केर योगदान अफ्रीकाक सकल

संपर्क: ईमेल: dpkeshav1969@gmail.com

घरेलू उत्पाद मे पन्द्रह प्रतिशतक करीब छै, जखन कि कृषि पारिस्थितिकी क्षमता अछि सं बहुत बेशी छै। अतुका पैदावार अन्न आ फल सब के गुणवत्ता ल' क' विश्व बाजार मे बहुत मांग छै।

खेती-बाड़ी कर' बाला युवा मैथिल एतय पट्टा पर जमीन ल' क' खेती क' सकय छथि। युगांडा सहित कएक टा आर अफ्रीकी देश मे ई जमीनक पट्टा 49 बरख सं ल' क' 99 बरख तक केर होइत छै। तकर बाद ई पट्टा आगुओ बईढ़ जाइ छै। आहां अतुका सरकार सं, वा युगांडा केर निवासी सं हुनक निजी जमीन पट्टा पर खेती लेल ल' सकई छी। अहिना व्यावासायिक काजक लेल दक्षिण अफ्रीका सहित कयेक अफ्रीकी देश मे विदेशी सभ कें जमीन लेबाक अनुमति छै।

पूर्वी अफ्रीका मे खाली जमीन अपार छै आ बरखा सेहो बहुत होई छै। पोखरि बना क' माछ-मखान केर काज व्यापक स्तर पर कैल जा सकैत अछि।

2. पशुपालन

एतय पैघ पैघ चरागाह भेलाक कारण ो पशुपालन मे सेहो बड्ड रोजगार छै। दूध आ इधर सं बनल उत्पाद पर एत' काज कैल जा सकैत अछि। एकटा प्रमुख भारतीय व्यवसायिक प्रतिष्ठानक बिषय मे लोकक कहब छै जे ओकर कम्पनी के सबटा घी अफ्रीका के बनल रहय छै, खाली नामक चिप्पी बदलल रहय छै। मैथिल जे मूलतः दूध-घी सं परिचित लोक होइत छथि, एहि क्षेत्र मे मोन सं काज करताह आ लाभ कमेताह।

3. आधारभूत संरचना

अफ्रीका केर अर्थव्यवस्था दिनोदिन उन्नति क' रहल छै। अछि ल' क' बहुत तेजी सं शहरीकरण सेहो भ' रहल छै। एहि मे आधारभूत संरचनाक आवश्यकता होइत छै। ताहि लेल एहि सं जुड़ल क्षेत्र मे नब रोजगार केर सृजन भ' रहल छै। आइ भारतक सब महानगरक विकास मे मिथिलाक श्रमशक्ति केर योगदान छै, ओहिना ई श्रम वर्ग अफ्रीका मे आबि क' अपन स्थान बना सकैत अछि।

4. पेट्रोलियम, गैस आ खनिज

अफ्रीकाक विकास मे सबसं अहम भूमिका आजुक तारीख मे खनन उद्योग आ ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र मे होब' जा रहल छै। पुरना बिहार जकरा सं बंटि क' अजुका झारखंड राज्य बनल अछि, ओतुका खनिज उद्योग के विकास मे मैथिल सबहक बहुत हिस्सा छनि। आइयो एकटा नीक संख्या मे प्रवासी मैथिल ओइ क्षेत्र मे रहैत छथि। खनन सं पीढ़ी दर पीढ़ी जुड़ल रहबाक कारणे, अछि काज मे हुनका सबहक स्वभाविक आसक्ति हेतनि।

अफ्रीका मे एखनो पहाड़ सब के खनन खातिर एक निश्चित समय लेल पट्टा पर देबाक परिपाटी छै। ओना अछि मे प्रतिस्पर्धा बेशी भ' गेल छै। यूरोपियन सब सेहो गिद्ध जेकां एहि पर नजर गरौने अछि। सोना, हीरा सन आन-आन बहुमुल्य धातु, अफ्रीके टा मे शेष बांचल छै। से ल' क' दूरदृष्टि बाला व्यवसायी सब अपन रूख एम्हरे मोड़ने छथि। खनन मे कयेक प्रकारक अनुभवी लोकक खगता रहई छै। मैथिल युवा एहि क्षेत्र मे अपन भविष्य बना सकैत छथि।

चूंकि अफ्रीका अशिक्षा सं एखनो जूझि रहल अछि, तैं ओकरा बहुत बेसी अनुभवी शिक्षाविद के जरूरत छै। ओ सब शिक्षा के महत्व के आब स्वीकार क' लेने अछि। मैथिल युवा के एहि क्षेत्र मे अपार संभावना के देखैत, एहि लेल कमर कसि लेबाक चाही।

5. सेवा

पहिने अफ्रीका मे धनिक आ गरीबक बीचक खाई बड़की टा छलै। अत' मध्यम वर्ग नहिंये बरोबर छलै। समाज कें हमेशा सं मध्यम वर्ग संतुलित करैत रहलै अछि। हाल मे अत' मध्यम वर्ग के नीक संख्या भ' गेल छै।

मध्यम वर्ग लग वस्तु खरीदबाक शक्ति रहै छै। एकर संख्या बेशी रहलाक कारण, सीधा असर बाजार पर परै छै। बाजार कें खरीददार चाही। ई सब सर्विस सेक्टर केर अंतर्गत अबै छै। ई एकटा नब क्षेत्र उभरि क' एलै अछि, जहि मे नाना प्रकारक रोजगार गढ़ल जा सकै छै।

6. सूचना आ संचार क्षेत्र

एहि क्षेत्र मे दुनिया भरि मे क्रांति एलै अछि। अफ्रीका मे आन महादेशक तुलना मे काज कम भेल छै। एहि मे रोजगार आ व्यापार दुनु केर बहुत अवसर छै। मैथिल युवा, विशेष क एहि क्षेत्र मे कार्यरत लोक, एत' अपन भविष्य चमका सकै छथि।

7. शिक्षा

मिथिलाक भूमि अदौं सं विद्वता लेल जानल जाति अछि। हम अफ्रीका मे जत' कतहु अखनि धरि गेलहुं, हमरा मैथिल अध्यापन सं जुड़ल भेटलाह, चाहे ओ सरकारी वा गैरसरकारी विश्वविद्यालय हो वा आन शैक्षणिक संस्थान। सबसं महत्त्वपूर्ण बात ई छै, जे अतुका समाज मे ओहि शिक्षक सबहक सम्मान बहुत बेशी छनि। एकर मुख्य कारण हिनकर सबहक नीक वक्ता भेनाई सेहो भ' सकैत अछि।

चूंकि अफ्रीका अशिक्षा सं एखनो जूझि रहल अछि, तैं ओकरा बहुत बेसी अनुभवी शिक्षाविद के जरूरत छै। ओ सब शिक्षा के महत्व के आब स्वीकार क' लेने अछि। मैथिल युवा के एहि क्षेत्र मे अपार संभावना के देखैत, एहि लेल कमर कसि लेबाक चाही।

8. हेयर कटिंग सैलून

हमरा अफ्रीकी देश लेसेथो आब' जयबाक क्रम मे पता चलल जे ओत' भारतीय शैली केर हेयर कटिंग सैलून नै छै। एहि ल' क' ओतुका भारतीय सभ केश कटब' पड़ोसी देश जाइ छथि। अफ्रीकी सब के केश नहिये जेकां होइ छै, तैं ओ सब बेलमुड़ी बेशी भेटत। स्त्रीगण सब बिग पहिरने भेंटत।

(शेष पृष्ठ 40 पर)

इंग्लैंडक हमर पहिल यात्रा

✍ डॉ. शेफालिका वर्मा



शेफालिका वर्मा मैथिली साहित्यक प्रख्यात नाम। साहित्य अकादेमी सम्मान, फर्स्ट वर्ल्ड वीमेन अवार्ड, लाइफटाइम वीमेन एक्सीलेंस अवार्ड, इन्डो यूरोपियन चैम्बर, भारत सरकार, यात्री चेतना सम्मान, मिथिला विभूति, स्वजन सम्मान, मिथिला रत्न, अटल मिथिला सम्मान, मैथिली की महादेवी, काव्य विनोदिनी, मुरलीधर शेखर सम्मान, मैथिली कि मीरा आदि अनेको सम्मानसं सम्मानित। हिन्दी आ मैथिलीमे दर्जनों पोथी प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, मैथिली भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकार आओर बहुत रास संस्थामे से संबद्ध।

दिल्लीक अनतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा सं हवाई जहाज आस्ते-आस्ते घुस्सुक्की मारि रहल छल। सुपर्णा के कहब अनुसार हम सब मुंह मे च्वुइंगम ल' लेने छलौं आ आंगुर से दुनू कान बन्न क' लेलौं। एयरहोस्टेस पहिनहि बेल्ट बान्हि देने छलीह। कनिके काल मे जहाज अपन जुआनि पर आबि गेल। खिड़की कातक सीट छल, हुलकी देलौं ते सौंसे दिल्ली प्रॉपर्टी डीलर के घर मे राखल अपार्टमेंटक नक्शा जकां लागल। एकटा रोमांचक स्थिति मे सांस ल' रहल छलहुं कि हमरा सभक सोझा फ्रूट जूस, आलमंड, कोक राखि गेल। कोक देखतहि रोमांच बिसरि गेलौं। लगैत छल यैह रोमांच मेटबा लेल यात्री गणक सोझा ई सब पसारि दैत छैक। फेर कनि काल मे, पपीता, संतोला, कैप्सिकम, अन्नानास, खीरा, गाजर, नेबोक सलाद, बोनलेस चिकन केर ३-४ टा उसनल खुण्डी, फ्रूट जूस, कोक के तीन चारि टा केन राखी देलक। वर्मा जी के निरामिष भोजन मे चिकनक बदला पूड़ी आ उसनल आलू छल, दुइ टा कोनो मधुर छल स्यात ब्रेड से बनाओल। फेर चाह, कोफ़ी आ शराबक बोल बाला। स्केण्डनेवियन एयरलाइन्स के फ्लाइट मे सबटा प्रायः विदेशी छल। कोकक बदले सभक आगू रंगबिरंगक सीसी, छोट-छोट गिलास। फ्लाइट के मैगजीन मे शराबक नाम पहिल बेर पढ़लौं, ...प्रागक पीलवान बियर, कोपेनहेगेन के डेनिस बियर, हमरा सब ले अचरज छल। एतेक लग से हम सब सायदे कहियो देखने होयब। हमर सभक बगल मे दू टा युवक-युवती शराब पिबैत पीबैत एक दोसराक आलिंगन मे बद्ध दुनू के ठोर एना सटल जेना क्विक फिक्स लगा देल गेल होइ। चारु कात कमोवेश यह नजारा।

अचक्के अफगानिस्तान मे बड़ जोर आंधी चलल, प्लेन डगमगाए लागल। पूरा प्लेन मे हड़कंप मचि गेल। सटल ठोर अलग भ' गेल प्राणक मोह मनुख के कतेक सजग क' दैत छैक। प्लेन के आंधी से ऊपर उड़ा देलक। पैंतीस हजार फीट से ऊपर। चारु दिस बाउल धूरि। हमहुं सब आंखि मुनि नेने छलौं। ह' ह' कय विपदा टरल। समरकंद-ताशकंद के बाद नीचा देखवा मे लगैत छल जेना नील सरोवर मे माटिक काई जमल होइ। मेघक श्वेत सुन्नर फूल खिलल होइक, कतहु कतहु टेढ़-मेढ पातर लाइन सब खींचल लगैत छल जेना बिजली के तार सब ओझरायल पड़ल होइ। आखिर ई की छी, अंतरिक्ष छी ते एकरा के बनौलक, वैज्ञानिक जे बजैत मुदा, ई ब्रह्माण्ड विचित्र रहस्य से भरल।

वर्मा जी बजलैथ ..लगैत अछि नीचा धरती होइ, मुदा, धरती छल कहां, खाली रेते रेतक भरम छल। ऊपर नील अकास, अगल-बगल उमड़ल मेघ खंड, त्रिशंकु जकां लटकल हम सब।

जखन हमर सभक जहाज काबुल बुखारा पार क' एकतरीन बर्ग, रूस दिस पैंतीस हजार फीटक ऊंचाई पर पांच सय बासठ माइल प्रतिघंटाक गति से भागि रहल छल, दुनू गोटेक मन-भय समायल, प्लेन गिरबो करत ते सुपर्णा मनोज जी

संपर्क : ए-103 सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स, डीडीए, एचआईजी फ्लैट्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
मोबाइलः 9311661847, ईमेलः shefalika1943@gmail.com

लग गिरत। हम सब हुनके लग पहुंचि जायब। फेर दुनू गोटे एक दोसराक हाथ पकड़ने बच्चा जकां अपन सोच पर अपने हंसैत रहलौं। बच्चा सब मे हमर सभक जान बैसेत छल। वर्मा जी प्लेन मे एकोबेर हमर हाथ नै छोड़लैथ। हुनका मृत्यु से बड़ भय होइत छल।

आब टीवी पर अंग्रेजी सिनेमा शुरू भ' गेल। प्लेन के ड्यूटी फ्री चीज ट्रॉली पर बिकनाय शुरू भ' गेल। रौदक एकटा तीख, प्रखर किरण हमर सभक कोर मे खसि पड़ल। हम चौंकि बाहर देखलौं जवान सूरज हमरा सब के हुलकी मारि टाटा बाय-बाय क' रहल छल।

देह मे झुरझुरी आबि गेल। लोग किएक कहैत अछि सुरुज अस्त भ' गेल। सरिपों सूरज एहेन शक्तिशाली देवता के हम सब उदय-अस्त के सीमा मे बान्हि दैत छी।

रास्ता मे कोपेनहेगेन मे चारि घण्टा रुकल होयब ट्रांजिट मे। कारी-कारी समुद्र प्लेन से देखैत छ्लौं, बुझि गेलौं ब्लैक सी यानी आब कोपेनहेगेन।

आ फेर लंकाशायर। मैनचेस्टर मे उतरल छ्लौं, कौशलेंद्र जी, वंदना दुनू डॉक्टर भरि पांजि खुशी से पकड़ने हमरा सबके, एकटा स्वप्न लोक सन प्रतीत होइत छल। सहरसा के सरकारी स्कूल मे पढ़ वाला बच्चा सब आइ एतेक स्वप्न देखैत हमरा दुनू गोटे के, सपने छल, कोन दुनिया मे डूबि जाय छी मम्मी, वंदना झकझोरि देलक, हम ते टेम्स नदी फेरी पर बैसल छी आ अपन बेटी जमाय डॉ. के.पी., डॉ. बंदनाक संग लंदनक इतिहास जानबा मे व्यस्त छलौं, अभूतपूर्व रोमांच भ' रहल छल ई टेम्स नदी थीक-जेनासेन नदी पेरिसक अन्तरात्मा थीक, बल्तावा प्रागक आत्मा, ओहिना टेम्स नदी लंदनक संस्कृति-संस्कारक इतिहास, दुई पाट कें मिलबैत कतेको ब्रीज, ... टेम्स नदीक दुनू किनार पर लंदन शहर अवस्थित अछि, जेना लंदनक हृदय टेम्स नदी होई जकरा संग सजल, तरल लंदनक इतिहास सुरक्षित छल।

काल्हि सांझ विक्टोरिया एम्बान्कमेंट पर टेम्सक संग-संग कतेक दूर धरि चलैत रहलौं गुनैत रहलौं, लागैत छल जेना हम कतेक बेर एहिठाम आबि चुकल छी-बचपन सं टेम्सक विषय मे पढ़ैत, टी.वी. पर चित्र-विचित्र देखैत जेना सभटा आत्मसात कय लेने छलहुं-हल्लुक-हल्लुक हवाक संगे बरखाक फुहार मोन प्राणे नै तन सेहो भिजाय रहल छल।

नदीक दोसर दिस दक्षिणी तट छैक साउथ बैंक नाम सं। मोन पड़ि जाइत अछि जे कतहु पढ़ने छलहुं शेक्सपीयर एहि बाटे ग्लोब थियेटर जाइत छलाह। आ ई वेस्टमिंस्टर ब्रिज पर वर्डस्वर्थ कविता लिखने छलाह जकरा हम पाठ्य पुस्तक मे कतेक बेर कंठस्थ करैत छलहुं-आइ ओही ब्रिज पर ठाढ़ हम सभ बनाना स्क्वैस पीबैत छलहुं... बगल मे पार्लियामेंट हाउस, बिगवेनक विशाल भव्य टावर। वेस्टमिंस्टर ब्रिज सं हम सभ फेरी पर लंदन ब्रिज दिसि जाय रहल छलहुं, लंदन ब्रिज-लंदन ब्रिज फॉलिंग डाउन... नेना सभक मुंह सं पोयम सुनैत छलहुं-आइ वैह लंदन ब्रिज हम साकार देखि रहल छलहुं...

कहियो स्वप्नो मे नै सोचैत रही जे हम सभ विदेश जायब। छह संतान कें उच्च आ नीक शिक्षा प्रदान करबाक लेल हम दूनू गोटे युवा अवस्थाक अपना खुशी कें वृद्ध बना नेन छलहुं। वर्माजी हरदम कहथि, पाइ नहि अछि तैं की? छह ठाम हमर बैंक बैलेंस अछि। आइ वैह बच्चा सभ हमरा सभ लेल अनमोल भ' गेल अछि। पैघ पुत्र राजीव आ पुत्रवधु जया दिल्ली वि.वि. मे इतिहासक प्राध्यापक, बेटी भावना बंबई मे अपन पति प्रकाशजी, अधीक्षण अभियन्ता ओ एन जी सीक संगे पीएचडी करवा मे तन्मय, बंदना कौशलेंद्रजी इंगलैंड मे डाक्टर, सुपर्णा मनोजजी मास्को मे बड़का बिजनेसमैन, तरुणा दिल्ली मे 'दृष्टिक' मैनेजिंग डायरेक्टर आ पति विकास दिव्यकीर्ति होम मिनिस्ट्री मे, दोसर पुत्र संजीव पटना हाई कोर्ट मे पिताक संग वकालत करैत... हमरा संग छह संतान सं भरल खोता छल जकरा हम सभ विशाल साम्राज्य मे परिणत कयलहुं। प्रेम आ विश्वासक नींव पर बनाओल एहि साम्राज्यक सम्मुख विश्वक समस्त संपत्ति हमरा सभ लेल नगण्य अछि। सोचैत छी, अपार संपत्ति नीक आ कि सुदर, सुसंस्कृत संतान? ओहो कोनो प्राइवेट स्कूल सं नै वरन सहरसा के सरकारी स्कूल सं मैट्रिक पास कय तखन पटना आ दिल्लीक बाट लेलनि। अच्चके फेरी पर सभ अंग्रेज चिकर' लागल लुक लुक-या या-हो हाय... खुशी या उन्मादक स्वर सं टेम्सक हृदय मे हिलकोर होम' लागल। बंदना बजलीह-मम्मी आइ पंद्रह बरिस सं लंदन ब्रिज नहि खुलल छल, आइ अचानक खुजि रहल अछि। कतेक अंग्रेजो ब्रिज खुजैत नहि देखने अछि।

ओहि समय इंगलैंड मे इस्टरक तीन दिनक छुट्टी छल, तैं टेम्स मे फेरीक आ फेरी पर अंग्रेज परी सभ अपन-अपन गन्धर्वक बाँहि मे झुलि रहल छलीह आ खुशी आ उन्माद सं एक दोसरा कें लपेटने चुम्बनक मदिरा मे मस्त-

आगू मे ब्रिजक विशालकाय पंख अपन बाँहि पसारि हमर सभक स्वागत सत्कार लेल तत्पर-हमर सभक उल्लासक सीमा नहि छल-उपर ब्रिज आ नीचा सं हमर सभक स्टीमर आगू बढ़ैत-अनिलजी, प्रीतू, एनी सभक आंखि मे यूरेकाक भाव छल-चिड़ई जकां सभ एक दोसराक खुशी देखि चहचहाय रहल छल-कतेक भागवंत हम सभ छलहुं-सभ अंग्रेजक दृष्टि हमरा सभ पर छल-अइ परदेशीगण! आइ अहांक अयबाक खुशी सं हमर लंदन ब्रिज खुजि गेल-एहेन की बात छैक अहां मे?

हमरा सभ कें नहि बुझल छल जे ई नहि खुजैत अछि। हम सभ तं सहज रूप सं ग्रहण करैत रही। मुदा, अंग्रेजक उत्साह-उन्माद देखि गौरवक बोध भेल, 'एहनो होइत छैक'।

हमर सभक पूर्वज हमरा सभक मोन मे अंग्रेजक खूंखार, हिंसक, घमंडी रूप स्थापित कय देने छलाह जे स्वाभाविक छल-हमर सभक देश पर दुई सौ वर्षक हुनक शासन-हमर सभक दासता, अंग्रेज के मलेच्छ मानल जाइत छल। हम सभ इंगलैंड जा रहल छी-पता नहिं ओ सभ ओछ दृष्टि सं देखत, गुलाम बुझत, बड़ तर्क-वितर्क मोन मे होइत छल...

मुदा एहिठाम बाट चलैत अंग्रेज स्त्री-पुरुषक मुसकान देखि जनम-जनमक

पहिचान मोन पड़ि जाइत छल, हुनक प्रेम, आत्मीयता, शालीनता देखि हमरा सभ कें अपनहि पर लज्ज़ा अबैत छल, 'विद्या ददाति विनययम्' ई पाठ हम सब खाली रटैत छी, किंतु अंग्रेजक संस्कृति मे साकार छल। ओ अनुशासन प्रियहि टा नहिं होइत छथि, समस्त इंगलैंडक सफाई, सुरूचिपूर्ण व्यवस्था, नियम-कानून ओहि ठामक प्रत्येक नागरिक-वृद्ध, बाल युवा, सभ पर निर्भर करैत छैक आ सुचारू रूप सं चलैत छैक।

जौं हम इंगलैंड नहिं जैतों तं हुनक उज्ज्वल पक्ष सं सर्वथा अनभिज्ञ रहितौं। एहिठाम बसल भारतीय सभ सेहो अंग्रेज जकां अपना वेश-भूषा सं उदासीन, कर्त्तव्यक प्रति सजग, सचेत। जतेक युवा भारतीय ओही ठाम बसल छथि अंग्रेजक संग सहज आत्मीयताक रंग मे रंगल, हमर सभक विचार सभक पूर्वाग्रह सं पूर्णत: असंपृक्त।

इंगलैंड मे लगैत छल जेना ओहि देशक सुरुचि संपन्नता छोड़ि अंग्रेजक अपन कोनो पहिचान नहिं होइ। अपन देशक खेनाय-दालि-भात, रोटी-दालि, राष्ट्रीय स्तरक भोजन। मुदा अंग्रेजक अपन कोनो भोजन नहिं, कोनो खेनाय नहिं, चीकेन बर्गर, पिज्जा, चीज ओनियन रोल, फ्रेंच फ्राइज चीमी चंगा आदि-आदि-हं आलू उसनल, गाजर उसनल बड़ खाइत छल। संगे औक्स टेल सूप (बरदक पुछरीक सूप) बड़ व्यवहार मे छल। समस्त इंग्लैंड मे हजारो भारतीय रेस्तरां जकरा मे खाली अंग्रेज सभक भीड़, दू सय बरस तक भारत पर राज कर' वाला अंग्रेजक पूर्वज सभ जेना अपना भावी पीढ़ीक रक्त मे भारतक चहटगर भोजनक चहट भरि देने होइ। केरा कीनू तं ओहिपर स्टीकर साटल स्पेनक, बैगन ब्राजीलक, सेब यू.एस.ए. आखिर इंग्लैंडक अपन की अछि-दोकान मे तं नहिं बुझलौं किंतु ओम्सकर्क, (लंकाशायर) मे स्ट्राबेरीक जंगल कतेको एकड़ मे लागल भेटल, लाल लाल स्ट्रबेरी सं लदल-देखि मोन मुग्ध भ' गेल। पूरा परिवार संग आ भरि दिन बैसि जतेक खा सकैत छी खा लिअ' सांझ मे झोरा मे भरि जतेक घर ल' जाउ-प्रत्येक झोराक पांच पौण्ड लैत छल। भीतर मे बैसबाक व्यवस्था, जल आदि सभ किछु छल।

'जनगणमन', 'वंदेमातरम्' जकां अंग्रेज कें अपन कोनो राष्ट्रीय धुन नहिं छैक, किंतु हुनक गिरिजाघरमे, चैपल मे राष्ट्रीयता सं ल'क' धर्मक सेहो अलग पहिचान छैक। ईसामसीहक पीड़ा जन-जनक पीड़ा छैक, एहि ठाम सभक मोन मे ई भाव भरल जाइत छैक जे अहांक पापक प्रायश्चित ईशु कय रहल छथि। अहांक रक्षा लेल जीविते सलीब पर चढ़ि कील सं ठोका गेलैथ। ईशाक करुण गाथा गिरिजाघरक देवार पर जेना अदृश्य अंकित रहैत छैक।

इंगलैंड धर्मनिरपेक्ष देश बुझि पड़ैत छैक-गायत्री मंत्रक व्याख्या, अनुष्ठान, हवन आदि सत साईंबाबाक गुणगान प्रत्येक ठाम होइत छल। पंजाबी, गुजराती, दक्षिण भारतीय, नेपाली व्रत त्योहारक संगे मुसलमानक ईद आदि खूब धूम-धाम सं मनायल जाइत अछि। अंग्रेजक एकटा-दुईटा बड़का पावनि थीक इस्टर आ क्रिसमस किंतु हिंदुस्तान पाकिस्तानक त्योहार बारहो महीना मनाओल जाइत अछि, जकरा मे अंग्रेज सभ दिल खोलि भाग लैत अछि।

इतिहास सं प्रतीत होइत अछि जे फीनिक्स (एक प्रकारक पक्षी) सं अपना आप के चिन्हयवाली जाति अपन नाम फीनिशियन राखने छल। फीनिक्स पक्षी बेर-बेर अपनहि छाउर सं जनम लैत अछि।

ई फिनिशियन सूरजक पूजा करैत छथि। हिनक उद्‌गमक जानकारी इतिहासो कें नै बुझल छैक किंतु हिनक संबंध सपर आ हिंदुस्तान सं मानल जाइत अछि। सूर्यक एकटा नाम ओन सेहो अछि। एहि कारण फीनिवायन यूरोपक धरतीक नाम राखलक एल ओन डोन यानी सूरजक शहर जे आइ लंदन भ' गेल।

इजराइलक कबीला जखन बिखर' लागल तं किछु लोग फीनीसियन सं मिलि गेल। इंगलैंड शब्दक जड़ि हिब्रू भाषा मे अछि। जोजफ कबीलाक चिन्ह बैल होइत छैक। बैल के हिब्रू मे ऐंगल कहल जाइत छैक। एहि कारण एकर नाम ऐंगल लैंड पड़ल जे आब इंग्लैंड भ' गेल। आइ ओही इंगलैंडक धरती पर हम सभ ठाढ़ छी।

एहिठाम जीवन छैक-9 बजे भोर सं सांझक-5 बजे तक आफिसक काज होयत छैक। पांच बजेक बाद ओहि ठामक समस्त दोकान बाजार बंद भ' जायत छैक। किछु कें छोड़ि जेना आसदा, सेन्सबरी, सेफवे आदिक शाखा-प्रशाखा। सांझ होयतहि सभ अपन परिवार, गर्लफ्रैंड, बाय फ्रैंडक संग पब मे या सी बीच पर जाइत छथि। केओ अपन घर मे बैसि भविष्यक आशंका मे नहिं कुहरैत अछि। शनि, रवि वीकएंड होइत अछि। समस्त परिवारक संग शुक्रक सांझ मे सभ बाहर चलि जाइत छथि आ रवि के सांझ आपस अबैत छथि। एक एक पल मे ओ जीबैत छथि।

मुदा, एकर कारण छैक। ओहिठाम सरकार दिसि सं हुनका सभकें बड़ सुविधा भेटैत छैन्ह। पैंसठ वर्षक आयुक बाद एकटा दोकानदारो मे पेशन भेटैत छैक। स्वास्थ्य चिकित्सा नि:शुल्क, विकलांग कें भत्ता, बेरोजगार कें भत्ता भेटैत छैक जे ओहिठामक नागरिकता लेने छथि, संघर्ष छैक नवयुवक लेल, जिनका अपन क्षेत्र मे कठोर परिश्रम कर' पड़ैत छैक मुदा, पाइ आ सुविधा ततेक छैक जे संघर्षो नीक लगैत छैक।

हं, सभसं कठिन कार्य ओहिठाम डॉक्टरक छैक, जिनक प्राण हरदम शूली पर लटकल रहैत छैक। ओहिठाम पेसेंट के भगवान बुझल जाइत छैक आ डाक्टर ओकर सेवक। कनिको मरीजक उपेक्षा होयत तं मरीज ओकरा सू (मोकदमा) क' दैत अछि जकरा लेल दंड 'जानलेवा' तक भ' सकैत छैक। मुदा, सुविधा ततेक भेटैत छैन्ह जे भारतक नाम खास क' बिहारक नाम सं डाक्टरक प्राण सुखय लागैत छैन्ह। अस्पताल दिस सं क्वार्टर, फर्नीचर, सोफा, पलंग-बिछान गद्दा, पचीसो रंगक चादर, तकिया खोल, ओढ़ना, तौलिया सं ल'क' भानसक सभ सामान भेटैत छैक। चुल्हा-चौकाक सभ बरतनक डिजाइन डिजाइनक डिनर सेट, टी सेट घर मे पड़ल रहैत छैक-प्रोन्नति लेल कोनो सचिवालयक चक्कर नहिं, अस्पताल मे चाह जलखै सं ल' क' बाल बच्चाक पढ़ाई-लिखाइ अत्युत्तम। किन्तु ई सभ उपलब्धि सहज नहिं। एमबीबीएस होथि वा कि एम-डी बिना ओहिठामक प्लैब टेस्ट परीक्षा नहिं

पास केने नोकरीक सवाले नहिं उठैत छैक। एहि क्रममे कतेको एमबीबीएस पेट्रोल पंप पर पेट्रोल भरैत छथि, सेल्स मेन छथि-रिसेपनिस्ट आदि कतेको छोट-मोट काज क' निर्वाह करैत छथि।

ओहिठाम डाक्टर मे जी.पी.क भूमिका अहम, जेनरल प्रैक्टिसनर जकर व्यवस्था सरकार करैत अछि। हिनका मरीज सं फीस नहिं मांग' पड़ैत अछि। जीपीक अंदर मे जतेक मरीज रहैत छथि सभक रजिस्ट्रेसन रिकॉर्ड सरकार कें पठबैत छथि। सरकार हुनका आफिस लेल क्वार्टर, स्टाफ, नर्स, मशीन सभ दैत अछि। ओहिठाम बिहारक कतेको डाक्टर सं भेंट भेल। डा. ए.के. वर्मा जीपी पटना हाईकोर्टक वरीय अधिवक्ता श्री ब्रजकिशोर प्रसादजीक जमाय, एकटा बड़ पैघ हस्तीक रूप मे जानल जाइत छथि। ले मे डॉ. वाय. एन. दास, न्यूकास्ल मे डॉ. राजकुमार, लिस्टर मे डॉ. मिथिलेश लाल, डॉ. अनीता कंठ, लंदन मे डॉ. ए.के. झा, डॉ. चंद्रशेखर रेड्डी, डॉ. ममता, वैसिलडन मे डॉ. सत्यप्रकाश लाल दास, आर कतेको भारतीय, नेपाली डाक्टर सभ सं हमरा सभकें भेट भेल-सभ खुश छथि-'हम सभ काज करैत छी, तकर रिवार्ड हमरा सभ के भेटैत अछि-किछु मंगबाक आवश्यकता नहिं पड़ैत अछि '

सोचैत, छी अपन देशक व्यवस्था एहिठामक अच्छाई कें किएक नै अपनाबैत अछि? लूट-पाट, बलात्कार सन अपराध अहियो ठाम अछि मुदा सुव्यवस्थाक अंतर्गत एकर सभक कोनो मोजर नै। वर्माजी बजैत छथि-इंगलैंड बिहारो सं छोट स्थान अछि। एकर जनसंख्या सेहो आधा बिहारक-तखन भारतक कोन कथा-? मुदा, मोन मे ई तर्क नहिं बैसेत अछि-मनुष्य यदि चाहे, सरकार चाहे तं की नहिं क' सकैत अछि?

सहस्राब्दिक अंत भ' रहल छलैक। नवीन युगक प्रारंभ होय वला छल। समस्त यूरोपक संगे लंदनक हृदय टेम्स पर मिलेनियमक स्वर्णिम आभाक आयोजन योजना चलि रहल छलैक। नव वर्षक उपलक्ष मे दुइ मिलियन सं बेसी (2-5) व्यक्ति कें आकृष्ट करबा लेल लंदनक आत्मा टेम्स नदी तीन माइल धरि मिलेनियम पार्टी जोन बनि जायत। जहिना मध्य रात्रि मे बिगबेन बारहक घंटा बजाओत, ओहिना प्रकाशक विपुल किरण राशि सं टावर ब्रिज सं वाक्सॉल ब्रिज धरि जगमगा जायत। टेम्सक दुनू तट पर मेला लागत जकर नाम रहत 'ग्लोबोल गाम' (वेस्टमिंस्टर ब्रिज सं ल' क' ब्लैक फ्रेजर ब्रिज धरि। समस्त लंदन कें कनिया-पुतरा जकां सजाय सहस्राब्दिक स्वागत लेल उत्सुक आ उत्साहित अंग्रेज सरकार आ जनता। ओ क्षण केहन होयत आब कल्पने क' सकैत छी। ओना इंगलैंड मे रात्रि मे सदिखन दीपोत्सव बुझय पड़ैत अछि। सड़क सभ पर्वत पर बसल, देवार ऊंच-नीच अछि, मोटरवेज पर तीन पंक्ति मे गाड़ी आबैत अछि आ तीन पंक्ति मे जाइत अछि। बीच मे डायभरसन लग 80-90 सं उपर स्पीडक गाड़ी, बीच मे 70-80 अंत मे 60 स्पीडक गाड़ी कतारबद्ध चलैत अछि। दुइ गाड़ीक मध्य दुइ गाड़ीक अंतर आवश्यक। राति मे सड़क पर मर्करी नियोनक प्रकाश आकाश के दूर-दूर धरि दीपमालाक आभास द' रहल छल। जतेक गाड़ी जाइत रहैत अछि आ जतेक गाड़ी अबैत अछि तकर हेडलाइट सड़क पर श्वेतकमल आ रक्तकमल सन बुझा पड़ैत छैक। यानी रात्रि मे इंगलैंड रंग-विरंगी पुष्प आ दुधिया प्रकाशक सरोवर प्रतीत होइत अछि।

बारहो मास सरदी-, तन मोन मे भरैत हवा तीक्ष्ण कटार सन-हवा मे उड़ैत सेमरक फूल जकां बरखाक फूही-एतेक स्वेटर आ ऊनी कपड़ा पहिरबाक उपरान्तो रक्त मज्जा हड्डी तक मे भेदन करैत सर्द हवा-आब बुझैत छी कतेक तीव्र वेदना सं आहत भ' शेक्सपीयर लिखने हेताह-

ब्लो-ब्लो दाउ विंटर बिन्ड' फॉर दाउ आर्ट नौट सो अनकाइंड एज मैन्स इंग्रेटिट्यूड...वास्तवमे कृतघ्नता एहि सर्द हवो सं तीक्ष्ण मानव हृदय के चिरैत जाइत अछि-स्यात् स्वयं मानव कें बुझवा मे नहिं अबैत हेतैक...

एक दिन मे चारि मौसम बदलि जाइत अछि इंगलैंड मे बसंत, बरखा, शिशिर, हेमन्त...

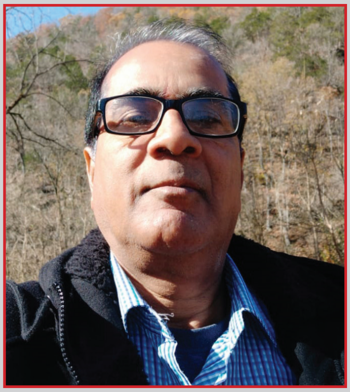
झरैत पात, फलायल पुष्प, सरसराइत घासक मध्य बरखाक फुहार संग तीक्ष्ण हवा, आरी जकां हमर सभक मोन-प्राण कें कंपकपबैत - जकरा ओ समर कहैत अछि ओ हमरा सभ लेल दिसंबर जनवरीक रौद बेसी अपना मे गर्म करैत अछि-आ फेर वैह ठंड-वैह हवा लंदन सं जीटीवीक प्रसारण होइत अछि जाहिमे भारतक सीरियलक संगे पाकिस्तानी सीरियल सभ सेहो देखाओल जाइत अछि, इंगलैंड मे होम' बला सब उत्सवक झांकी सेहो।

अंग्रेज हमरा लोकनि पर शासन केलैथ तैं आइ हिंदू, मुस्लिम मिलि अप्रत्यक्ष रूप सं हुनक शोषण क' रहल छथि। स्यात् अंग्रेजक अपेक्षा हिनके जनसंख्या हमरा बेसी लागल। साउथहाल लंदनक ओ हिस्सा थीक जाहिठाम हिंदू-मुसलमानक बोलबाला अछि। साउथहाल मे लागैत अछि जेना दिल्लीक कमला नगर, पटनाक न्यू मार्केट, सब्जी बाग आकि हथुआ मार्केट देखि रहल छी। सभ सामान फुटपाथ पर पसरल पंजाबी, गुजराती आकि पाकिस्तानी सभ अपन-अपन सामानक गुहारि लगबैत रहैत अछि, हिंदुस्तानी, पाकिस्तानीक एक सं एक रेस्तरां साउथहालक हिंदुस्तानी आबादी लेल एकटा खिस्सा प्रसिद्ध छैक-भारतीय पत्नी जा क' केबाड़ खोललीह, अंग्रेज डाकिया ठाढ़ छल-पत्नी ओहिठाम सं चीकरैत बजलीह-एजी कोई विदेशी आया है...

भारतक कोनो प्रांत मे हम सभ जाइत छी त समाजगत एकटा छोट-मोट मिथिला बसल देखाय पड़ैत अछि-दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, आसाम, एतेक धरि जे मद्रास मे सेहो। ओहिना इंगलैंडक किछेक स्थान छोड़ि सर्वत्र हिंदू-मुस्लमान बसल छैक। जांतक दुइ पाट जकां सटल-जुटल कतहु हिंदु मुसलमानक भेद-भाव नहि। स्यात् ओहिठाम भारत पाक जका राजनीतिज्ञमे वोटक आवश्यकता नै छैक। तै ओ चैन सं, एक दोसराक सुख दुखक हिस्सेदारी बनल जीवन बिता रहल छथि। मैनचेस्टर, लिस्टर, कावेन्ट्री, बरमिंघम, प्रेस्टन, लीवरपुल आदि कतेको शहर अछि जाहिठाम हिंदू-मुस्लिमक जनसंख्या भरल अछि। लंदनक साउथहाल तै छोट-छीन दिल्लीए थीक आकि छोट-छीन लाहौर। ■

अमेरिका : प्रवास आ भ्रमण

✍ रेवतीरमण झा



पेशा-सेवा निवृत प्रबंधक (प्रशासन) एल आइ सी शैक्षणिक योग्यता: बीएससी (आनर्स), एल एल बी, पीजी डिप्लोमा इन लाइब्रेरी साइंस। अभिरुचि: अध्ययन, लेखन, संगीत आ यात्रा। प्रकाशन: मैथिली आओर हिन्दी पत्रिका मे कविता, कथा, एकांकी, निबंध, संस्मरण आदि प्रकाशित। एक मैथिली नाटक प्रकाशित (1983 ई.) अन्य गतिविधि: उपाध्यक्ष, मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनी। प्रकाशित कृति: मनोरथ (नाटक), मैना (उपन्यास), प्रकाशनाधीन : टिकुला (कथा संग्रह), छात्र जीवनहि मे मिथिला मिहिर पत्रिका मे आलेख, निबंध आदि लिखैत छलाह।

मनुक्ख स्वभावे सं भ्रमणशील प्राणी अछि। मानव सभ्यताक विकासो त' भ्रमणे पर आधारित अछि। कहल जाइत अछि जे किछु घुमंतू मनुक्ख सभ भ्रमण करैत सिन्धु नदीक कात मे आबिक डेरा खसा देलनि। एहिठाम सं सिंधुघाटी सभ्यता विकसित भेल आ ओ सभ सिन्धु कहबय लगलाह। कालांतर मे सिंधु शब्द हिन्दु बनि गेल। फेर हिन्दु सं आजुक हिन्दुस्तान। मिथिलाक विषय मे सएह कहल जाइत अछि। आर्यक एकटा विदेह शाखा सरस्वती तट सं चलि पूर्व दिशा मे विदा भेलाह। गंडकी तट पर आबि रुकलाह। एकर आगू सबतरि पांक आ पानिये पानि छल। मुदा ओ सभ हिया नहि हारलनि। कहल जाइत अछि जे यज्ञादि द्वारा पानि के सोखैत गेलाह आ आगू बढ़ैत गेलाह। किंवदंती जे होइ, मुदा ओ सभ अपन श्रमशक्तिक बलें एहि क्षेत्र के वासभूमि बनौलनि। ओ सब पूर्व मे कोशी आ महानंदाक क्षेत्र तक बढ़ि गेलाह। दक्षिण मे गंगो के ओहिपार तक। फेर एहि क्षेत्र पर एक विशाल साम्राज्य स्थापित भेल, जे विदेह कहाओल। पछाति यैह तीरभुक्ति आ मिथिलाक नाम सं प्रसिद्ध भेल।

महाभारत मे मत्स्य प्रदेशक चर्चा भेल अछि। एतय के राजा विराट छलाह। ओ महान पराक्रमी आ बलवान राजा छलाह आ महाभारत युद्ध मे पाण्डव पक्ष मे लड़ैत अपन तीन पुत्र सहित वीरगति प्राप्त कयने छलाह। हिनके पुत्री उत्तरा सं अर्जुन पुत्र वीर अभिमन्युक विवाह भेल छल। पाण्डव अपन एक बरखक गुप्तवास मे राजा विराटेक एहिठाम नाम बदलि क' रहल छलाह। उत्तराक गर्भ सं उत्पन्न पुत्र परीक्षित द्वापरक अंतिम राजा भेलाह। अस्तु, मिथिला रामायण काल टामे नहि, महाभारतो काल मे प्रसिद्ध छल। मत्स्य प्रदेश नाम सं ज्ञात होइत अछि जे मिथिला जनसंख्या, धन सं संपन्न राज्य छल।

इहो कहल जाइत अछि जे एहि क्षेत्र मे किरात, थारू, भार आदि जनजाति निवास करैत छल। मधुबनीक विषय मे कहल जाइत अछि जे एतय सघन वन छल आ मधु पाओल जाइत छल। जनजातिक किछु भाषा, अखनहु नेपाल, चंपारण आ पूर्णिया क्षेत्र मे पाओल जाइत अछि। पश्चिम चंपारणक 'थारूहट' त' थारूएक नाम पर अछि। थारू सभ कृषि आ पशुपालन मे निपुण छल त' किरात आखेट आ युद्ध मे। किरात सभ नेपाल मे राज्य विस्तार कयलनि।

एहिना अमेरिकाक विषय मे सेहो कहल जाइत अछि जे प्रशांत महासागर आ अटलांटिक महासागरक मध्य अवस्थित विभिन्न द्वीप सभ पर विभिन्न जनजाति निवास करैत छल। 'जंबू द्वीपे भारत खंडे' जकां अमेरिका सेहो दू महासागर प्रशांत आ अटलांटिक के बीच अवस्थित अछि। एकर नक्शा भारतक नक्शा सं मिलैत अछि। दोसर जे नाक-नक्श सं अमेरिकाक मूल निवासी भारतीय लगै छल। संग्रहालय सभ सं प्राप्त जनतब केर अनुसार मूल अमेरिकन महिला हाथ मे चूड़ी आ माथ मे सिन्नूर धारण करैत छलीह। कृषि आ आखेट ओकर मुख्य पेशा छल। तैं कोलंबस के भ्रम होयब स्वाभविक छल जे ओ इंडिया पहुंच गेल। ओ अपन दस बरखक समुद्री यात्रा मे तीन बेर अमेरिका पहुंचल। मुदा तीनू बेर ओ एकरा इंडिया

संपर्क : जगतारणि (सदन), केनाल रोड, आदर्शनगर कोलोनी, मधुबनी-847211
ईमेल : rr.jha1958@gmail.com

बुझैत रहल। तैं ओ अमेरिकाक मूलवासी के इंडियन कहैत रहल। ओना त' ओ सभ यूरोपियन समुद्र मे आ यूरोपियन द्वारा आयातित बीमारी सं ओरान भ' गेल। मुदा जे बांचल अछि ओकरा अखनहु इंडियन अमेरिकन कहल जाइत अछि। ओ अखन एहिनाम सं अमेरिकी संविधान मे एहिनामक नागरिक समूह अछि। आब ओ गारेकर यूरोपियन अमेरिकन आ करिक्का अफ्रीकन अमेरिका जकां मुख्यधारा मे जुड़ि गेल अछि। अमेरिकाक एक राज्य इंडियाना आ ओकरे शहर इंडियाना पोलिस ओही मूल अमेरिकन के नाम पर अछि।

बचपन सं जाहि अमेरिका केर विषय मे सुनैत अयलहुं अछि, ओकरा बुझबाक सपना साकार भेल 21 अगस्त 2019 कें। रात्रिक डेढ़ बजे एयर फ्रांसक विमान सं बैंगलुरु हवाई अड्डा सं उड़ान भरलहुं। भोर मे पेरिस आ फेर ओतय सं दोसर विमान सं सांझ मे अमेरिकाक अटलांटा। फेर अमेरिकाक घरेलू विमान डेल्टा एयर अरकंसास सं राज्यक बेन्टनविल, यैह हमर गंतव्य छल। बेन्टनविल दुनियाक सबस पैघ प्राइवेट कंपनी वालमार्टक मुख्यालय अछि। एहिठाम आओर कैकटा भारतीय कंपनीक अपन कार्यालय अछि। अनेक भारतीय इंजीनियर एतय कार्यरत छथि। खास क' दक्षिण भारतीय बेसी। एकटा विशाल श्रीकृष्ण मंदिर बनौने छथि भारतीय सभ। कृष्ण जन्माष्टमी दिन बड़का उत्सव छल। विश्वक प्रथम गीता स्तूपक उद्घाटन मे भारतीय परिधान मे हजारो भारतीय मूलक लोक उपस्थित छल। हमरो एहि मे सौभाग्य भेटल सम्मिलित होयबाक। लगे मे अछि फेटविल। एहिठाम अरकंसास विश्वविद्यालय अछि। देश-विदेश सं लोक एहिठाम उच्च शिक्षा ग्रहण करै लय अबैये। अमेरिकाक भूतपूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन एहि विश्वविद्यालय मे विधि के प्राध्यापक छलाह। हिलेरी क्लिंटन सं बियाह एहीठामक आवास पर भेल छलनि। ओहो एही विश्वविद्यालय मे प्राध्यापिका छलीह। हुनक आवास के आब 'क्लिंटन हाउस' म्यूजियम बना देल गेल अछि। हुनक किचेन, डाइनिंग टेबुल, बेडरूम आदि देखि रोमांचित भेलहुं।

जंगल, पहाड़, घाटी, नदी, झील आदि केर बीच बेन्टनविल मे एक सप्ताह रहलाक बाद चललहुं केलिफोर्निया दिस। सड़क मार्ग सं मिसौरी राज्यक कंसास सिटी। फेर ओतय सं घरेलू विमानसं लॉस एंजिल्स। रात्रि विश्राम होटल मे कयलाक बाद दोसर दिन भाड़ाक कार सं चललहुं सेन फ्रांसिस्कोक लेल। लगभग नौ घंटाक सफर के बाद पहुंचलहुं सेन फ्रांसिस्को। रास्ता मे एक तरफ ऊंच-ऊंच पहाड़ आ दोसर तरफ प्रशांत महासागरक अनंत जलराशि। पहाड़ पर अंगूरक बगान आ ग्रीन हाउसक शृंखला एक नैसर्गिक दृश्य उपस्थित करै छल। दोसर दिन गेलहुं जहाज सं अलकट्राज द्वीप। एहिठाम विशाल जेल संग्रहालय अछि। अमेरिकाक खतरनाक सं खतरनाक अपराधी के एहीठाम राखल जाइत छल। पहिल बेर जेलक कोठरी देखलहुं आ कोना राखल जाइ छलै कैदी सभ कें। एहि द्वीप केर मूल अमेरिकन अर्थात् नेटिव इंडियन सभ उन्नैस मास तक हथियौने रहल। बाद मे सेनाक सहायता सं एकरा खाली कराओल गेल। मुदा मुख्य द्वार आ पानिक मीनार पर अखनहुं लिखल छै – 'इंडियन वेलकम' सेन फ्रांसिस्को मे अवस्थित एहि द्वीप पर समुद्री पक्षी 'सीगल' समूह मे आबि अंडा दैत अछि। ई मनोहारी दृश्य पर्यटक के आकर्षित करैये। सेन फ्रांसिस्को खाड़ी जतय प्रशांत महासागर मे मिलैत अछि, ओतय अछि एकटा विशाल पुल जकरा 'गोल्डेन गेट' कहल जाइत अछि। एकरा एशियाक द्वार सेहो कहि सकैत छियै। द्वितीय विश्वयुद्ध मे जापान पर चढ़ाई के लेल एतहिसं अमेरिकन सेना जाइत छल। चीन, कोरिया आदि देशक मालवाहक जहाज एतहि सं जाइयै।

होटल मे रात्रि विश्राम केर बाद दोसर दिन विदा भेलहुं नेवाडा राज्यक शहर लॉस वेगास के लेल। सेन फ्रांसिस्को शहर छोड़ैसं पहिने रस्ते मे पड़ल 'फेसबुक' केर ऑफिस। एकर परिसर मे घुमि रोमांचित भेलहुं। दुनियाक आइटी हब अछि सेन फ्रांसिस्को। एकरा सिलिकन वैली कहल जाइत छै। एहिठाम गूगल, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि विश्वविख्यात कंपनीक मुख्यालय अछि।

नेवाडा जाइत काल कैलिफोर्नियाक रास्ताक दूनुं कात दूर-दूर तक सेब, अनार, नाशपाती, नारंगी, अंगूर आदि के बगान मन कें गदगद क' रहल छल। फलक बड़का-बड़का घौंदा आ आकार देखि के मोन लालचि जाइत। नेवाडा रेगिस्तानी राज्य अछि। मुदा उज्जर-उज्जर मृत पहाड़ एक अद्भुत दृश्य उपस्थित करैत अछि। लॉस वेगास पहुंचि लागल जेना कोनो इन्द्रपुरी आ कि मायानगरी मे आबि गेल छी। होटल आ कैसिनो नगरी के नाम सं प्रसिद्ध ई शहर दुनिया भरिक अमीर आ रईस लोकक हेतु स्वर्ग अछि। जुआ एहिठाम वैध अछि। संगहि जतेक तरहक मानवीय मस्तीक साधन होइ छै, ओ सब अछि एहिठाम। विभिन्न देशक रेस्तरां सभ सजल अछि। एकसं एक शराब उपलब्ध। ओना अमेरिकन के बीच शराब एक पारिवारिक पेय पदार्थ अछि। सेहो बच्चा कें नहि देल जाइ छै।

दोसर दिन कार सं गेलहुं नेवाडा राज्यक सीमा पर बनल प्रसिद्ध हुबर डैम। जल प्रबंधन तकनीकक एक अद्भुत नमूना अछि ई डैम। रेगिस्तानी राज्य मे पानि के किल्लत त' रहिते छै। मुदा ई डैम संपूर्ण राज्य के जलापूर्ति करैत अछि। काफी गंहीर नदी मे डैम बनाकय पानि आ बिजलीक आपूर्ति अभियंताक कौशल के प्रदर्शित करैये।

अगिला दिन वापस अयलहुं केलिफोर्नियाक शहर लॉस एंजिल्स। एतय हॉलीवुड, पहाड़, थियेटर, फिल्म स्कूल, ट्रेनिंग सेटर आदि घुमैत गेलहुं समुद्रतट पर। प्रशांत महासागरक लगभग पांच किलोमीटरक एही बीच पर दुनियाक विभिन्न देश सं लोकसभ अबैये समुद्र स्नान आ सनबाथ आनंद लेबय लेल। डाल्फिन सब अछि एहिठाम। समुद्री पक्षी 'सीगल' सेहो वकध्यान लगौने रहैये समुद्रक लहरिक कछेर मे। समुद्रक लहरि सं ढुसि लैत लोक एक मनोरम दृश्य उपस्थित करैत अछि एहिठाम। लॉस एंजिल्स घुमि फेर घरेलू विमान सं अयलहुं कंसास सिटी आ ओतय सं पुनः अरकंसास राज्यक बेन्टनविल।

किछु दिन रहलहुं अहीठाम आ गमलहुं एतुक्का हवा आ पानि के। लगे मे एकटा अछि विद्यालय। एकदिस प्राथमिक आ दोसर दिन मध्य। ओकर चारूकात बनल

अछि वाकिंग पाथ। कॉलोनी सं निकलि चलि जाइ ओम्हरे प्रात:काल टहलै लय। भेट जाथि अमेरिकन सभ। केओ झटकिक चलैत, त कियो शनै: शनै: अपन पोसल कुकुर संगे। केओ ट्रॉली मे छोट बच्चा के नेने। सब चलैत अपन-अपन साइड दाहिना सं। जौं नजरि मिलि जाए त 'हाइ' वा 'गुड मार्निंग' कहनाइ नहि छोड़थि। एहिठाम गाड़ी सब रोड पर चलैयै दाहिने सं आ ड्राइवर बैसैयै वामा भाग मे। कोनो गाड़ी मे गियर नहि, सब ब्रेक आ एक्सेलेटरे सं चलैयै। सड़क खूब चाकर-चाकर। हर मोड़ आ क्रासिंग पर 'स्टॉप' केर बोर्ड। गाड़ीक गति 25 मील/घंटा सं 70 मील प्रति घंटाक बीचहि मे, पैदल वला के प्राथमिकता भेटै छै 'जेब्रा पथ' पर। पैदल वला के देखि सब गाड़ी ठमकि जाएत। कॉलोनी मे एके डिजाइन केर घर आ रंगो सभक एकहि। घरक सोझां तीस सं चालीस फीट तक जगह छोड़ल। स्टोर आ रेस्तरां सब लग सेहो बिघा मे जगह छोड़ल। पार्किंग के लेल बीमर डाइर घीचल। दिव्यांग लेल सभ सं लग मे जगह देल। अमेरिकाक सड़क, यातायात आ पार्किंग व्यवस्था देखि चकित छलहुं।

किछु दिनक बाद फेर दोसर चरण मे निकललहुं भ्रमण पर सड़क मार्गसं मिसौरी राज्यक नगर सेंट लुइस। ई मिसीसीपी नदीक कात मे अमेरिकाक एक प्राचीन शहर अछि। ई फ्रांसिसी द्वारा बसाओल गेल छल। एहिठामक कोर्ट म्युजियम आ आर्चगेट देखैवला अछि। सेंट लुइस कें अमेरिकाक पश्चिमी राज्यक प्रवेश द्वार कहल जाइत अछि। एतहि सं यूरोपियन सब माल उठाक ल' जाइ छल बेचैलय कैलिफोर्निया आ अन्य पश्चिमी राज्य सभ मे। मिसीसीपी नदीक ओहिपार इलिनॉस राज्य अछि। अही राज्यक छलाह अब्राहम लिंकन, जे दास प्रथा के खतम कयलनि आ अमेरिका के गृहयुद्ध सं बचौलनि। हुनक गृहनगर सं सेहो पास केलहुं। रास्ता मे दूर-दूर तक फार्म हाउस आ मकई एवं सोयाबिन के खेत भेटल। उत्पादन सं ल' क' विपणन तक सबटा आधुनिक तरीका फार्म हाउस मे। कतहु कोनो हल्ला नहि। गाड़ियो मे हार्न नहि बजैत देखलहुं जखन कि प्रति मिनट सैकड़ो गाड़ी सड़क सं पास करैयै।

दिन भरिक यात्राक बाद राति मे पहुंचलहुं अमेरिकाक एक खूबसूरत शहर शिकागो। रात्रि विश्राम के बाद भोरे घुमलहुं एहिठाम। गगनचुंबी विशाल टावरनुमा भवनक शहर आधुनिकताक एक अद्‌भुत नमूना अछि। चकविदोर लागि जाइ छै जखन शिकागो शहरक बीच मोटर नाव मे बैसि नहरि पास करैत एकर अवलोकन होइ छै। तहिना ग्रेट लेकक अपार जलराशि मन के मोहि लेत छै। गाइड सविस्तार सुना क' आओर रोमांचित क' दे छै। भाषा ओकर अमेरिकन अंग्रेजी रहे छै, मुदा ध्यान देला सं सब किछु बुझवा मे आबि जाइ छै। एकर बाद गेलहुं आर्ट म्युजियम। एहिमे एशिया आ यूरोप के आर्ट देखैवला अछि। सबसं रोमांचकारी क्षण छल विवेकानन्द गैलरी घुमब। उनैसम सदीक अंत मे जाहि मंच सं स्वामी विवेकानन्द विश्व धर्मसभा के संबोधित कयने रहथि ओ ओहिना संरक्षित कयल अछि। ओहि भवन मे पैर दैत एक नैसर्गिक आनंदक अनुभूति भेल। शिकागो सं घुरै सं पहिने शिकागोक मार्केट मे भारतीय रेस्तरां ताकि भोजन कयलहुं। ओहि मार्केट मे भारतीय आ पाकिस्तानीक दोकान सभ देखि अभिभूत भेलहुं। शिकागो सं वापस अरकंसासक बेन्टनविल अयलहुं, अपन प्रवास स्थान पर।

तेसर चरण मे निकललहुं अमेरिकाक एकदम दक्षिणी राज्य टेक्सास। अरकंसा सं टेक्सास जाएकाल मे एकटा राज्य पड़ै छै ओकलाहोमा। ई विकसित राज्य नहि अछि। मुदा सब किछु के सुविधा छै। एहि राज्यक महत्व एहि बात लेल छै जे जखन यूरोपियन सभ के मूल अमेरिकन (इंडियन अमेरिकन) सं बड़ खतरा होमय लगलै, त' ओकरा सभ लेल एक अलग राज्य आरक्षित क' देलक। एहि राज्य मे खेती त' नहि देखलहुं। मुदा बड़का-बड़का गोशाला (डेयरी फार्म) छल, जे सैकड़ो एकड़ मे पसरल छल। गाय सब चरिक पेट भरै छल। ओना ओकरा लेल पुआरक बंडल बना-बनाक जहां-तहां राखल छल। ओकलाहोमा टपिक' प्रवेश कयलहुं टेक्सास राज्य। एहि राज्यक दूटा प्रमुख शहर अछि ह्यूस्टन आ डलास। हमसभ डलास गेलहुं। एहीठाम भारतीय मूलक बहुत लोक छथि, जे सभ प्राइवेट कंपनी मे नौकरी या व्यवसाय करै छथि। तें एतय हिंदू मंदिर बहुत अछि। भारतीय रेस्तरां सब सेहो बहुत भेटल। हम सभ एकटा हनुमान मंदिर गेलहुं जे विशाल अछि आ अनेक एकड़ मे एकर परिसर अछि। सांझ मे आरती आ भोग मे शामिल भेलहु। टैक्सास राज्यक दोसर शहर ह्यूस्टन अछि, एतहु भारतीय मूलक लोक बहुत छथि। हालहि मे पचास हजारक भारी भीड़ कें भारतक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी संबोधित कयने छलाह। टैक्सास राज्य राजनीतिक रूप सं बहुत जागरूक अछि। एतहि के छलाह अमेरिकाक पूर्व राष्ट्रपति आइजेन हाबर, आ बुश दूनू बापुते। युवा राष्ट्रपति जे.एफ. कैनेडी के हत्या डलास मे भेल छल। ओ स्थल देखलहुं।

पश्चिम, पूर्व, मध्य दक्षिण राज्य सभ घुमलाक बाद चारिम आ अंतिम चरण मे बढ़लहुं उत्तर केर राज्य दिस। अर्थात् अमेरिकाक राजधानी वाशिंगटन डीसी आ अमेरिकाक सबसं पैघ शहर न्यूयार्क। बेन्टनविल सं कंसास सिटी सड़क मार्ग सं आ कंसास सिटी सं वाशिंगटन डीसी घरेलू विमान सं। रात्रि विश्राम होटल मे कयलाक बाद शहर घुमलहुं। जतय हर दस-बीस मिनट पर मेट्रो ट्रेन चलैत देखलहुं। ओना अमेरिका मे सुदूर क्षेत्र मे रेलवे लाइन अछि, मुदा ओ सिर्फ मालगाड़ीक हेतु। एकठाम सं दोसर ठाम जाए लेल कार या प्लेन। वाशिंगटन डीसी एक सुव्यवस्थित ढंग सं बसाओल शहर अछि। एकरा संयुक्त राज्य अमेरिकाक जनक आ प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन बसेने छथि। डिस्ट्रीक्ट ऑफ कोलंबिया मे पड़ैयै तैं एकर नाम मे डीसी लागल अछि। एहिठाम अमेरिकी राष्ट्रपतिक आवास आ कार्यालय अछि, जकरा व्हाइट हाउस कहल जाइत अछि। दुनियाक खूबसूरत भवन मे सं ई एक अछि। ई सघन सुरक्षा मे हरदम रहैयै। बाहरे सं एकर दिग्दर्शन कयलहुं। एतय संसद के 'कांग्रेस' कहल जाइ छै। संसद भवन के 'कैपिटल बिल्डिंग'। तत्कालीन राष्ट्रपति ट्रंप के विरुद्ध महाभियोग पर सुनबाहि चलैत छल तैं गहमागहमी छल। भोजनावकाश छलै, तैं सांसद सभ

कारी-कारी कार मे आबैत जाइत छलाह। कार मे कारी शीशो लागल छल, तैं बाहर सं लोक के देखाइ नहि पड़ै छलै। परिसर मे घुमय पर रोक नहि छलै।

वाशिंगटन मे अफ्रीकी अमेरिकी सभक संख्या बेसी भेटल। टैक्सीक ड्राइवर, होटल सभतरि नारी-पुरुष दुनू। एकटा टैक्सीक ड्राइवर जे महिला छलीह, हमरा सभ के भारतीय बुझि उतरिके नमस्ते कहलक। टैक्सीक ड्राइवर सभ बहुत जानकार भेटल। भारत मे ओ गांधी जी के खूब चिन्हैयै। पहिल शहर भेटल जतय सं दोसर शहर जयबा लेल लक्जरी बस सेवा अछि। वाशिंगटन डीसी सं बस सं न्यूजर्सी सिटी गेलहुं। ओतहि होटल मे रात्रि विश्राम कयलहुं। न्यूजर्सी मे एक भारतीय रेस्तरां भेटल। ओतहि केन्द्र बना न्यूयार्क सिटी मेट्रो ट्रेन आ जल जहाज सं घुमलहुं। दरअसल न्यूयार्क आ न्यूजर्सी दुनू दू राज्य अछि। न्यूयार्क सिटी न्यूयार्क राज्य मे आ न्यूजर्सी सिटी न्यूजर्सी राज्य मे। दूनू सिटीक बीच मात्र एक नदीक फासला अछि। एहि पार न्यूजर्सी सिटी आ ओहि पार न्यूयार्क सिटी। वस्तुत: न्यूयार्क सिटी विभिन्न टापूक समूह अछि। अमेरिकाक सर्वाधिक जनसंख्या वाला शहर अछि न्यूयार्क सिटी। जनसंख्या घनत्व सेहो सर्वाधिक। अकाश के छुबैत भवन सभ। चकमक करैत बाजार। सैर सपाटा। आकर्षित करैयै ई विश्वक पैघ लोक सभ कें। फिल्मी हस्ती सभ अबै छथि विश्वक कोन-कोन सं एहिठाम शॉपिंग के लेल।

अटलांटिक महासागर के बीच द्वीप पर स्वतंत्रता देवी मूर्ति (स्टैचू ऑफ लिबर्टी) विश्वक सर्वाधिक दर्शनीय स्थल अछि। एकर पैर तक पहुंचबा लेल सीढ़ी आ लिफ्ट दुनू अछि। पैर सं मुकुट धरि पहुंचबा लेल स्टीलक घुमावदार सीढ़ी अछि, जेना राजनगरक कामाख्या मंदिर मे लोहाक सीढ़ी अछि। स्टॉक एक्सचेंज मार्केट मे धातुक बनओल एकटा बड़का सांढ सड़के पर राखल अछि। ओकर अण्डकोश छुबि फोटो खीचबै लय पर्यटक सभक लाइन लागल छल। हमसभ बाहरे सं फोटो खीचि वापस आबि गेलहुं।

न्यूयार्क सिटी केर उत्तरी सीमा दोसर देश कनाडा तक अछि। न्यूजर्सी सं सड़क मार्ग सं यात्राक कार सं चललहुं, नेयागरा सिटी। सात घंटाक यात्रा के बाद पहुंचलहुं नेयागरा। एकटा भारतीय रेस्तरां मे भारतीय भोजन क' होटल मे ठहरलहुं। भोरे नेयागरा फॉल देखाय गेलहुं। विभिन्न द्वीप सं अबैत पानि एहिठाम नदीक रूप ल' लैत अछि। पानिक तेजधार नेयागरा नदी मे खसैत अछि, से एक अनुपम दृश्य उपस्थित करैत अछि। एहिपार अमेरिका आ ओहिपार कनाडा। एहिपार सं कनाडाक घर, होटल, लोक आदि ओहिना देखाइयै। एक स्थान आ दू देश। ई सैलानी सभ के रोमांचित करैत अछि। नेयागरा अबैत काल सड़कक दुनू कात उज्जर-उज्जर बर्फक चादरि लगै छल। गाछ, वृक्ष आ पहाड़ सभ एकदम सफेद जेना दूध सं ढ़ौरल हो। कैकटा गाड़ीक बोनेट पर बर्फ जमि गेल छल। एहन ठंढ मे बच्चा सं बूढ़ धरि नेयागरा फॉलक आनंद लै लय आबैयै, जेना अपना देश सं लोक हिमाचल आ जम्मू कश्मीर जाइयै। एतेक बर्फबारीक बीच सड़क यातायात ओहिना के ओहिना। सरकार सतर्क रहैयै आ पहिने सं नोन छिटकय सड़क के अबाध रखैयै।

प्रशांत महासागरक कातेकाते बसल अमेरिकाक पश्चिमी राज्य कैलिफोर्निया, दक्षिण मे मैक्सिको देश सं लगल टैक्सास, पूर्व मे अटलांटिक महासागर के कातेकात बसल शहर वाशिंगटन आ न्यूयार्क तथा उत्तर मे कनाडाक सिमान सं सटल ई नेयागरा सिटी आबि संपूर्ण अमेरिकाक यात्रा पूरा भेल।

अपन अमेरिकी प्रवास मे जतेक ठाम घुमलहुं सभतरि सड़क मार्ग, यातायात व्यवस्था, पुलिसक चौकसी, साफ-सफाइ आ सामान्य नागरिक अनुशासन आ शिष्ट व्यवहार बड़ नीक लागल। कतहु चुंइ शब्द नहि। यत्र-तत्र दोकान दौड़िक टेम्पू रिक्शा नहि। स्टोर, रेस्तरां, पार्क, मार्केट सबतरि पार्किंग केर पर्याप्त व्यवस्था। आवासीय कालोनी सभ मे सभक घरक आगू मे पर्याप्त जगह छूटल। पैदल टहलय लेल सड़कक दूनू कात वाकिंग पाथ। वर्षाक पानि बहबाक हेतु ढलान। एक बूंद पानि नहि टिकत। सब जाकय नाला मे समाओत आ फेर ओ चलि जाएत झील मे। कतहु गंदगी नहि। सभक घरक आगू कचरा डिब्बा, जकरा नियमित रूप सं खाली करैयै नगरपालिका। घरक आगू मे घास आ जंगल नहि रहत। घासक कटाई केर भार घरक मालिक केर। भोरे पांच बजे उठि जाइयै एतय लोक। नाश्ता कयक छ: बजे सं अपन-अपन काज मे लागि जाएत। कार्यालय सभ आ व्यवसायिक प्रतिष्ठान सभ प्रात: आठ बजे खुलि जाएत। कार्यालय सब पांच बजे तक रहैयै। पक्का समय मे खुलत आ बंद हैते। ग्यारह बजे लंच टाइम होइयै। बहुत प्रगतिशील होइयै अमेरिकन सभ। कोनो काज मे लाज नहि। प्रगति के मोल छै। तें एक सफाईकर्मी कियैक ने हो ओकर अपन-अपन कार छै। अमेरिकन बच्चा के अपन काज करबाक शिक्षा शुरुए सं देल जाइछै। जेना अपन टिफीन बॉक्स अपने धोअब, अपन साइकिलक भांगठ अपने करब। दौड़ब, पहाड़ पर चढ़ब, हेलब आदि के प्रशिक्षण शुरूए सं। बच्चा सभ के किताबक बस्ताक बोझ नहि होइछै। ने होमवर्क के दबाव। स्कूल मे पढ़ाइ केर बाद आन चीज सभ मे समय दैयै एहिठामक धियापुता। इंटर तक नि:शुल्क शिक्षा छै। तैं अभिभावक पर आर्थिक बोझ बेसी नहि रहै छै। सभटा सरकारी स्कूल। प्राइवेट स्कूल नहि अछि एहिठाम। अंग्रेजी घरोक भाषा छै एहिठाम, तें कतहु भाषाक समस्या नहि होइ छै अमेरिकन बच्चा सभ कें। कुकुरक बड़ प्रेमी होइयै अमेरिकन। खास क' महिला बेसी। मनुक्खो सं बेसी सुविधा रहैयै ओकरा। बिछौना, सोफा, झुला, कुर्सी सब किछु ओकरा लेल अलग। एतेक धरि जे घरेलू विमानो मे ओकरा लेल सीट आ सीट बेल्ट के व्यवस्था।

अमेरिका मे सभतरि साफ-सुथरा शौचालयक व्यवस्था देखलहुं। हरदम ओकर सफाइ केर व्यवस्था सेहो। बूढ़-बूढ़ लोक सभ काज मे सक्रिय। केओ गरीब आ अमीर नहि बुझाएत। भीखमंगा तकनहुं नहि भेटल। एको दू घंटाक काज भेटै छै एतय। सेना आ श्रमिक के बड़ महत्व छै एहिठाम। देश सर्वोपरि छै अमेरिकन हेतु। सब किछु व्यापार सं जुड़ल अछि। शारीरिक बल आ श्रम के बल पर अमेरिका विश्वक सबसं शक्तिशाली देश अछि। ■

कोरोना सं उत्पन्न वर्तमान समस्या आ ओकर निदान

✍ अजीत झा



लेखकद्वय औद्योगिक विकास अध्ययन संस्थान (भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध परिषद् सं संबद्ध), नई दिल्ली मे सहायक प्राध्यापक छथि। आर्थिक विषय सभ पर नियमित शोध आलेख लिखैत छथि।

✍ सूर्या तिवारी



कोरोना सं उत्पन्न चुनौती दुनिया'क लगभग सब देश के प्रभावित कयलक अछि। एना बुझा रहल अछि जे पछिला आठ दशकमे एहि सं पैघ आ तेज कोनो आर्थिक मंदी नहि आयल हैत जे एहि तरहें जीवन (स्वास्थ्य) आ जीविकोपार्जन दुनू लेल गंभीर समस्या'क जननी हो। उत्पादन, आय आ रोजगार पर बहुत खराब प्रभाव पड़ल अछि। एहन कोनो छोट वा कि पैघ उद्योग-धंधा नहि अछि, जाहि पर एकर प्रभाव नहि पड़ल हो।

विश्व बैंक'क एकटा ताजा रिपोर्ट केर मुताबिक वैश्विक उत्पादनमे वर्ष 2020 मे 5.2 प्रतिशत गिरावट'क अनुमान अछि जखन कि भारत'क सकल घरेलू उत्पादमे एशियन डेवलपमेंट बैंक'क एकटा रिपार्ट केर मुताबिक 4.0 प्रतिशत गिरावट के अनुमान जताओल गेल अछि। एखन हालहिं एकटा आर रिपोर्ट केर आकलन अछि जे मौजूदा वित्तीय वर्षमे अर्थव्यवस्था'क सबटा सूचकांक निराशा पैदा करय वाला रहत। अंतरराष्ट्रीय श्रम संस्थान'क (आईएलओ) ताजा रिपोर्ट सं पता चलि रहल अछि जे समूचा विश्व'क 81 प्रतिशत श्रमबल (2.7 बिलियन) कोविड-19 केर संकट सं प्रत्यक्ष रूप सं प्रभावित भेल ह आ संगहि 93 प्रतिशत सं बेसी कार्यक्षेत्र लॉकडाउन सं प्रभावित सेहो रहल अछि। आर्थिक दृष्टिकोण सं एकर सबसं बेसी असर असंगठित आ प्रवासी मजदूर, जनिजाति आ युवा श्रम बल पर पड़ल अछि। भारतमे सेहो लाखो असंगठित श्रमबल, प्रवासी मजदूर आ छोटछीन व्यवसाय सब बहुत बेसी प्रभावित भेल अछि। शहरमे काज-धंधा केर बंद भ' गेला सं लाखो प्रवासी मजदूर सबके घर घुरबा लेल विवश होमय पड़ल।

शहरी क्षेत्र सबमे उत्पन्न भेल समस्या नहू-नहू गाम-घर कें सेहो अपन चपेटमे ल' लेलक आ ओतय सेहो स्वास्थ्य'क संगहि जीविकोपार्जन केर समस्या आर गंभीर भ' गेल अछि। लाखक लाख संख्यामे प्रवासी मजदूर सबकें वापिस घर घुरला सं स्थानीय स्तर पर लोक सबके उचित रोजगार भेटनाइ मोश्किल भ' रहल अछि। ओना त' केंद्र सरकार मनरेगा'क अंतर्गत होमय वला व्यय'क आवंटन बढ़ौलक अछि आ मजदूरी केर दरमे सेहो वृद्धि कयलक अछि, जकर सकारात्मक असर ग्रामीण इलाकामे रोजगार पर पड़ल अछि मुदा बेसी दिन खाली मनरेगा सन कार्यक्रम सं लोक सभ कें उचित रोजगार'क अवसर प्रदान करब मुश्किल हैत। केंद्र सरकार कोरोना'क तत्काल संकट सं निपटबाक लेल प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना केर तहत महिला, किसान आ निर्माण कार्यमे जुटल मजदूर सबहक लेल डीबीटी केर मार्फत कतेको किस्तमे राशि आ पीडीएस केर तहत मंगनीमे अन्न आदिक वितरण सेहो कयलक अछि। आत्मनिर्भर भारत'क अंतर्गत स्थानीय उत्पादन आ लघु उद्योग-धंधा'क बढ़ाबय पर बल देलक अछि, जकर एक हद तक सकारात्मक प्रभाव सेहो पड़ल अछि। मुदा बिहार सन गरीब आ ताहूमे मिथिलांचल सन आर्थिक दृष्टिकोण सं पिछड़ल क्षेत्रमे

संपर्क : अजीत झा, आईएसआईडी 4, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070, **मोबाइल :** 9868785471
ईमेल : ajitjha@isid.org.in, suryatewari@gmail.com

अनुवाद : रौशन कुमार झा

कोरोना एकटा गंभीर समस्या उत्पन्न क' देलक अछि। पछिला 15 सालमे ओना त' बिहारमे सकल घरेलू उत्पाद'क दरमे वृद्धि भेल अछि, मुदा एकरा बादो एतय सं पलायन'क दरमे वृद्धि देखल गेल अछि। एकरामे बेसी श्रमबल ओहेन अछि जे अपन क्षेत्रमे दक्षता आ क्षमता'क मोताबिक रोजगार पयबामे असमर्थ अछि। एकटा बड़का संख्या एहन लोकक अछि जिनका अपन आ परिवार'क भरनपोषण' लेल दोसर राज्यमे जयबा लेल विवश होमय पड़ैत अछि। ओना त पलायन सं संबंधित कोनो ताजा आंकड़ा एखन उपलब्ध नहि अछि, मुदा पिछला आंकड़ा सबसं ई पता चलैत अछि जे बिहार आ यूपी दू टा एहन प्रदेश अछि जतय सं दोसर राज्यमे सबसं बेसी पलायन होइत अछि। असगरे बिहार सं 14 प्रतिशत सं बेसी श्रमिक'क पलायन पिछला वर्षमे भेल अछि। ओना प्रवासन'क बहुत रास लाभ सेहो अछि जाहिमे सं एकटा भेटय वला विप्रेषण (Domestic Remittance) सं जुड़ल अछि। वर्ष 2007-08 मे एनएसएसओ (NSSO) केर पलायन सं संबंधित रिपोर्ट केर मोताबिक बिहार'क जीडीपीमे विप्रेषण'क हिस्सा 3.6 प्रतिशत छल जे कि अजुका समयमे बेसिये हैत।

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे बिहारमे सेहो कृषि केर तुलनामे गैरकृषि क्षेत्र केर उत्पादनमे योगदान पैघ अछि मुदा आइयो बिहारमे कृषि ग्रामीण व्यवस्था'क एकटा पैघ आधार अछि। चित्र-1मे एहि स्थिति केर नीक जकां बूझल जा सकैत अछि। मुदा कृषि पर भार एखन बहुत बेसी अछि।

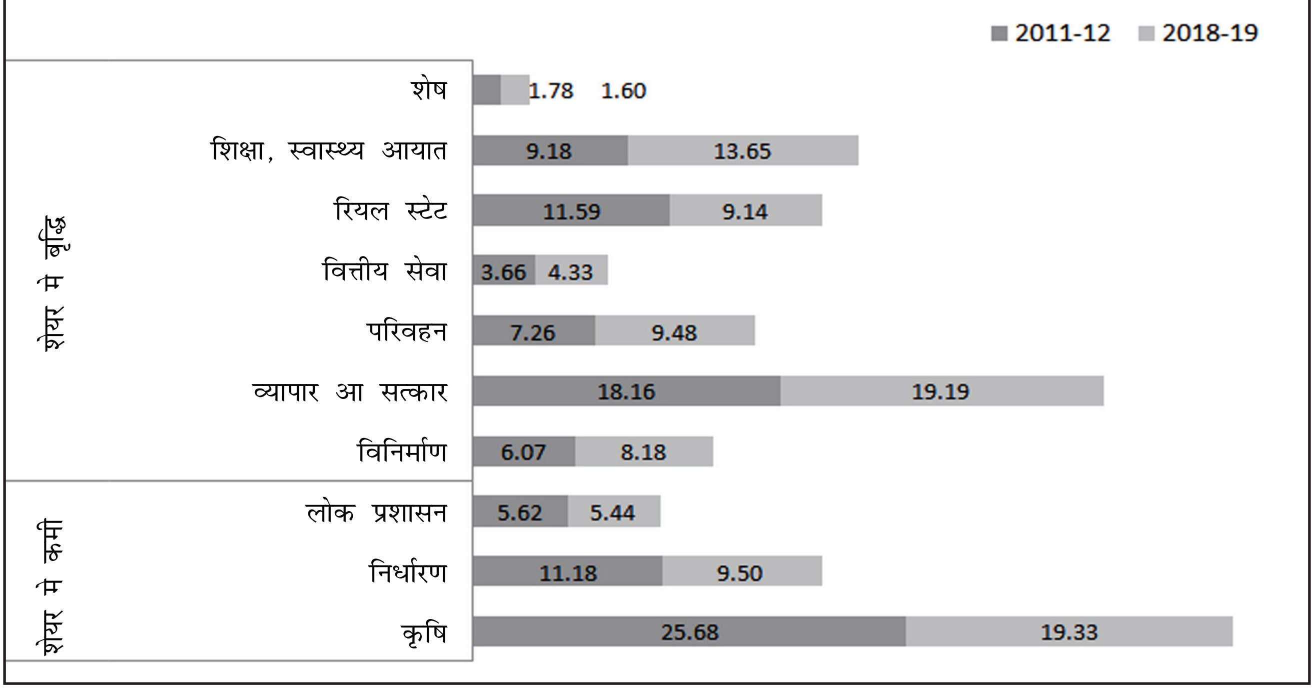
एनसीएईआर (NCAER) के 2010-11 मे भेल एकटा अध्ययन'क मोताबिक कुल विप्रेषणमे बिहार आ यूपी केर हिस्सा 60 प्रतिशत सं बेसी छल। ओना प्रवासी मजदूर सबसं भेटय वला एहि विप्रेषण'क एकटा बहुत पैघ हिस्सा कर्जा चुकाबयमे चलि जाइत अछि। मौजूदा समयमे मजदूर सबके आपस आबि गेला सं भेटय वला विप्रेषण पर सेहो प्रतिकूल प्रभाव पड़ल अछि, जाहि केर ई संभावना सेहो बढ़ल अछि कि गाम घरमे लोक-मजदूर कर्जक जालमे फंसत आ गरीबी सं समस्या आर बढ़त।

पछिला किछु वर्षक आंकड़ा सं ई ज्ञात होइत अछि कि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे बिहारमे सेहो कृषि केर तुलनामे गैरकृषि क्षेत्र केर उत्पादनमे योगदान पैघ अछि मुदा आइयो बिहारमे कृषि ग्रामीण व्यवस्था'क एकटा पैघ आधार अछि। चित्र-1मे एहि स्थिति केर नीक जकां बूझल जा सकैत अछि। मुदा कृषि पर भार एखन बहुत बेसी अछि। श्रमबल'क एकटा पैघ भाग एखनहु कृषि सं जुड़ल अछि त दोसर तरफ कृषि क्षेत्र'क उत्पादकता बहुत कम अछि।

उपरोक्त चित्र सं ई स्पष्ट अछि कि पछिला किछु वर्षमे जतय कृषि'क हिस्सा जीवीएमे कम भेल अछि ओतय ट्रांसपोर्ट, ट्रेड आ होटल तथा विनिर्माण'क हिस्सा बढ़ल अछि। मुदा एखनहु बिहारमे गैर-कृषि सं जुड़ल एहि क्षेत्र सबहक आधार बहुत कम अछि।

बेरोजगारी पहिनहि सं बिहारमे एकटा गंभीर समस्या केर रूपमे व्याप्त रहल अछि। 2017-18 मे पीएलएफएस (PLFS)क आंकड़ा केर मोताबिक बिहार'क ग्रामीण आ शहरी क्षेत्रमे बेरोजगारी'क दर क्रमशः 7.0 प्रतिशत आ 9.0 प्रतिशत छल। संगहि श्रम बल भागीदारी'क दर (LFPR) मे लगातार गिरावट परिलक्षित होइत रहल अछि, जे कि चित्र-2 सं स्पष्ट होइत अछि। एकरा मोताबिक वर्ष 2016 सं बिहारमे

चित्र-1 : प्रमुख क्षेत्रके योजित सकल मूल्य (जीवीए) मे बृद्धि आ कमी के प्रतिशत



एलएफ़पीआरमे शहरी आ ग्रामीण दुनू क्षेत्रमे गिरावट भेल अछि।

CMIE केर आंकड़ा क' आधार पर उपरोक्त चित्र सं ई स्पष्ट होइत अछि जे राष्ट्रीय स्तर पर मार्च आ अप्रैल महीनामे एलएफ़पीआर केर दरमे भारी गिरावट आयल अछि, जाहि सं स्पष्ट होइत अछि जे लाखक लाख केर संख्यामे लोक या त' काज सं बाहर भ' गेल मुदा बाद केर महीनामे दोबारा एलएफ़पीआर केर दरमे बढ़ोतरी सेहो दर्ज कयल गेल अछि। राष्ट्रीय स्तर पर मार्च महीनामे एलएफ़पीआर केर दर घटिक' 41.9 प्रतिशत सं अप्रैल महीनामे 35.6 प्रतिशत भ' गेल छल। बिहारमे सेहो एहने प्रतिकूल स्थिति रहल अछि। मुदा शुरुवात केर महीनामे एलएफ़पीआर केर दर 38 प्रतिशत सं ऊपरे छल। मई केर बाद एलएफ़पीआर केर दरमे बिहारमे बेसी गिरावट आयल अछि, जे कि राष्ट्रीय प्रवृति'क प्रतिकूल अछि।

मई केर महीनामे जतय राष्ट्रीय स्तर पर एलएफ़पीआर'क दरमे बढ़ोतरी भेल आ बेरोजगारी दरमे कमी आयल, ओतहि बिहारमे एलएफ़पीआर केर दरमे जून सं लगातार गिरावट दर्ज कयल गेल अछि। राष्ट्रीय स्तर पर संभवत: ई बदलाव गाम-घरक इलाकामे मनरेगासन कार्यक्रम पर बल देनाय आ नहू-नहू शहर सबमे सेहो कार्यक्षेत्र के खुजबा सं दोबारा लोक सबके कार्यक्षेत्रमे घुरबा'क दिस इंगित करैत अछि। मुदा जौं बिहार'क बात कयल जाय त उपरोक्त चित्र सं ई परिलक्षित होइत अछि जे एलएफ़पीआर केर दरमे लगातार गिरावट बनल अछि।

राष्ट्रीय स्तर पर बेरोजगारी के दर पछिला किछु दशकमे सबसं बेसी रहल अछि, जे कि 2017-18 मे PLFS केर आंकड़ा सं स्पष्ट होइत अछि। कोरोना के एहि कालमे ई समस्या आर गंभीर भ' गेल अछि। CMIE केर द्वारा प्रकाशित मासिक रोजगार संबंधी आंकड़ा सबहक विश्लेषण सं ई प्रतीत होइत अछि कि राष्ट्रीय स्तर पर मार्च महीनामे बेरोजगारी'क दर 8.7 प्रतिशत छल जे कि अप्रैल माहमे बढ़ि क' 23.5 प्रतिशत भ' गेल। जून महीना सं राष्ट्रीय स्तर पर बेरोजगारी दरमे कमी आयल अछि आ वर्तमानमे देशमे 8.3 प्रतिशत केर आस-पास अछि। बिहारमे मार्चमे बेरोजगारी'क दर 15.4 प्रतिशत छल जे अप्रैलमे बढ़िक' 46.6 प्रतिशत भ' गेल। जून सं बेरोजगारी दरमे गिरावट त' आयल अछि मुदा राष्ट्रीय औसत'क तुलनामे एखनहु बिहारमे बेरोजगारी'क दर (13.4 प्रतिशत) बहुत बेसी अछि (चित्र-3 देखू)।

पहिलुका उद्योग सब या त' मृतप्राय भ' चुकल अछि या फेर दयनीय स्थितिमे अछि। कामगार, किसान आ व्यवसायी सबकें सेहो वित्तीय ऋण नहीं भेटि पाबैत अछि। जे किछु संभावना अछियो ओकर सही ढंग सं दोहन आ पोषण नै भ' पाबि रहल अछि। 2001 केर जनगणना'क मोताबिक बिहार के जाहि जिला सं सबसं बेसी अंतराज्यीय पलायन होइत अछि ओहिमे सं सबसं बेसी जिला मिथिला क्षेत्र सं अबैत अछि।

जहां धरि बात मिथिला क्षेत्र'क अछि त' 2011 केर जनगणना'क मोताबिक बिहार राज्य'क करीब 47 प्रतिशत क्षेत्रफल आ 51 प्रतिशत जनसंख्या कें समाहित करैत अछि। बहुतायत क्षेत्र वर्तमान जनगणना'क अनुसार ग्रामीण क्षेत्र सं अबैत अछि। शहरीकरण केर प्रतिशत बहुत कम अछि आ बहुतो रास जिला बाढ़ि सं प्रभावित अछि। स्वास्थ्य सं संबंधित आंकड़ा सेहो प्रतिकूल अछि। पहिलुका उद्योग सब या त' मृतप्राय भ' चुकल अछि या फेर दयनीय स्थितिमे अछि। कामगार, किसान आ व्यवसायी सबकें सेहो वित्तीय ऋण नहीं भेटि पाबैत अछि। जे किछु संभावना अछियो ओकर सही ढंग सं दोहन आ पोषण नै भ' पाबि रहल अछि। 2001 केर जनगणना'क मोताबिक बिहार के जाहि जिला सं सबसं बेसी अंतराज्यीय पलायन होइत अछि ओहिमे सं सबसं बेसी जिला मिथिला क्षेत्र सं अबैत अछि। आजुक एहि संकटमे मिथिलांचलमे विकास आ रोजगार केर नव अवसर कें खोजब एकटा बहुत पैघ चुनौती अछि। एकरा लेल आवश्यक अछि के सरकार एहि क्षेत्रमे विकासक लेल सार्थक कदम उठाबय। आधारभूत संरचना जेना राष्ट्रीय राज्यमार्ग, रेलवे, विमानन आदि केर बढ़ावा दिए आ छोट एवं लघु उद्यम सबकें आ व्यवसाय सबकें भरपूर प्रोत्साहन देल जाय। एकरा लेल राज्य स्तर पर क्षेत्रीय विकास संगठन केर गठन क' स्थानीय विकास'क उचित मॉडल तैयार कयल जा सकैत अछि। गाम आ पंचायत केर स्तर पर ग्रामीण विकास मित्र केर गठन कयल जा सकैत अछि जे जिला आ गाम वा पंचायत केर बीच विकास सं जुड़ल संभावना'क प्रारूप तैयार क' सकैत अछि। आजुक स्थितिमे नै केवल मिथिलांचलमे बल्कि समूचा बिहारमे निजी क्षेत्र केर माध्यम सं निवेश'क संभावना कम अछि, एनामे राज्य सरकार कें आगू एबाक चाही आ जमीन सं जुड़ल विवाद केर नीक जकां सं सोझरेबाक व्यवस्था करबाक चाही। नियम आ कानून केर स्थिति कें चुस्त-दुरुस्त करबाक चाही, नव औद्योगिक नीति आ एकटा दीर्घकालिक रोजगार'क अवसर पैदा करबाक लेल विचार करबाक चाही। साहूकार सबहक चंगुल सं लोक सबकें बचेबाक लेल एकरा सं संबंधित कानून केर कठोर रूप सं लागू कयल जेबाक चाही। एखन हालमे मखानाक ल'क एकटा आश जागल अछि, आवश्यकता अछि जे मखाना केर उत्पादन सं जुड़ल लोक सबकें उचित समर्थन भेटय आ स्थानीय स्तरे पर एकरा सं तैयार होमय वला उत्पाद केर बढ़ावा देल जाय। कुल मिलाक' ई कहल जा सकैत अछि कि बिहार आ खासक' मिथिलांचलमे विकासक लेल एकटा एहन मॉडल'क आवश्यकता अछि जाहिमे सरकार कें अग्रणी भूमिका निभाबय पड़तै, एहन बल तैयार करय पड़तै जकरा बल पर हम बाहर सं निवेश कें आमंत्रित क' सकैत छी। नाहि त' जे क्षेत्र आ प्रदेश आइ विकासमे आगू अछि ओकर मोक़ाबला करब मोश्किल हैत। ■

दू पत्र : एक कैनवास पर दू सांस्कृतिक चित्रण

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा



लेखक मैथिली विभाग, सी.एम. साइंस कॉलेज, दरभंगा-846004 मे सहायक प्राध्यापक छथि। प्रकाशन : 2007 मे लघुकथा संग्रह - 'अहींकें कहै छी' आ 2018 मे कविता संग्रह -'स्वप्नमे इन्द्रधनुष' प्रकाशित। मैथिली आ हिन्दीक लव्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिका आ संग्रहमे अनेक रचना सभ प्रकाशित।

1968 मे प्रकाशित उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' केर उपन्यास 'दू पत्र' विषयगत आ शिल्पगत दृष्टिएं एकगोट विशिष्ट उपन्यास अछि। पत्रात्मक शैलीमे लिखित एहि उपन्यासक विषयवस्तु भारत और अमेरिका दुनू देशक संस्कृति, सभ्यता आ संस्कारक मध्य सम्प्रेषित भेल अछि।

एहि उपन्यासमे मात्र दूगोट पत्र अछि। कथामे कोनो ओझराहटि नहि अछि, सोझे-सोझ गप्प करैत अछि ई उपन्यास। आ ताहूसं पैघ गप्प ई जे ई दुनू पत्र महिले द्वारा लिखल गेल अछि। एकटा भारतीय परिवेशक महिला आ दोसर अमेरिकन परिवेशक महिला। भारतीय महिलाक प्रतिनिधित्व इन्दु देवी करैत छथि आ अमेरिकन परिवेशक प्रतिनिधित्व जेसिका करैत छथि। भारतीय महिला श्रीमती इन्दु देवी अपन स्वामीकें, जे हुनकासं फराक आइ नौ बरखसं अमेरिकामे रहैत छथि तिनका इन्दुदेवी जे पत्र लिखैत छथिन से उपन्यासक पहिल पत्र अछि।

एहि पत्रक अंग्रेजीमे अनुवाद क' क' इन्दुदेवीक ममियौत भाइ जिनक नाम रमेश छनि आ ओ किछु बरख पूर्व अमेरिकामे जाक' बसि गेल छला, से ओ अपन अमेरिकन महिला मित्रकें अपन पत्र संग पठा दैत छथि आ ओ अमेरिकन महिला द्वारा जे पत्रक उत्तर देल गेल अछि से उपन्यासक दोसर पत्र अछि। दूगोट पत्रक माध्यमसं एकगोट उपन्यासक रचनाक केनाइ अति कठिन कार्य अछि, जकरा व्यासजी सन रचनाकारे क' सकैत छथि। एहि उपन्यासमे मनोविश्लेषणात्मक शैलीक प्रयोग कएल गेल अछि। डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश एहि मादे कहैत छथि जे भारतीय आ पाश्चात्य दृष्टिकोणमे स्त्रीगणक सामाजिक ओ मानसिक स्थिति ओ आदर्शमे की अन्तर छैक, तकरा स्पष्ट करैत अन्ततः भारतीय ललनाक शालीनताक ओ श्रेष्ठताक बड़ सजीव प्रतिपादन भेल अछि। मानसिक द्वन्द्व ओ संघर्षक सूक्ष्म ओ कलात्मक आकलन एहि उपन्यासक विशेषता थिक।

एहि आलेखक माध्यमसं हम एतय दू पत्र उपन्यास मध्य अभिव्यक्त दू परिवेशक चर्च करबाक प्रयास करब जे दूनू पत्रक माध्यमे पाठकक सोझां उपस्थापित कएल गेल अछि।

पहिल पत्र जे इन्दुदेवी अपन स्वामीकें लिखैत छथिन तकर चर्चा पहिने करब। एहि पत्रमे भारतीय समाज आ विशेषतया मिथिलांचलक समाज आ रीति-रेवाज, व्यवहार प्रतिमानक उल्लेख भेटैत अछि जे उपन्यासकालमे त' प्रचलित छलहे, अद्यावधि अपन समाजमे व्याप्त अछि। अपन समाज जड़ताक शिकार अछि, ई फराक गप्प जे एहि जड़ताक विपरीत जे गतिशीलता अछि से कतेक सार्थक अछि, कतेक हितकारी अछि। मुदा विकासक गति एहि समाजमे तीव्र नहि अछि। पहिल पत्रमे मिथिलाक नारीक स्थिति-परिस्थितिक सम्यक् व्याख्या प्रस्तुत कएल गेल अछि। स्वामीक मोनमे पत्नीक प्रति कनेको धियान भाव अबैत अछि, त' पत्नी ओकरा अपन भाग्य बुझैत छथि। यद्यपि अपन सौभाग्य बुझबाक संग-संग हुनकामे ई आश्चर्य भाव सेहो प्रकट करैत अछि। स्त्रीगणक स्थितिक तुलना पत्रमे

संपर्क : सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, सीएम साइंस कॉलेज, दरभंगा-846004
मो.: 9835684869, ईमेल: *satyaprit69@gmail.com*

एकटा बान्हल जीव संग कएल गेल अछि जे चाहियो क' कतौ पड़ा नहि सकैत अछि। जाति-पांतिक ओझराहटिमे अपन समाज तेनाक' बान्हल अछि जे जातिक भीतर जाति ठाढ़ अछि। पुरुषार्थ पर आध्यात्म हावी अछि आ तें कनेको किछु भेला पर लोक भगवान दिस मुखापेक्षी होइत छथि। एक स्त्रीक सौन्दर्य दोसर स्त्रीक मोनमे अतिरिक्त सौन्दर्य भाव विकसित करैत अछि तकर झलकि हमरा एहि पत्रमे तखन भेटैत अछि जखन इन्दु देवी रेवाकें देखैत छथिन। मुदा स्त्री कतबो सुन्नरि होथि वा बौद्धिक होथि, गुणवती होथि मुदा कुलक मर्यादाक पालनक जिम्मेदारी हुनकहि माथ पर अबैत अछि। एतय स्त्री-पुरुषक मध्य साम्यता आ समन्वयक अभाव देखबामे अबैत अछि। एतेक धरि जे यदि पुरुष कलाविहीन होथि त' हुनक पत्नीक कला प्रेम सेहो कोनो अर्थ नहि रखैत अछि, हुनक कला प्रेम उपहासक वस्तु मात्र बनिक' रहि जाइत अछि। रेवाक पतिक ई कथन जे- बताहि कहांकें, पानि पड़ैत छैक त' एहिमे हिनका मधुर ध्वनि भेटैत छन्हि, एकरा प्रमाणित करबा लेल पर्याप्त अछि।

मिथिलाक वैवाहिक प्रणाली पत्रक माध्यमसं सेहो अभिव्यक्त भेल अछि जे सभाक माध्यमसं विवाह थिर होइत छल। यद्यपि समयक संग सभा प्रणाली समाप्ते जकां भ' गेल अछि मुदा ताहि अवधिमे ई प्रचलित छल आ प्राय: सभ विवाह सभेसं होइत छल। एहिमे काटर प्रथा सेहो प्रचलित छल। इन्दु देवीक विवाह सेहो सभेसं सम्पन्न भेल छल। आ हुनक पति जखन अपन प्रगतिशीलता देखार करबाक लेल इन्दु देवीकें संगे भोजन करबा लेल कहैत छथिन तखन इन्दुदेवीक मोन दूगोट विचारक मध्य दोलन करैत देखाइत अछि- की ई मात्र अन्धानुकरण थिक वा सभ्यताक लक्षण? एत' इन्दुदेवी अपन पतिसं बौद्धिक रूपें बेसी सशक्त बुझना जाइत छथि। पत्रमे इन्दुदेवी एकगोट आर मिथिलाक बेटीक कथा कहैत छथि जकर शालीनता ओकरा लेल अभिशाप बनि गेल छलै। ओकर पति ओकरासं ठांहि-पठांहि उत्तरक अपेक्षा करैत छला, मुदा मिथिलाक बेटी सभ किछु अछैतो एकटा जन्मजात शालीनताक वृत्तमे आबद्ध रहैत छथि आ तें ओ किछु नहि बजली आ हुनक पति एकरा दोख मानि अनघोल क' देलथिन। तकर बाद ओहि युवतीक स्वाभाविक मुस्की ओकर मुखसं सदाक लेल अलोपित भ' गेलै।

पत्रक माध्यमसं अनेको स्तर पर स्त्री-पुरुखक मध्य अपन समाजमे प्रचलित अन्तरकें स्वर देल गेल अछि। इन्दु देवी स्त्री छली, हुनक संतान किरण बालिका छली आ दुनू परिवार लेल उपेक्षिते रहली। एहि तरहें अपन समाजमे लिंग भेदक दृश्य जगजियार कएल गेल अछि। ई एतेक देखार भ' समाजमे ठाढ़ अछि जे स्त्रीगण पर्यन्तकें कन्या भेलाक पश्चात्

पत्रक माध्यमसं अनेको स्तर पर स्त्री-पुरुखक मध्य अपन समाजमे प्रचलित अन्तरकें स्वर देल गेल अछि। इन्दु देवी स्त्री छली, हुनक संतान किरण बालिका छली आ दुनू परिवार लेल उपेक्षिते रहली। एहि तरहें अपन समाजमे लिंग भेदक दृश्य जगजियार कएल गेल अछि।

हर्ष नहि होइत छनि। मुदा भारतीय नारी अपन जीबाक लेल कोनो ने कोनो बहन्ना ताकिए लैत छथि, जेना इन्दु देवी अपन पुत्र उत्पलक लेल जीबाक ओरिआओन क' लेने छली।

विज्ञानक मध्य प्रफुल्लित होइत समाज आ व्यक्तिक मूल भावमे कोनो अन्तर नहि देखाय दैत अछि। मानव हृदय विज्ञानसं संचालित ओ नियंत्रित नहि होइत अछि आ तें विज्ञानक अभूतपूर्व प्रगतिक अछैतो मानवक अन्तर्व्यथा कम नहि भेल छै।

मुदा एहि सकारात्मक आ नकारात्मक परिवेशक अछैतो भारतीय समाज, एकर संस्कृतिमे किछु एहन विशेषता त' अवश्य व्याप्त छै, जे पश्चिमी समाजकें आकर्षित करैत रहैत अछि। उपन्यासमे एहन अनेक व्यक्तित्वक चर्चा कएल गेल अछि जे अपन समाजकें त्यागि एहि समाजमे रमि गेला-गेली आ एतय एकगोट अलौकिक सुख प्राप्तिक साक्षी बनला-बनली।

आगां भारतीय समाजमे प्रेमकें कोन रूपमे देखल जाइत अछि, तकर उल्लेख भेटैत अछि। स्त्री-पुरुषक स्वाभाविक आ नैसर्गिक प्रेमकें एत' स्वीकृति प्राप्त नहि छै आ एकरा चरित्रसं जोड़िक' देखबाक प्रचलन अछि।

श्रीमती इन्दुदेवीक पत्र अपन समाजक प्राय: सभ पक्षकें छूबैत अछि, व्याख्यायित करैत अछि। स्त्रीक मनोविज्ञान नीक जकां उभरिक' सोझां अबैत अछि। स्त्रीलोकनिकें गहनाक प्रति प्रेम सर्वविदित अछि मुदा ई गहना पतिसं बढ़िक' नहि होइत अछि। एहि ठाम हमरा शेक्सपीयरक ई उक्ति अनायासे मोन पड़ि जाइत अछि जे ओ कहने छला जे स्त्री पहिने पति चाहैत छथि आ पतिक बाद सभकिछु। तहिना अपनो समाजमे पतिकें बारिक' स्त्रीलोकनिमे कोनो लालसा शेष नहि रहैत अछि। तहिना अपन समाजमे विच्छेदक प्रचलन कहियो नहि रहल अछि। स्त्री-पुरुष कहियो एक दोसरसं फराको भ' सकैत छथि, एकर कल्पनो अपन समाजमे नहि कएल जाइत अछि। मुदा जे कियो एहि भारतीय दृष्टिकोणसं विमुख रहैत छथि, एकरा बिसरि चुकल रहैत छथि हुनका लेल एकर कोनो मोल नहि अछि।

एहि तरहें व्यासजी दू पत्रमे पहिल पत्रक माध्यमसं भारतीय संस्कार, भारतीय संस्कृतिक विशद विवेचन केलनि अछि जे अपन आ समग्र भारतीय समाजक चिन्तनकें उपस्थापित करैत अछि।

एकर अतिरिक्त दोसर जे पत्र अछि ताहिमे एकटा फराके समाजक चित्रण भेटैत अछि। भारतीय समाजक सभ विशेषताकें कतौ भसियाक' एकटा अवांछित विशेषताकें स्वीकार करबाक छटपटाहटिक संग जीवन व्यतीत करैत इन्दु देवीक पति सुरेन्द्र विवाह सन विशिष्ट संस्कारकें कोनो मोजर देबाक लेल तैयार नहि देखाइत छथि। जेसिकाक एहि पत्रमे

एकर उल्लेख भेटैत अछि। अमेरिकन समाज आत्मकेन्द्रित समाज होइत अछि। हुनका सभक लेल वसुधैव कुटुम्बकमक अवधारणा कोनो मोल नहि रखैत अछि। ओ लोकनि अपनेमे मस्त रहैत छथि आ तें अनकर जीवन, अनकर बात बुझबाक उत्सुकता हुनकालोकनिमे नहि रहैत छनि। ओ लोकनि हृदयसं बेसी मस्तिष्कक सुनैत छथि, करैत छथि आ तें स्पष्टवक्ता होइत छथि आ कोनो स्थितिमे लाज-संकोचकें अपनासं फराक केने स्पष्ट रूपसं अपन बात राखि दैत छथि। दाम्पत्य जीवन धरिमे ई सभ एही रूपें प्रस्तुत होइत छथि। भावुकता हिनका लेल कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। ई भगवान पर अपन वैवाहिक सम्बन्धकें नहि छोड़ैत छथि अपितु एहि सम्बन्धक नीक-बेजाय स्वयं तय करैत छथि। हिनक समाजमे स्त्रीक स्वतंत्रता आ परतंत्रतामे पर्याप्त अन्तर दृष्टिगत होइत अछि। एहि परिवेशक स्त्रीलोकनि अपन पतिक निर्णय करबामे कनेको संकोच नहि करैत छथि आ जीवनक प्रत्येक निर्णयक मूलमे हिनका सभ लेल सर्भाइभल ऑफ द फिटेस्ट अति महत्वपूर्ण रहैत अछि। भारतीय सभ्यता-संस्कृतिसं ठीक विपरीत हिनक समाजक बालिका सभ लेल व्यॉयफ्रेन्ड बनायब सहज आ स्वाभाविक होइछ। एहि समाजमे व्याप्त अनेको तरहक कमजोरीक चर्चा कएल गेल अछि जेना द्रव्यक पाछां बताह होएब, तरुण तरुणीमे अमर्यादित यौनाकर्षण ओ एहि विषयमे असंयम, श्लीलहीनता आदि। चुम्बन जे भारतीय समाजमे मर्यादामे बान्हल रहैत अछि मुदा ओतुका समाजमे ई मात्र स्नेहक परिचायक आ तें चुम्बनक आदान-प्रदान एतय सहज आ स्वाभाविक होइछ। अपन समाजमे प्रेमकें सेहो एकगोट कर्त्तव्य मानल गेल अछि मुदा ओतय एकरा कर्त्तव्यक रूपमे नहि देखल जाइत अछि। तहिना ओतय धर्म ओ संस्कारमे, जन्म जन्मातरमे विश्वास करबाक विचार नहि होइछ।

मुदा जेसिका द्वारा लिखल गेल एहि पत्रक सूक्ष्म निरीक्षणमे हमरा ठाम-ठाम एहि मूल तत्वक दर्शन होइत अछि जे स्त्री खाहे ओ पूर्वी सभ्यतामे रहनिहारि होथि खाहे पश्चिमी सभ्यतामे, हुनक स्त्री तत्व सदैव एकरंगाहे रहैत अछि। जेसिका सुरेन्द्रकें प्रेम अवश्य करैत छथि मुदा हुनक मोनमे इहो लालसा लागल रहैत छनि जे सुरेन्द्र अपन माटि-पानि दिस घूरि जाथि आ अपन स्त्री आ बाल बच्चा संग अपन जीवन-यापन करथि।

एहि तरहें दू पत्रक माध्यमे रचनाकार दू भिन्न संस्कृतिक चित्र पारबामे पूर्ण सक्षम भेल छथि आ ताहूसं पैघ विशेषता ई जे एहि दुनू संस्कृतिक प्रतिनिधिक रूपमे नारियेकें चुनलथि। अर्थात् रचनाकार पुरुष आ नारी वा नारी आ पुरुषक माध्यमसं दूगोट भिन्न संस्कृतिक चित्रण नहि केने छथि। यदि एना करितथि त' संभवत: उपन्यासक संग न्याय नहि होइत किएक त' कोनो परिवेशकें देखबाक दृष्टि लैंगिक परिवर्तनक संग पृथक होयब, स्वाभाविक।

मुदा दू पत्रमे निरूपित जे संस्कृति समक्ष आएल अछि, ओहिमे समयक संग अनेक परिवर्तन भेल अछि। हम भूमंडलीकरण आ विकट बजारवादक दौरमे ठाढ़ छी आ अर्थव्यवस्थाक प्रभाव जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे पड़ैत अछि आ तें हमरालोकनि सेहो एहि सभसं प्रभावित भेलौं अछि। मुदा एहि उपन्यासक माध्यमसं दू गोट भिन्न संस्कृतिक मध्य स्थिति-परिस्थिति, पुरुष चेतना आ नारी विमर्शक दर्शन अवश्य होइत अछि जे एहि उपन्यासकें सर्वकालिक बनबैत अछि। ■

(पृष्ठ 19 केर शेष)

मिथिला म्युजियम : जापान मे मिथिलाक शान

विष्णु', 'महाभारत', 'जोड़ा मयुर' कचनी शैली मे बनल अछि।

बौआ देवीक 'सूर्य', 'नाग' रंगीन शैली मे बनल छन्हि। 'गाय संग कृष्ण'।

बिमला दत्तक 'मां काली', 'कोहबर', 'अष्टदल', 'बांस', 'कमलदह', 'अरिपन', 'बच्चाक जन्म पर मारकंडेयक आशीष छठियारक अरिपन', 'हाथीक जोड़', 'कृष्ण रास', 'गाछ', 'राधा कृष्ण', 'सरस्वती', 'लक्ष्मी-विष्णु', 'जयमाल', 'राम-सीता द्वारा केवट के नाह पर चढ़ल', 'मछुआरा', 'सीता जन्म सं विवाह धरि के लोकचित्र' संग्रहालयक शोभा छन्हि। हिनकर कचनी शैली लाल आ कारी सं बनल होइत छनि। एहि म्युजियममे मौजूद किछु कलाकृति सबहक इलेक्ट्रॉनिक संग्रहक बंबई स्थित 'सरमाया फाउंडेशन' ऑनलाइन प्रदर्शनी सेहो हालमे आयोजित कयलक अछि।

मिथिला म्युजियममे मिथिलाक 2,000 सं वेशी कलाकृति सभ संकलित अछि। एहिमे सं तीन-चारि सै चित्रक त मिथिलाक चित्रकार सभ जापान जा क' ओतय म्युजियम मे रहिक बनौले छथि। एकरा अतिरिक्त वर्ली पेंटिंग, टेराकोटा कलाकृति इत्यादि सेहो एहि म्युजियम मे स्थापित अछि। भारत सरकार सेहो सै सं बेशी कलाकृति एहि म्युजियम कें उपहार स्वरूप भेंट कयने अछि। बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार सहित भारत अनेकानेक नेता जापान जा मिथिला म्युजियम देख अएलाह मुदा मिथिलामे एहन कोनो कल्पना एखनो दूर-दूर धरि नहि।

एहि प्रकार हम देखैत छी जे विदेशी सब आबि हमर कला आ कलाकार के एतेक सम्मान देलनि आ हमर सबहक घरैया लूरि के विश्वस्तर पर पहुंचा देलनि। जं हम सब हुनका सबसं सीखि अपन कला, कलाकृति आ कलाकार के सम्मान दी, हुनक कला के संग्रहित क' संग्रहालय बनावी, प्रदर्शनीक व्यवस्था करि त' अखन अंतिम सांस गिनि रहल कतेक कला प्राणवत्त भ' मिथिलाक विकासक नव बाट फोलत। ■

संदर्भ

- www.mithila-museum.com/aboutmn/Eindex.html
- जापानक मिथिला म्युजियम जाक' चित्रकारी कयनिहारि कलाकार श्रीमती विमला दत्त जीक सं भेल वार्ता।

जड़ि सं जुड़ाव लेल औनाइत प्रवासी मैथिल

दुनिया भरिमे चतरल प्रवासी मैथिल लोकनि अपन प्रवास देशमे सेहो अपन माटि-पानि कें स्मरण करैत किछु-किछु गतिविधिमे लागल रहैत छथि। कतहु ई सभ संगठित भेल छथि त कतहु अनौपचारिक रूपमे सक्रिय छथि। कतहु ई लोकनि विद्यापति पर्व क रहल छथि, त कतहु पोथी वा पत्रिकाक प्रकाशन। 'सिमानक पार मिथिला' खंडमे एहने प्रयास सबहक विवरण प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। एहि तरहक आयोजनक सबहक किछु चित्र एहि तीरभुक्ति केर एहि अंकक भितरिया आवरण पृष्ठ पर देखल जा सकैछ।

- सम्पादक

रूसमे मिथिला, मैथिली आ मैथिल

✍ शिशिर कुमार झा



रूस जखन सोवियत संघ छल, ताहि समय सं मैथिल छात्र सरकारी सहायता सं मास्को सहित आनो शहर मे पढय लेल जाइत छलाह। विशेष क' रूस आ यूक्रेन के पैघ शहर मे पढाई करैत रहलाह। सम्पूर्ण देश मे 80-90 छात्रक चयन होइत छल। बीसम सदी मे 70 के दशक मे डा. जनार्दन झा, डा. अरूण कुमार झा, डा. विजय झा, डा. राजेश झा, डा. चन्द्र मोहन झा, डा. गोपालजी झा, श्री संजय झा के नाम भेटैत अछि, जे मिथिला-मैथिली सं जुड़ल छथि। ओतहि 1980-90 ई. के बीच मैथिल छात्रक संख्या (कतेको दर्जन) बहुत बेसी बढ़ल। प्रमुख रूप सं डा. फूलकांत झा, श्री चंदू झा, डा. अशोक झा, श्री जगजीत झा, ई. विद्यानन्द ठाकुर, डा. विजय कुमार यादव, डा. शैलेन्द्र झा, डा. पवन मिश्रा, ई. शिशिर कुमार झा, डा. प्रवीण झा, ई. अरुण मिश्रा, श्री रजनीकांत ठाकुर, डा. गोपाल झा, श्री राधाकृष्ण यादव, ई. मिहिर झा रहथि, जे एखनो मिथिला मैथिली सं कोनो ने कोनो तरहें जुड़ल छथि आ अपन सहयोग लेल तत्पर रहैत छथि। ई. विद्यानन्द ठाकुर सम्प्रति अखिल भारतीय मिथिला संघ केर राष्ट्रीय महासचिव आ ई. शिशिर कुमार झा अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति केर राष्ट्रीय प्रवक्ता आ मीडिया प्रभारी छथि।

1991 मे सोवियत संघ केर विघटन केर बाद तं हिन्दुस्तान सं पैसा द' पढ़य वाला केर बाढ़ि आबि गेलैक जाहि मे मिथिलाक छात्र सेहो पाछू नहिं रहथि। सन् 1995 अबैत अबैत मास्को सहित दोसरो शहरक बेसी संस्था मे मैथिल छात्रक नामांकन भ' गेल छल। एहि समय मैथिल छात्रक संख्या लगभग 250-300 छल। तें एक दोसर के जनबा लेल, मिलबा लेल, सहायता लेल एकटा मैथिल संस्था के जरूरत बुझना गेलैक। पढय मे मिथिलाक बेटी सभ सेहो पाछू नहिं रहथि। डा. चन्दा झा, डा. ममता ठाकुर (जे एखन अखिल भारतीय मिथिला संघक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष छथि), श्रीमति रंजू चौधरी, डा. डौली झा, ई. सीमा (कुमारी) झा, डा. ममता झा, ई. रंजू झा, श्रीमति श्वेता झा सहित कतेको नाम अछि। बहुत रास मैथिल छात्र त रूस-उक्रेन के लड़की सं बियाह केलैन। ओना बेसी विद्यार्थी पढ़ाई वा नौकरी वा व्यवसाय केर क्रममे मिथिला आबि बियाह केलैन आ कनियां के ओहि देश लय गेलाह। किछु मैथिल छात्र एतय पढ़ैत मैथिल छात्रा सं बियाह सेहो केलैन। तें स्त्री (मैथिल) के संख्या मे सेहो कमी नहिं छल।

डा. फूलकांत झा, डा. विजय कुमार यादव, ई. विद्यानन्द ठाकुर, कौशलेन्द्र झा, डा. सुमनजी झा सहित दर्जनभरि मैथिल के नेतृत्व मे मास्को स्थित हमर आवास पर एकटा बैसार भेल आ 'प्रवासी मैथिल संघ, मास्को' के गठन कएल गेल, सर्वसम्मति सं हमरा (ईंजीनियर शिशिर कुमार झा) संयोजक बनाओल गेल। तकर बाद सं सक्रिय मैथिल सभ केर बैसार कखनो किनको आवास पर वा कखनो किनको कार्यालय मे हुअ लागल। बाद मे नेपालक मैथिल सभ के सेहो एहि संस्था सं जोड़ल गेल। नेपाल सं डा. महादेव साह स्वर्णकार आ श्री किशोर झा केर नेतृत्व मे कएक दर्जन मैथिल एहि संस्था सं जुड़ि गेलाह। मैथिल सभ नौकरी मे, व्यवसाय मे वा पढ़ाई करैत अल्पकालीन नौकरी मे रहथि, तें संस्था के आर्थिक सहयोग के आश्वासन हिन्दुस्तान आ नेपाल दूनू देशक मैथिल सं भेटल।

1995 केर बैसार मे तय भेल जे एकटा

5-6 घंटा के मैथिल मिलन समारोह कएल जेबाक चाही। हम सभ मास्को नदी पर एकटा पनियाँ जहाज (250-300 लोकक) ठीक कय मिलन समारोह केलहुं, जतय सांस्कृतिक कार्यक्रम आ भोज-भात के व्यवस्था सेहो रखलहुं। एहने कार्यक्रम 1997 मे सेहो भेल, जाहि मे भारतीय दूतावास, मास्को के प्रतिनिधि आ मैथिल सभहक आनो राज्यक दोस्त-महीम सेहो भागीदार भेलाह। एकर दूटा जबरदस्त फायदा भेल। पहिलुक मैथिल सभ एक बैनर के नीचां संगठित भेला आ दोसर भारतीय दूतावास एवं भारतीय व्यापारीक संगें-संग आनो हिन्दुस्तानी के बीच मिथिला-मैथिली सं सब परिचित भेल। स्वभाविक रूपें मैथिलक दबदबा सेहो बढ़ल।

एहि बीच एकदिन डा. महादेव साह स्वर्णकार के निमंत्रण पर सपरिवार हुनका आवास पर गेल रही। डा. साह के कनियां श्रीमति रेणु साहु, पुरना बाजार, झंझारपुर के रहथि, जे हमर पित्ती प्रो. राधागोविन्द झा के शिष्या रहथि। तें डा. महादेव साह स्वर्णकार सं सम्बन्ध आओर प्रबल रहय। गप्पक क्रम मे हम कहलिअनि जे हमर विचार होइत अछि जे मिथिला के प्राचीन इतिहास पर सामग्री जुटा क' एकटा किताब मैथिली मे छपायल जाय-जाहि सं मैथिल विदेश मे रहितो व्यस्तता आ पाश्चात्य चकाचौंध के बीच मिथिला के सभ्यता आ संस्कृति सं जुड़ल रहथि। हमरा बात सं डा. साह सहमत भेला आ हमसभ सामग्री जुटाबय आ प्रकाशन लेल खोजबीन करय लगलहुं। पीपुल्स फ्राइन्सशिप यूनिवर्सिटी (पीएफयू) मास्को तैयार भेल, मुदा मैथिली मे छापय सं असमर्थता देखौलक। अंत मे ओ किताब रूसी भाषा मे छपल। लेखक डा. महादेव साह स्वर्णकार छलाह। पीएफयू एवं प्रवासी मैथिल संघ मास्को के संयुक्त नाम सं ई किताब छपल। किताबक नाम छल: 'मिथिला-आर्यक सबसं पुरान राज्य।' छपाइ आ बाईंडिंग के खर्चा पीएफयू देलक, बांकी खरचा हम स्वयं उठेलहुं, जे किताबो मे स्पष्ट रूपें लिखल अछि। एहि किताब कें भारतीय दूतावास, मास्को केर पुस्तकालय सहित मास्को केर 50 सं बेसी संस्थान मे अधिकृत रूपें स्थान देल गेल। मैथिल लोकनि सेहो एहि किताब सं अति प्रसन्न भेलाह। भारतीय दूतावास मास्को केर संस्कृति विभागक प्रथम काउंसलर कहलनि जे सीता मैयाक धरती मिथिलाक जानकारी "एहि पोथी मे भेटल, ताहि सं अनभिज्ञ रही। तें अहांक संस्था आब कोनो किताब छपाओत, ओकर खर्चा दूतावास उठाओत।" दोसर दिलचस्प गप्प ई जे किताबक 10 प्रति जखन दूतावास मास्को के पुस्तकालय मे जमा केलौं त' ओकर रसीद भेटल आ भुगतान सेहो। किएक त' प्रथम काउंसलर कहलनि जे बिना भुगतान के किताब ल' नहि सकैत छी आ दोसर अहांक किताब भारत सरकार के विदेश मंत्रालय मे दर्ज भ' गेल। दुखक गप्प यैह जे प्रवासी मैथिल संघ मास्को के कार्यकलाप शनैः शनैः कम होइत गेल। कारण सक्रिय मैथिल जेना ई. विद्यानन्द ठाकुर, डा. विजय कुमार, श्री रजनीकांत ठाकुर, डा. महादेव साह स्वर्णकार अपना-अपना देश वापस होमय लगलाह आ हमहूं मास्को सं बाहर दोसर शहर मे किछु वर्ष व्यवसाय क' हिन्दुस्तान वापिस आबि गेलहुं। बांकी सदस्यगण संस्थाक नेतृत्व नहि केलनि।

लेखक प्रवासी मैथिल संघ मास्को केर पूर्व संयोजक आ अखिल भारतीय मिथिला राज्य संघर्ष समिति (भारत) केर राष्ट्रीय प्रवक्ता छथि। संपर्क : 9266013065

स्कॉटलैंडमे बसैत अछि मिनी मिथिला

✍ सुप्रिया मिश्रा



स्कॉटलैंडमे कला आ संस्कृतिक एकटा समृद्ध विरासत छैक। किछु सालमे स्कॉटलैंडक जनसंख्याक संरचना अलग-अलग जगह सं आबय वला नवप्रवासी सबहक कारण बदलि गेल अछि। एहि सं लोक-संस्कृति, खान-पान आ जीवनशैलीमे बदलाव आयल अछि मुदा ई खाली स्कॉटलैंडक लोक सभहक जीवन समृद्ध बनयबाक काज कयलक अछि।

स्कॉटलैंडमे बिहार से आएल लगभग 100 गोट परिवार अछि जे स्कॉटलैंडमे बसल अछि। ओहिमे सं 15-20 परिवारक मूल मिथिला सं अछि। मुख्य रूप सं ई परिवार सभ चिकित्सा, इंजीनियरिंग आ शिक्षाविदक काज करैत अछि। ई परिवार सभ शहर आ कस्बाक बीचमे छिड़ियाअल अछि मुदा मुख्य रूप सं स्कॉटलैंडक राजधानी एडिनबर्ग आ स्कॉटलैंड केर सभसं पैघ शहर ग्लासगोमे रहैत अछि। छोट शहर वा परिषद सबमे दोसर लोक सब। मिथिला मूलक लोक मुख्य रूप सं बिहार सं छथि, मुदा नेपालक जनकपुर क्षेत्र सं सेहो किछु छथि।

ई देखब नीक अछि जे मिथिला सं लगभग 7500 किमी दूर रहलाक बादो ओ सभ अपन मूल अर्थात् मिथिला के नहि बिसरलाह अछि। हालांकि ओ मिथिला सं बहुत दूर रहैत छथि, तखनो ओ मैथिलीये भाषामे गप्प करैत छथि, ई देखब बहुत सोहनगर लगैत अछि। सबसं नीक दृश्य तखन होइत अछि जखन एहि प्रवासी सबहक माय-बाबू स्कॉटलैंडमे हुनका सं भेंट करैत छथि, जखन एकहि टा बातचीत के बीच

तीन गोट भाषा बाजल जाइत अछि : मैथिली, हिंदी, भारतीय लहजामे अंग्रेजी वा स्कॉटिश लहजामे अंग्रेजी। अहू सं नीक दृश्य तखन होइत अछि जखन परिवारक आन सदस्य जे कि अमेरिका सन देशमे रहैत छथि आ ओ स्कॉटलैंड जाइत छथि, स्कॉटलैंडमे जन्म लेबय बला नेना, अमेरिका में जन्म लेबय बला नेना, मिथिला सं स्कॉटलैंड आबय बला माय-बाबू, सब मैथिलीमे गप्प करैत छथि आ इंग्लिश केर अलग-अलग लहजामे सेहो।

मैथिलीमे नेना सबकें अंग्रेजीमे स्कॉटिश हिज्जे केर संग जवाब देबाक कोशिश करैत ज्यादातर दादीधनानी के देख मन आनंदित भ' जाइत छैक। एहि सबमे सबसं नीक बात ई अछि जे ई सभ बच्चा एखनहु अपन भाषा के बुझैत अछि आ टूटल फूटल मैथिली बाजि सकैत अछि। एकर श्रेय ओहि मां-बाबू केर जाइत अछि जे एखनहु अपने नेना सबहक संग मैथिलीमे गप्प करैत छथि जाहि सं कि ओ मैथिली बूझि सकय।

संस्कृति आ संगीत

सब मैथिल के अपन समृद्ध संस्कृति पर बहुत गर्व होईत छनिण। जतय कतहु अहां रहैत छी, पाहुन-परखधसंगी आ परिवार के प्रति ओकर आतिथ्य केर देखब कतेक नीक लागैत अछि। अहिना जाहि तरहें ओ सब लोकक आवभगत करैत छथि, जाहि तरहें ओ सब अपन खान-पान पर गर्व महसूस करैत छथि, जाहि तरहें पाबैन-तिहार मनबैत छथि, से देखब बहुत रमनगर होइत अछि। हालहिमे एकटा मैथिल कें एकटा आन बिहारी सं भेंट भेलनि। ओ ओहि परिवारक खूब आवभगत कयलनि। बादमे पता चलल जे ओ दरिभंगा सं छथि। एहन तरहक आवभगत के बाद एकटा आर मैथिल परिवार के चिनहब एक तरहें उत्सव जकां छल। एहि परिवार सबहक बीच सामान्य विवाहक गीत तखन सुनबा लेल भेटैत अछि जखन कि स्त्रीगण लोक आपसमे भेंट-घांट करैत छथि। जेना कि कोहबर गीत वा फेर शारदा सिन्हा के गीत।

स्कॉटलैंडमे कतेको ठाम देबाल पर मिथिला पेंटिंग्स लागल देखा जाइत छैक जकरा कि ओ सब गर्व सं प्रदर्शित करैत छथि। कतेको गोटे ओ अपन घर के अंदर बनेबाक कोशिश करैत छथि। माय-बाप के हरिदम कोशिश होइत छनि जे ओ विरासतमे भेटल अपन समृद्ध संस्कृति के बारेमे अपन बाल-बच्चा सबके जनतब देथि। ओ बच्चा सबके लोकक आवभगत करनाई सेहो सिखाबैत छथि। हुनका सबके खान-पान सं बेसी सिनेह रहैत छनि। स्कॉटलैंडमे सेहो कतेको घरमे दलिपुरी, भात-दालि-सन्ना, आलू के भूजिया, चुरा दही आ आम चुसैत मैथिल भेटि जेताह। एकटा मैथिल जे कि टोरंटो गेल छलाह, बतौलनि जे कोना ओ अपन एकटा मैथिल साथी सं भेंट करबाक लेल गेलाह जे कि टोरंटो शहरमे 22म तल्ला पर रहैत छलाह। घरक अंदर सब सदस्य शुद्ध मैथिली बाजैत छलाह आ खयबा लेल हुनका भात, दालि, आलू परोर के भुजिया आ अदौरी भेटलनि। हुनका लागलनि जे मिथिला सं हजारो कोस दूर ओ मिथिलेमे छथि। कोनो भी प्रयोजन पर ओ मैथिल व्यंजन अचार, अदौरी आ कुम्हरौरी के तरकारी के आनंद उठेबाक मौका नै छोड़ैत छलथि। लिट्टी चोखा सेहो बनाबैत छथि आ ओहेन संगी जे कि मैथिल नै छलैथ तिनका सबके दालि आ चाउरक पूरी परसैत छथि।

मिथिलाक लोक सब दीयाबाती आ दुर्गा पूजा मनाबैत छथि। तिलबा बनाबैत छथि। अपन बच्चा के उपनयन करबाक लेल भारत आपिस आबैत छथि। ओ सब परिवार आ संगी साथी सबहक संग मिलि एडिनबर्गमे छठि सेहो मनौलनि, जतय भारतक वाणिज्य दूतावास केर अधिकारी सेहो भाग लेलनि। छठि भव्य तरीका सं मनाओल गेल आ नेना भुटका सब एकरा देखलक। एकरामे कोनो संदेह नै कि मिथिला के लोक सबहक छैठ पूजामे अपार आस्था छनि।

बिहार दिवस आ स्कॉटलैंडमे मैथिल संस्कृतिक प्रदर्शन

पहिल बेर वर्ष 2018मे स्कॉटलैंडमे बिहार दिवस मनाओल गेल। बिहार दिवस स्कॉटलैंडमे स्थित पटना केर एकटा खनन गांवमे मनाओल गेल जे कि आयरशर काउंटी अछि। जी, अपनेक सही सुनलियै। स्कॉटलैंडमे सेहो पटना नामक गाम छैक। एकर बिहारक राजधानी पटना सं जुड़ाव छैक। सन 1744-66 ई केर बीचजॉन फुलार्टन बिहारमे तैनात ब्रिटिश सेनामे एकटा प्रमुख सेनापति के रूपमे काज कयलनि। हुनक परिवार के एहि दौरान बिहारक लोक सं बहुत बेसी आपकता भ' गेल। जॉन केर बेटा विलियम केर जन्म 1774 ईण्मे पटनामे भेल छल आ ओ अपना शुरुआती किछु वर्ष ओतहिये बितौलक। ओ 1802 ईण मे पूर्वी आयरशायरमे खनन व्यवसाय केर जिम्मेदारी सम्हारय लेल स्कॉटलैंड आपिस आयल। एहि क्षेत्रमे कोयला आ चूना-पाथर बहुत बेसी मात्रामे छल। अपन संपत्ति आ कोयला क्षेत्रमे काज करय वाला लोक सबके रहबाक लेल विलियम एतय घर सबहक निर्माण करौलक। एहि गामक नाम ओ अपन जन्म स्थान पटना के नाम पर राखलक।

बिहार दिवसक मध्य मिथिला के पाबैन सब प्रदर्शित कयल गेल, जाहिमे सामा-चकेवा सेहो शामिल छल। एहि पाबैन के दौरान मिथिला मूल के लोक सब एक-दोसर के जानबाक लेल एक संग जुटला। तखन सं लगातार ओ सब आपसमे भेंट-घांट करैत छथि। बिहार दिवसक अवसर पर दिलीपजी विद्यापतिक एकटा प्रसिद्ध गीत 'हे रौ ऊगना हमर भांग पिसना, कतय गेलें रुसना, कतेक तोरा ताकबौ रौ, एहि बोनमे' प्रस्तुत कएलन्हि। हुनकर बेटा ईशान एहि गीत पर पियानो बजौला। ओ अपन स्वरचित आ संगीतबद्ध कएल मैथिली गीत सेहो गौलनि। ओ स्थानीय कार्यक्रम सबमे मैथिली गीत लिखैत आ गाबैत छथि। ओ होली पर सेहो गीत प्रस्तुत कयलनि।

हुनकर कोशिश मिथिला के संस्कृति आ त्योहार सबिके देखायब जारी राखब अछि जेना कि झिझिया नृत्य, शारदा सिन्हा, मैथिली ठाकुर आ दिलीप मिश्रा द्वारा गाओल आ लिखल गीत के ओ सब कार्यक्रममे जरूर बजाबैत छथि। ओ हजारो कोश दूर रहैत छथि मुदा ओ मिथिला सं छथि, तें ई सब करब जारी रखताह। तखने त' कहल गेल अछि जे मिथिला के लोग चाहे कतहु रहथि, अपन खान-पान, संस्कृति आ छैठ पूजा के नै बिसरि सकैत छथि।

लेखिका दरिभंगा लग कमतौल गामक धिया छथि। प्रायः 20 बरख सं स्कॉटलैंडमे रहि रहल छथि। सुप्रिया अपन जड़ि सं बहुत बेसी जुड़ल छथि आ मैथिली गीत आ संस्कृति के बढ़ावा देबामे लागल रहैत छथि।

प्रवासी मिथिला पथिक और मिथिला सांस्कृतिक समिति, यूके

✍ **मिथिलेश झा**



अलग-अलग कालावधि मे मैथिल प्रवासी अंग्रेज़ी संगठित राष्ट्र के एहि द्वीप पर अबैत गेलाह। हर पीढ़ी के प्रवासी समक्ष एक भिन्न चुनौती छलै।

एक सामान्य प्रवासी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक आ आध्यात्मिक स्तर पर अपन स्वभाव आ आचरणवश विशिष्ट परिस्थिति के सामना करय छै।

प्रगति के चर्चा मे विस्थापन विषयक अवसाद के कथा हमेशा खोंयछा मे बान्हल चाउर जंका कोना मे दबल रह जाय छै।

रहनाय-खनाय के बस्ते छत और दालि-चौरके बाज़ार सं ल' के बच्चा के खातिर नीक स्कूल, किफ़ायती टिकाऊ मौसमी-कपड़ा, परिवहन आ चिकित्सा संबंधी जानकारी एक तात्कालिक आवश्यकता होय छै।

स्थान परिवर्तन भेला पर एक प्रवासी गृहणी सबसे बेसी परीक्षा देय छै। अपन देश, भाषा, संबंधी-परिवार आ एक जीवन सं दूर एक नवीन परिवेश मे सब तरहक सामंजस्य बनबैत-बनबैत एक प्रवासी गृहिणी सामान्यतः एक विशिष्ट मानसिक अवसाद केर सामना करैय छै। पुरुष प्रधान समाज इ सब कतय सं समझतै। आरंभिक काल मे हरेक प्रवासी, बड़ा बच्चा व बूढ़ा, एक साहसिक संघर्षक बादे परदेसक आवश्यकतानुसार जीवन मे परिवर्तन करैय मे कुछ सफल होय छै।

ई सब संघर्ष सं सहसा प्रवासी कवि मन छलकत कहे छै–

इंहा कहां उ कोयलक गूंज
इंहा कतय उ पान और चून
न ही उ पूर्वाक बयार
कखन जे देखब अपन
छठ तीज त्योहार।

परदेस प्रवास मे अपन समाज, संस्कृति आ भाषा सं दूरी केर पीड़ा संग अगला पीढ़ी कें इ सब सं परिचय करेबामे असमर्थता सं प्रत्येक अभिभावक दुखी रहैत अछि।

भारतीय परिवेश मे बच्चा किछु घर सं एवं किछु परिवेश सं शिक्षा ग्रहण करय छै। भौगोलिक दूरी आ स्कूली शैक्षणिक सत्र मे गर्मी छुट्टी जुलाई मे हेबाक कारण विद्यार्थी भारत मे पारिवारिक समारोह मे नियमित सम्मिलित नै भ' सकै छै। त पारिवेशिक शिक्षण सामान्यतः शून्य रहय के कारण से मिथिलाक विशेष पर्व-त्योहार, उपनयन- चूड़ाकरन व विवाह-द्विरागमन संबंधित समस्त विधि, गीत-संगीत एवं शब्दावली यथा अरिपन, चुमान, कोहबर, नैना जोगिन, परीक्षन, चतुर्थी, मधुश्रवणी, सामा चकेवा, कोजागरा इत्यादि सं अनिभिज्ञ रह जाय छै।

उम्मीद अछि कि मिथिला केर प्रबुद्ध शिल्पी अपन प्रतिभा सं हिंदी, अंग्रेज़ी और मैथिली मे मिथिला परिवेश पर आधारित चलचित्र, किताब व लघु-कथा/नाटिका नियमित लोकार्पित करथिन जे मिथिला के संस्कृति और भाषाक विकास मे विशेष सहयोगी हेतै।

मुदा मानवीय समस्या केर समाधान त' चिकित्सक ही करि सकै छै। भगवती कृपा सं मिथिला प्रवासी के एक साथ एक छत के निच्चा आनय केर पुनीत विचारक परिकल्पना किछु प्रबुद्ध प्रवासी मिथिलाक डॉक्टर सभक आपसी चर्चा मे शुरू भेल रहय। त' मिथिला सांस्कृतिक समिति यूके के स्थापना तत्कालीन मैथिला के कर्णधार प्रवासी चिकित्सकगण साल 2008 मे कयलनि। वर्तमान मैथिल प्रवासी पीढ़ी वास्ते अपन समाज, संस्कृति और भाषा के संरक्षण निमित पिछला 12 साल सं वार्षिक मिलन के सफल परम्परा चला रहल अछि।

आइ द्वितीय पीढ़ी के नवनिहाल सब पूर्णरूपेण एक्कर सब कार्यक्रम मे भाग ल' सफल बनवे जाय छै। एहि प्रयासक फलस्वरूप अंग्रेज़ी परिवेश मे बढ़ल बच्चा सब जे वीडिओ गेमक सिवाय किछु नय पूछे छै; ओ सब संगी के साथ विद्यापति जीवनी सं प्रेरित नाटिका मे अपन भरसक प्रयास सं मैथिली मे संवाद क' के अपन धरोहर के अप्रतिम छवि प्रस्तुत करै अछि।

एक मंच जे शनैः शनैः मिथिला के लुप्त भ' रहल धार के स्नेह और प्रेम के अंजलि सं नवीन पीढ़ीक अंतरात्मा के स्थापित करै के सफल प्रयास क' रहल अछि। एक विशुद्ध मैथिल वातावरण मे

सांस्कृतिक कार्यक्रम, चर्चा और स्वादिष्ट भोजन सह वार्षिक मिलन हर साल प्रत्येक सदस्य और परिवार के मानस पटल पर अमिट चिन्ह अंकित क' देल अछि।

आब मैथिली भाषा और साहित्य से परिचय हेतु नवपीढ़ी मे लेख और कला के प्रोत्साहन दै लेल "स्मारिका" केर माध्यम सं एक व्यावहारिक प्रयोग प्रतिपादित करल जा रहल अछि।

अब होली मिलन, दीवाली और छठ पर्व भी मिथिला परिवार यूके केर प्रांगण मे देखनाय संभव छै।

(लेखक मिथिला कल्चरल सोसायटी, यूके केर संस्थापक कोषाध्यक्ष अध्यक्ष छथि। यूके केर बॉस्टन, लिंकनशायर मे वर्ष 1995 सं मनोचिकित्सक रूप मे कार्य क' रहल छथि।)

बिझार (सिंगापुर) : सिंगापुरमे बिहार आ झारखंडक संगोर

✍ **अंजनी कुमार चौधरी**



सिंगापुर मैथिल वा मिथिला नाम सं त कोनो संस्था एखन धरि नहि अछि, मुदा सम्पूर्ण बिहार आ झारखण्ड सं आएल प्रवासी लोकनिक सम्मिलित संस्था 'बिझार' एहि ठाम सांस्कृतिक गतिविधि सबहक अगुआ बनल अछि। एहि गतिविधि सभमे मिथिला-मैथिली-मैथिल सं सम्बद्ध क्रियाकलाप सेहो रहैत अछि। सन 2003 केर बाद स बिझार संस्था सामूहिक रूप स तिला संक्रांति, होली आ दिवाली एहन प्रमुख पावनि सब आयोजित क रहल अछि। आपसी सम्पर्क मजगूत करबाक लेल अनेक इनडोर और आउटडोर खेल सब सेहो संस्था दिश सं आयोजित भ रहल अछि। ई संस्था बिहार आ झारखंड स आओल लोक सभ लेल सिंगापुर में हुनक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत केर संरक्षण करबाक प्रयास क रहल अछि। वर्तमान में, बिझार केर सूची मे 200 स अधिक सदस्य छथि। एकर अधिकांश सदस्य आईटी, वित्त, बैंकिंग, तेल और गैस आदि उद्योग मे कार्यरत छथि।

सिंगापुर मे बिझार केर सदस्य सभ 2013 स छठि पाबनिक आयोजन शुरू केलथि। पिछला साल (2019 मे) छठि पूजा मे 200 स बेशी परिवार शामिल भेल। साल 2014 स सिंगापुरक 'ईस्ट कोस्ट बीच' पर छठि मनाओल जा रहल अछि। हर साल एहि पाबनि मे शामिल भेनिहार व्रती लोकनिक संख्या बढ़ल जा रहल अछि। कोविड -19 सं उत्पन्न परिस्थितिमे एहि बरख छठि पूजाक आयोजन नहि कएल जा सकल, तथापि व्रती लोकनि घर पर वा अन्य स्थान सभ पर पूजा-पाठ केलथि।

चारिक-पांच बरख पहिने भरि बिझार सिंगापुरमे कवि सम्मेलन आदि सेहो आयोजित करैत छल। एहि कवि सम्मेलन सभमे मैथिली कविताक पाठ सेहो होइत छल। मैथिलीक अतिरिक्त हिंदी आ भोजपुरी मे कविता पाठ चलैत छल। साहित्यिक अभिरूचि वाला सदस्य लोकनि सिंगापुर सं अन्यत्र चलि गेलाह, ताहि केर बाद सं ई आयोजन स्थगित अछि। ऐखनहुं बिझार केर सांस्कृतिक कार्यक्रम सभ मे मैथिली आ भोजपुरी दुनूक उपस्थिति रहैत अछि। मिथिला चित्रकला के कलाकार स्वेता झा केर तितली आर्ट गैलरी सेहो सिंगापुर मे बहुत लोकप्रिय अछि। मुदा ई हुनक निधि उपक्रम अछि। सिंगापुर मे एखनो पूर्णतः मिथिला-मैथिली पर केंद्रित सामाजिक प्रयासक खगता अछि।

लेखक बिझार (सिंगापुर) केर प्रमुख कार्यकारिणी सदस्य छथि। ईमेल : *anjani.chaudhary@gmail.com*

न्यू जर्सी सं ओमान धरि विद्यापति समारोहक धूम

मिथिला-मैथिलीक सांस्कृतिक गतिविधिक पहिचान बनल विद्यापति समारोह आब विदेश धरि चतरि गेल अछि। विदेशमे रहनिहार मैथिल लोकनि अपना प्रवास देश सभमे एकर छिट-पुट आयोजन क' रहल छथि। एहि क्रममे अमेरिकाक न्यू जर्सी आ मस्कटक राजधानी ओमानमे भेल विद्यापति समारोह विशेष उल्लेखनीय अछि।

विगत 14 दिसंबर 2019 कें अमेरिका मे 'मैथिल्स ऑफ नॉर्थ अमेरिका' आ 'एसोसिएशन ऑफ नेपाल तराई इन अमेरिका' केर संयुक्त प्रयास स विद्यापति पर्व समारोह केर आयोजन भेल। ई नॉर्थ अमेरिका केर पहिल विद्यापति पर्व समारोह छल। एहि क्रममे विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, लेक्चर आ मिथिला स सम्बद्ध विभिन्न कला सबहक प्रदर्शन कएल गेल। मैथिली संगीत आ व्यंग्य स मनोरंजन भेल आ संगहि माछ-भात, डलना आ आन मैथिल पकवान सभ सेहो उपस्थित पाहुन लोकनि लेल प्रस्तुत कएल गेल। प्रसिद्ध गीतकार धीरेंद्र प्रेमर्षि आ रूपा झा केर जोड़ी एहि समारोह मे गीतनाद प्रस्तुत केलक। संगहि अमेरिका रहि रहल सुधा झा, अपराजिता झा, गौरी पांडेय, शैली झा, मीनाक्षी मिश्रा, पुष्पा मिश्रा, श्रवण झा आ आर्या झा संगीतमय प्रस्तुति कएलन्हि। नेन्ना-भुटका सभ लेल विद्यापतिक जीवन पर आधारित क्विज केर आयोजन सेहो भेल। समारोहक आयोजनमे आलोक कुमार, विजय सिंह, प्रभा झा मुकेश कर्ण, अनिल द्विवेदी

आदि प्रमुख भूमिका मे छलाह। एहि अवसर पर श्री हेमकांत मिश्र कें बीतल दू दशक स उत्तरी अमेरिका मे मिथिलाक संस्कृति आ सभ्यता केर प्रोत्साहन लेल पहिल मिथिला रत्न सम्मान स (मरण ोपरांत) सम्मानित कैल गेल।

प्रवासी मैथिल सबहक सक्रियतामे ओमान दशक राजधानी मस्कट केर नाम सेहो दर्ज भ गेल अछि। विगत 16 दिसम्बर 2019 कें ओहिठाम अलनंदा रिसोर्ट (बरका) मे मैथिल मिलन समारोह केर आयोजन "मैथिल परिवार ओमान" द्वारा भेल जाहिमे 100 सं बेशी मैथिल लोकनि एकत्र भेलाह। मस्कट मे एखन धरि दू बेर मैथिल मिलन समारोह केर आयोजनक सूचना अछि। विगत आयोजन मे रामचन्द्र झा, मनीष झा, निवेदिता झा, दिलिप कुमार झा, संजय झा, जगत आनंद झा आदि सक्रिय भूमिकामे छलाह। सञ्चालन अमरकांत झा द्वारा कएल गेल। ■

साहित्य रचना मे सेहो अछि उपस्थिति

प्रवासी मैथिल लोकनि अपन माटि-पानि कें स्मरण करैत साहित्य रचना आदिमे सेहो संलग्न रहलाह। रूसमे प्रवासी मैथिल संघ पीपुल्स फ्राइंशिप यूनिवर्सिटी केर मदति सं "मिथिला : आर्यक सबसं पुरान राज्य" नामक पोथी मैथिली भाषामे 1990 केर दशकक उत्तरार्धमे छापलक। आगू चलि क आन ठाम सेहो साहित्य रचना आ दस्तावेज संग्रह ठोस रूप लेलक। ब्रिटेन स्थित मिथिला कल्चरल सोसायटी आ किछ आन प्रवासी मैथिल संस्था सभ स्मारिका आदि प्रकाशित क रहल अछि।

एहि क्रममे कतारक राजधानी 'दोहा' सं प्रकाशित विशुद्ध साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका 'परदेशी आखर' विशेष रूप सं उल्लेखनीय अछि। एकर पहिल अंक जुलाई-सितम्बर 2016मे प्रकाशित भेल छल, जकर सम्पादक प्रणवकान्त झा (प्रणव नार्मदेय) आ सह-सम्पादक विन्देश्वर ठाकुर छलाह। एकरा हेल्प मधेशी नामक समाजिक संस्था आर्थिक रुपे सहयोग केने छल। धीरेन्द्र प्रेमर्षि सेहो एहि पत्रिका सं सलाहकार रूपें सम्बद्ध छलाह। परदेशी आसदक अंक विन्देश्वर ठाकुर, अब्दूर रज्जाक राईन आ बेचन महतो जीक सम्पादन मे छपल। पत्रिका 2019 धरि प्रकाशित भेल अछि। बाद केर अंक सभ लेल खर्च 'सांझक चौपाडि' परक जुटय बला सर्जकलोकनिकें सहयोगसं चलैत छल। अंतिम अंकमे सम्पादक मंडलमे विन्देश्वर ठाकुर आ राम अधीन 'सम्भव' जी छलथि। कोरोनाकालमे पत्रिका स्थगित अछि।

दोहा मे सांझुक चौपाड़ि सेहो मैथिलीक युवा साहित्यकार लोकनिक नीक जुटानक रूपें अमरल अछि। एतय युवा सभ बैसक साहित्यक चर्चा आ रचना पाठ करैत छथि। ■

(पृष्ठ 24 केर शेष)

अफ्रीकामे मैथिल युवा सभक लेल रोजगार आ अवसरक संभावना

भारतीय अंदाज बला केश विन्यास दुनिया केर आन देशक लोक पसिन्न करैत अछि। तैं सैलून सब मे काज केनिहार मैथिल के नीक बजार एतय भेटतनि।

9. कुशल श्रमिक

एतय स्थानीय लोक मे कुशलता केर ओ स्तर नै छै, जे भारतीय सबहक होइत छै। श्वेत कारीगर सब स्तरीय होइत अछि, मुदा ओकर मजूरी महंग होईत छै। तैं मैथिल कुशल श्रमिक के अत' मांगो बहुत छै आ पाई सेहो बेस कमाइत अछि।

10. स्वास्थ्य

उन्नत होइत जीवन स्तर आ शैली के देखैत, एक अरब सं बेसी के जनसंख्या वाला अफ्रीकी क्षेत्र मे स्वास्थ्य सेवा अपर्याप्त छै। एखन रोजाना अफ्रीका सं रोगी भारत आ आन देश रेफर कएल जा रहल छै।

ग्रामीण आबादी त' स्वास्थ्य सुविधा सं कोसो दूर छै। ई बात नै छै जे ओतुका सरकारी तंत्र प्रयासरत नै छै। एक त' विशाल परिक्षेत्र दोसर पूंजी के कमी आ तेसर निजी सेक्टर के व्यवसायी के उदासीनता, अछि स्वास्थ्य सेक्टर के सर्व सुलभ नै बना सकलै।

जे भी मैथिल के एहि सेक्टर मे दक्षता छनि, हुनका लेल अपार संभावना अफ्रीका मे छनि।

11. पर्यटन

पूरा अफ्रीका आइ पर्यटन के लेल जानल जाति अछि। अत' अभयारण्य, उद्यानक संग विलुप्त प्रजाति के जानवर, पक्षी आ जनजाति सब संरक्षित छै। दुनिया भरि सं सैलानी सब एतय भ्रमण कर' अबै छथि।

पाहुन परख के आगत- स्वागत त' मिथिला के संस्कृति छै। अही भावना सं जो मैथिल युवा पर्यटन व्यवसाय क्षेत्र मे काज करत, त' सफलता के संभावना बहुत बेशी रहतनि।

आइ अफ्रीका मे किछु देश, विदेशी के रोजगार करबाक लेल बहुत रास पाबंदी लगेने जा रहल अछि। ओ वैह क्षेत्र मे विदेशी कें रोजगार केर अनुमति दैत अछि, जाहि मे ओकरा स्थानीय कुशल श्रमिक वा विशेषज्ञ नै उपलब्ध छै। तखनो दुनिया केर आर देशक अपेक्षा अफ्रीका मे रोजगार करबाक नियम आ शर्त आसान छै।

आइ अफ्रीका मे किछु भाग छोड़ि दी, त' पूरा शांति आ अमन चैन छै। व्यवसाय आ रोजगारक लेल उर्वर भूमि अछि। सकारात्मक सोचक संग आब' बला मैथिल युवा के अफ्रीका मे स्वागत छनि। ■

माटिक नाम, माटि लेल समर्पण

विदेश जा क चाकरी केनाइ आजुक समयमे एकटा सामान्य गप भ गेल अछि मुदा सात समुन्द्र पार रहि जीवन-यापन संग अनेकानेक चुनौतीक बीच अपन माटि-पानि सं सम्बद्ध रहब आ अपन मातृभाषा-मातृभूमि लेल उद्यम करब आइयो एकटा असामान्य गप अछि। अनेक मैथिल एहन काजमे संलग्न भेलाह आ अपन मातृभूमि कें किछु ने किछु समर्पित कएलन्हि। एहि अध्याय मे एहने किछु मैथिल लोकनिक परिचय देल जा रहल अछि। संगहि, किछु एहन मैथिल, जे वैश्विक स्तर पर अपन फराक पहिचान स्थापित कयलन्हि, आ मिथिलाक नाम वैश्विक पटल पर जगजियार कयलन्हि। एहनो किछु लोकनिक विवरण एहि अध्यायमे समाहित अछि। ई सूची मात्र सांकेतिक अछि। बहुत रास एहन मैथिल हेताह जिनक जनतब हमरा सभ धरि पहुचल नहि वा कोनो कारण सं हुनक चर्चा एहि ठाम सम्भव नहि भेल, हुनका सभसं क्षमायाचना सहित ई पाठक लोकनिक ऊपर छोड़ल जा रहल अछि जे एहि सूची कें विस्तार कएल जाए, एहन व्यक्ति आ हुनक कीर्ति teerbhuktimaithili@gmail.com पर उपलब्ध कराओल जाए, जाहिसं भविष्यमे आर नीक आयोजन सम्भव होइ।

– सम्पादक

डॉ. रामस्वरूप महतो (17.1.1930–19.11.2006), बटहा, समस्तीपुर

समस्तीपुर जिलाक गाम बटहा। जाहि गाममे लगभग दू दशक पहिने धरि पकिया सड़क नहि पहुचल छल, प्राथमिक विद्यालय धरिक भवन कोनो ढंगक नहि छल, ताहि गाममे आइ जिलाक अग्रणी +2 विद्यालय अपन आभा पसारने अछि। सीबीएसई सं मान्यता प्राप्त एहि विद्यालयमे राज्य भरि सं विद्यार्थी आबैत अछि। दू दशकक यात्रा मे एहि विद्यालय सं शिक्षा पाबि दर्जनो इंजीनियर, डॉक्टर, आईटी प्रोफेशनल, प्रशासनिक/पुलिस अधिकारी, वैज्ञानिक आ मारिते रास आन विधाक अग्रणी लोक सभ देश-समाजक सेवामे तल्लीन छथि। महत्वपूर्ण ई जे एहि विशाल नर्सरीक नींव राखबाक लेल एकटा पेशेवर चिकित्सक सात समन्दर पार सं अयलाह। ई कथा अछि, सुन्दरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर केर संस्थापक डॉ. रामस्वरूप महतो जीक।

डॉ. महतो केर जन्म समस्तीपुर (तत्कालीन दरभंगा) जिलाक अंतर्गत रोसड़ाक समीप बटहा गाममे 17 जनवरी, 1930 कें भेल। एहि गाममे हुनक पालन-पोषण भेलनि। रामस्वरूप जखन दस बरखक भेलाह त, पिता राम किसुन महतो हुनका महीष चराब केर काज पर लगा देलन्हि। भैंस चराबय सं ओ पाछू नहि हटलाह मुदा शिक्षाक प्रति हुनक ललक अटूट छल। एक दिन ओ निश्चय कएलन्हि जे स्कूल जएबे करताह। बटहा गाम सं रोज आठ किलोमीटर पैदल चलि क ओ रोसड़ा हाइ स्कूल पढ़य लेल जाय छलाह। मेधा एहन तीक्ष्ण जे, 1948 मे ओहि स्कूल सं ओ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक पास कएलन्हि। तदनंतर साइंस कॉलेज, पटना सं आइएससी केलाह। जीव विज्ञान सं आइएससी पढलाक बाद मेडिकल केर पढ़ाइमे लागलाह। ओ 1956 मे दरभंगा मेडिकल कॉलेज सं एमबीबीएस आ 1959 मे बिहार विश्वविद्यालय सं एमएस केर डिग्री प्राप्त कएलन्हि। हुनक पहिल नियुक्ति तत्कालीन (अविभाजित) बिहार केर हजारीबाग (वर्तमान गिरिडीह) जिलाक पीरटांड प्रखंड मे 1957 मे सरकारी चिकित्सक रूपमे भेल। फेर रांची मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे 1961 मे एनाटॉमी केर व्याख्याता बहाल भेलाह। ओतहि ओ 1963 सं 1964 धरि हाउस ऑफिसर आ 1964 सं 1969 धरि रजिस्ट्रार रहलाह।

एतेक नीक चाकरीक बावजूद डॉ. महतोक ज्ञान पिपासा शांत नहि भेलन्हि। आर उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक उद्देश्य सं ओ 1970 मे मात्र तीन हजार रुपया ल क पनिया जहाज सं कठिन यात्रा क इंग्लैंड पहुंच गेलाह। ओतय एडिनबरा सं ओ एफआरसीएस डिग्री हासिल केलाह। एकरा बाद हुनक नियुक्ति ब्रिटेनक 'बाथ' शहरक रॉयल हॉस्पीटलमे नेत्र चिकित्सक पद पर भेल। ओतहि सं 1995 मे सेवा-निवृत्त भेलाह। विदेश प्रस्थान करबा सं पहिने डॉ. महतोक विवाह निर्मला देवी सं भेल छल आ एकटा बेटी (विनीता) सेहो छलीह मुदा लगातार विदेश रहबाक बाद ओ रॉयल हॉस्पीटलक नर्स मिस जेनेट सं सेहो वैवाहिक सूत्रमे आबद्ध भ गेलाह। ओतहि हुनका तीन गोट बेटी भेलीह। एक बेटी, नैना महतो, यदा-कदा बटहा आबैत रहलीह। नैना, सुशीला आ टुनी तीनू इंग्लैण्डहि मे रहय छथि।

अपन गाम स डॉक्टर महतो कें बड्ड लगाव रहल। अपन नेनपनक खिस्सा सभ ओ बाथ सिटीमे सेहो सहकर्मी चिकित्सक आ मित्र लोकनि कें सुनबैत छलाह। मित्र सभ सं 'बफैलो ब्वॉय' कहाबय मे हुनका

कोनो लाज-धाक नहि छल। तें, जखन ओ रिटायर भेलाह, त सहकर्मी लोकनि हुनका भैंस चरवाहाक धातु-निर्मित विशाल मूर्ति उपहारस्वरूप देलन्हि। विदेशमे भौतिक सुख-सुविधाक बीच 40 बरख धरि रहलाक बादो ओ जीवनक ऊषाकालमे अपन सर्वस्व ओहि भूमि लेल समर्पित करबाक निर्णय लेलन्हि जतय हुनक जन्म भेल आ शैशव स बाल्यावस्था धरि बीतल छल। रिटायर भेलाक बाद ओ अपन गाम अयलाह आ अपन सबटा संपत्ति अपन पिताक नाम स ट्रस्ट बना ओकरा समर्पित कय देलाह। एहि ट्रस्टक माध्यम स हुनक माता सुंदरी देवीक नाम पर सरस्वती विद्या मंदिर स्थापित भेल। एकर संचालन विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थानक माध्यम सं शुरू भेल।

डॉ. महतो केर किछु नजदीकी लोकनि हुनका स्कूलक स्थान पर अस्पताल बनेबाक राय देलन्हि किएक त, ओय काजमे बेशी लाभ हेबाक गुंजाइश छैक। मुदा डॉक्टर साहेब के कहब छल जे नीक स्कूल प्रतिभा सभ ले नर्सरी होते होइछ, तें गाममे नीक स्कूल हेबाक अवश्य चाही। डॉक्टर साहेबक समाज दृष्टि सेहो अद्भुत छल। ओ स्वयं पछुआएल जाति-वर्ग सं सम्बद्ध छलाह। विद्यालयक विभिन्न सेवामे ओ समाजक निर्धनतम वर्ग कें अवसर उपलब्ध करौलन्हि। एतय धरि जे, विद्यालयक छात्रवासक भनसाघरमे ओहि तमाम जाति सबहक लोक कर्मचारी रूपें राखल गेलाह जाहि जातिक छुअल पानि धरि समाजक बहुसंख्य वर्ग वर्जित मानय छल।

डॉ. महतो केर किछु नजदीकी लोकनि हुनका स्कूलक स्थान पर अस्पताल बनेबाक राय देलन्हि किएक त, ओय काजमे बेशी लाभ हेबाक गुंजाइश छैक। मुदा डॉक्टर साहेब के कहब छल जे नीक स्कूल प्रतिभा सभ ले नर्सरी होते होइछ, तें गाममे नीक स्कूल हेबाक अवश्य चाही।

जाधरि डॉक्टर साहेब जीवित छलाह प्रत्येक वर्ष ओ इंग्लैंड सं दू-एक अंग्रेज कें घुमाबय लेल बटहा आनय छलाह। ओ लोकनि भारत घुमैत छलाह, गाम देखैत छलाह, संगहि विद्यार्थी सभकें इंग्लैंड बला अंग्रेजी संग संग ओहि ठामक विविध जानकारी भेटैत छल। डॉक्टर साहेब कहैत छलाह "विदेश में लोग कहते हैं कि इंडिया इज ए कंट्री ऑफ़ डर्ट एंड डस्ट, मैं इन लोगों को दिखाना चाहता हूं कि यहां डर्ट और डस्ट के अलावा भी बहुत कुछ है।" हुनक निधन 19 नवम्बर 2006 कें भ गेल, मुदा हुनक स्वप्न नित्यप्रति जगजियार भ रहल अछि, विद्या मंदिरक विद्यार्थी लोकनि नित्य प्रति नव कीर्ति-पताका फहरा रहल छथि। आ से, देशहि धरि नहि, विदेश धरि सेहो। निश्चित्ते एक दिन बटहाक एहि माटि-पानि सं गढ़ल कोनो काय बात सिटी पहुंच डॉक्टर साहेबक आत्मा कें जुराबय बला सनेश देतैक।

साहित्यकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आ सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर केर आचार्य श्री विजय व्रत कंठ केर आलेख पर आधारित।

मोतीलाल ठाकुर (1942-18.06.2020), कोइलख, मधुबनी

प्रतिभाक सीमा कोनो सम्प्रदाय, कोनो जाति, कोनो वर्ग, कोनो क्षेत्र, सुसम्पन्नता वा विपन्नता, पढ़ल वा अनपढ़ पारिवारिक पृष्ठिभूमितक सीमिति नहिं रहैछ, ओ तं इच्छाशक्ति आ दृढ़संकल्पक बल पर, जेना पड़ती धरतीकें कोड़ि बट बृक्ष विशालकाय रूपमे बाट-बटोही तककें शीतल छाया प्रदान करैछ, ठीक ओहिना अपन प्रतिभा एवं लगनक बलपर कोनो व्यक्ति विद्या अर्जित कय समाजक सङ्ग देश-विदेशतक कोनो क्षेत्रमे अपन प्रतिभाक सदुपयोगसं, धन, प्रतिष्ठा कमा सकैत अछि आ जड़ि धयने रहि सकैत अछि, सामाजिक कल्याण लेल समर्पित भे सकैत अछि। तेहने प्रतिष्ठित, विनयी आ अतिउत्साही, गाम-समाज लेल समर्पित, स्वतंत्रता सेनानी कुशेश्वर ठाकुरक भातिज आ कपिलेश्वर ठाकुरक बालक, कोइलखवासी, प्रवासी भारतीय (NRI), अभियंता आ उद्यमी छलाह स्वर्गीय मोतीलाल ठाकुर।

श्री मोतीलाल ठाकुरक जन्म कोइलख गामक पछबारिटोलमे रामनवमीक दिन 1942 इस्वीमे भेल छलनि। हिनकर काका कुशेश्वर ठाकुर खादी भण्डारमे बरही (बढइ) केर काज करइत छलथिन।

गरीब छात्रक पढाइमे सेहो मोतीलाल जीक योगदान रहलनि अछि। हिनक विश्वास योजना बनयबेटापर नहिं, ओकर सुचारु संचालनपर अधिक रहलनि। हिनक निधन कोरोनासं अबूधाबीमे 18 जून 2020 कें भे गेलनि।

मोतीलालक पढवाक रुचि आ तीक्ष्ण बुद्धिक कारणे ओ सभ प्रकारें हिनका पढाइमे सहायता केलथिन। मैट्रिकुलेशनमे उच्च श्रेणीमे पास कय मोतीलाल आइएससी संत कोलम्बस कॉलेज, हजारीबागसं कयलनि। फेर इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कयलनि आ इंग्लैंड चल गेलाह। ओतय नौकरी कयलनि, व्यवसाय कयलनि, तकरा दुबई तक पसारलनि, बादमे इंग्लैंडमें बसि गेलाह। ओतय बसि तं गेलाह, किन्तु गामक ताड़ तोड़लनि नहिं। अवर्यात बनल रखलनि आ गामक विकास लेल अनेको काज कयलनि।

विकास खाली सड़क-बिजली, चिकित्सा-स्वच्छता, देवालय-पुस्तकालये धरि सीमित नहिं, अपितु सामाजिक समरसताक लेल सेहो तन-मन-धनसं लागि गेलाह। ई जिला प्रशासन आ गामक सभ वर्गक लोकसं सहयोग ले के काज

करबामे विश्वास रखैत छलाह। हिनकर प्रयासें सभक सहयोगसं ग्राम विकास समितिक गठन 1996-97 मे भेल। समिति पंजीकृत भेल, जकर प्रथम अध्यक्ष बीरेन्द्रनाथ झा (बीरुबाबू), उपाध्यक्ष श्री कामेन्द्रनाथ झा आ अन्य सदस्य बनाओल गेलाह। क्रमशः डॉक्टर स्वर्ण शेखर झा एवं श्री प्रेमकान्त मिश्र एकर अध्यक्ष चयनित भेलाह। समितिक अधिकारी आ अन्य सदस्यक सेहो सकारात्मक सोच सङ्ग गामक उत्थानमे योगदान देबय लगलाह। मोती लाल ठाकुरक प्रभावशाली व्यक्तित्व सरकारक मदति पयबामे सेहो सफल रहल।

सरकारी अस्पतालक कुव्यवस्थासं खिन्न भय हिनक ध्यान सस्त, सुलभ आ अहर्निश चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करयबापर गेलनि। एक निजी अस्पताल खोलबाक योजना बनौलनि आ ओहिमे सफल भेलाह। अपन माता-पिताक नामपर चैरिटबल ट्रस्ट (MCT) द्वारा संचालित 'जानकी कपिलेश्वर मेमोरियल अस्पताल' 2003 इसवीमे बनबाओलनि आ ताहिसं सक्रिय रूपें जुड़ि गेलाह। ताहिमे गामक सङ्ग आनो गामक डॉक्टरक सहयोग भेटलनि। दरभंगाक ख्यात सर्जन डॉक्टर सुवर्ण शेखर झा, डॉक्टर अरुण कुमार झा, डॉक्टर रईश अहमद डॉक्टर कृष्ण कुमार झा, डॉक्टर श्रीवास्तव, डॉक्टर यू सी झा, डॉक्टर संजय नारायण झा आदि नियमित समय सीमामे अबैत छलथिन। संप्रति डॉक्टर पवन कुमार सिंह 2012 इस्वीसं पूर्ण कालिक सेवा दय रहल छथि। गाममे मंदिरक निर्माण मे सेहो हिनकर अवदान छनि, बसहीपर सात-आठ लाखक लागतसं बजरंगबलीक मन्दिर बनबाओलनि आ एक और पछबारिटोलक मन्दिरमे सेहो आर्थिक सहयोग देलनि।

गरीब छात्रक पढाइमे सेहो मोतीलाल जीक योगदान रहलनि अछि। हिनक विश्वास योजना बनयबेटापर नहिं, ओकर सुचारु संचालनपर अधिक रहलनि। हिनक निधन कोरोनासं अबूधाबीमे 18 जून 2020 कें भे गेलनि।

हितनाथ झा, साहित्यकार, हजारीबाग

रवीन्द्र नारायण सिंह, गोलमा, सहरसा

सहरसा जिलाक पतरघट प्रखंड केर गोलमा गाम निवासी पद्मश्री डॉक्टर रविंद्र नारायण सिंह कोनो परिचय केर मोहताज नहि थिकाह। श्री सिंह चिकित्सा आ सामजिक क्षेत्रमे अलग पहिचान बनौने छथि। श्री सिंहक विशेषज्ञता रोटेरियन आ ऑर्थोपेडिक केर क्षेत्रमे अछि, एहि क्षेत्र मे श्री सिंह कोशी इलाकामे नव क्रांति केर सूत्रपात्र कयलनि। हिनका द्वारा गोलमा मे एक गोट अस्पताल केर स्थापना कयल गेल अछि जाहिमे मुफ्तमे चिकित्सा व्यवस्था कयल गेल अछि, श्री सिंह स्वयं समय समय पर अस्पताल मे मुफ्तमे रोगी सबकें देखल जायत अछि। हिनक ई प्रयास सं खाली कोसी क्षेत्रक लोक हि नहि वरन मिथिलांचल केर सुदूर किशनगंज इलाकाक लोक सेहो लाभान्वित भ' रहल छथि।

डॉ. सिंहक कॅरियरक आरम्भ बड्ड संघर्षपूर्ण स्थितिमे भेल छल। प्रारम्भमे हुनक क्लिनिक पटनाक कदम कुआं इलाकामे एक गोट कार गैरेजमे भेल छल। कालांतर मे अपन ज्ञान आ गुण सं देश विदेश मे हुनक ख्याति पहुंचलनि। एक गोट पत्रिका समूह द्वारा हुनका 2018 मे "आइकन्स ऑफ़ बिहार" सम्मान सं सम्मानित कयल गेल। श्री सिंहक मेडिकल केर पढ़ाय 1970 मे पटना मेडिकल कॉलेज आ हॉस्पिटल सं भेल छलनि बादमे ओत्तहि सं हुनका एम एस केर डिग्री सेहो प्राप्त भेलनि। बाद मे उच्च शिक्षाक लेल ओ इंग्लैंड गेलाह। शिक्षा पूर्ण हेबाक बाद नॉटिंघम मे श्री सिंह बतौर शिक्षक क्वींस मेडिकल कॉलेज केर एनाटोमी विभागमे अपन सेवा देलनि। इंग्लैंडमे पढ़ाब' सं पहिने ओ पटना केर नालंदा मेडिकल कालेज मे सेहो बतौर शिक्षक सेवा देलनि। 1976 ईस्वीमे एडिनबर्ग केर रॉयल कॉलेज ऑफ़ सर्जन्स सं एफ आर सी सी केर फेलोशिप प्राप्त कयलनि। श्री सिंह बहुत दिन तक इंग्लैंडमे रहलनि, लिवरपूल विश्वविद्यालय सं हुनका ओर्थोपेडिक्स मे एम सी एच डिग्री भेटलनि। हुनका विदेश सं कैक टा प्रस्ताव भेटलनि मुदा अपन पिताक इच्छा केर पालन करैत श्री सिंह अपन इलाका मे हि डॉक्टरी पेशा केर निर्वाह कयलनि, हुनक पिता जिला जज छलथि।

> **डॉ. सिंहक झुकाव आरम्भहि सं समाज सेवा दिशि छलनि। 1983 मे एहि दिशा मे ओ रेड क्रॉस सं जुड़ि गेलाह। तीन दशक पहिने प्रत्येक मंगल दिन कें ओ 20 गोट मरीज कें मुफ्त मे देखबाक निर्णय लेलनि, आय धरि ओ सिलसिला रुकल नहि अछि। पटनामे श्री सिंह 20 गोट असहाय बालिका लेल शिक्षा केर इंतज़ाम कयलनि।**

डॉ. सिंहक झुकाव आरम्भहि सं समाज सेवा दिशि छलनि। 1983 मे एहि दिशा मे ओ रेड क्रॉस सं जुड़ि गेलाह। तीन दशक पहिने प्रत्येक मंगल दिन कें ओ 20 गोट मरीज कें मुफ्त मे देखबाक निर्णय लेलनि, आय धरि ओ सिलसिला रुकल नहि अछि। पटनामे श्री सिंह 20 गोट असहाय बालिका लेल शिक्षा केर इंतज़ाम कयलनि, ओकर सभक रविंद्र बालिका विद्यालय मे मुफ्त शिक्षा केर प्रबंध कयलनि। ओकर सभक पढाय पूर्ण हेबाक बाद अपने अस्पतालमे रोजगार सेहो देलनि। अपन मां इंदु देवीक स्मृतिमे इंदु देवी छात्रा प्रोत्साहन राशिक शुरुवात सेहो कयलनि। ई छात्रवृति केर अंतर्गत गोलमा केर मेधावी छात्रा सबकें मदद कयल जायत अछि। अपन पत्नी कविता सिंहक स्मृतिमे गरीबी रेखा सं नीचां रह' बला बालक बालिका केर मुफ्त शिक्षा केर व्यवस्था कयल गेल अछि।

संजय झा (सीईओ, ग्लोबल फाउन्ड्रीज)

दुनिया भरिक शीर्ष कॉर्पोरेट प्रबंधक लोकनिक सूचीमे श्री संजय झा जीक नाम अग्रगण्य अछि। श्री झा वर्तमानमे अमरीकी कंपनी 'ग्लोबल फाउंड्रीज' केर सीईओ छथि। संगहि ओ 'स्मार्टन इंडिया' केर बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर केर सदस्य सेहो छथि। श्री झा अपन निजी आ प्रोफेशनल करिअर मे अनेको उपलब्धि हासिल केलनि। आजुक समयमे ओ विदेश मे रह' बला सबसं प्रतिष्ठित भारतीय हस्ती सबहक सूचीमे शामिल व्यक्ति छथि।

संजय झाक जन्म भागलपुर जिलाक सुल्तानगंज मे 1963 मे भेल छलनि। सम्प्रति ओ एक गोट इंडियन अमेरिकन नागरिक छथि। हुनका इलेक्ट्रॉनिक आ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग मे स्त्राथक्लाइड यूनिवर्सिटी सं पीएचडी डिग्री भेटलनि, संगहि यूनिवर्सिटी ऑफ लिवरपूल सं इंजीनियरिंग मे हुनका बी एस केर डिग्री भेटलनि।

4 अगस्त 2008 कें ओ मोटोरोला मोबाइल डिवाइस बिज़नेस केर ओ सीईओ बनाओल गेलाह। एहि सं पहिने ओ क्वालकॉम केर सीओओ छलाह आ क्वालकॉम सीडीएमए तकनीकि केर प्रेसिडेंट छलाह। एतबहि नहि क्वालकॉम ज्वाइन करबा सं पूर्व श्री झा सैन डिएगो मे ब्रूकट्री कारपोरेशन मे लीड इंजीनियर केर भूमिका मे छलाह। क्वालकॉम मे अलग अलग भूमिका मे कार्य करबाक उपरान्त 2002 मे श्री झा क्वालकॉम तकनीकी आ वेंचर मे प्रमुख भूमिका निभौलाह।

एहि सभक अलावा 2005 मे श्री झा केर मनोनयन 'सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री एसोसिएशन' केर बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर के लेल सेहो भेल छल। गूगल द्वारा जखन मोटोरोला केर अधिग्रहण कयल गेल छल ओहि समय श्री झा कें 66 मिलियन अमरीकी डॉ.लर गोल्डन पैराशूट पैकेज केर रूपमे देल गेल छल।

अजय झा (माइक फार्मेसी)

जाहि समाजमे सरकारी नौकरी टा सबहक जीवनक ध्येय बनल रहैत अछि, जाहि समाजमे उद्यमिता दिश विचारो करब एकटा अजूबा बुझना जाइछ, ओहि समाजक कोनो व्यक्ति अपन उद्यम कें देश के कहय, दुनिया भरिमे पसारि लेथि, त निश्चय ओ असाधारण व्यक्तित्व थिकाह। एहने एकटा विरल व्यक्तित्वक धनि छथि श्री अजय झा जी जे दक्षिण अमेरिका मे व्यवसायक क्षेत्र मे अपन देशक नाम रौशन क' रहल छथि। श्री झा मूल रूपेण मधुबनी जिलाक डुमरा गामक मधवापुर अंचलक निवासी छथि। विश्वक जानल मानल दवा कंपनी सब संगे कार्य करैत, दक्षिण अमेरिका मे लगभग 16 साल सं ओ प्रवास क' रहल छथि। भारत सरकारक विदेश मंत्रालय द्वारा हुनका 2004 मे आईटीईसी केर माध्यम सं गुयना मे एलओसी एक्जिम बैंक क्रेडिट द्वारा एकटा प्रोजेक्ट केर क्रियान्वयन लेल भेजल गेल छल, प्रोजेक्ट पर काज करबाक मध्य हुनका ओतय व्यवसाय केर अपार संभावना नजरि एलनि आ ओ ओतहि अपन व्यवसायमे लागि गेलाह।

सम्प्रति श्री झा माइक फार्मा केर प्रोप्रिएटर, माइक फार्मेसी केर उपाध्यक्ष, मेसर्स जी डी इम्प्लेक्स केर पार्टनर, एगेट इंफ्रास्ट्रक्चर एंड कंस्ट्रक्शन इंक केर निदेशक आ अपोलो इंटरनेशनल लिमिटेड संग अनेक वैश्विक फार्मेसी कंपनी केर मध्य तथा दक्षिण अमेरिका मे कंसलटेंट आ प्रतिनिधि छथि। श्री झा कें लन्दन मे कोनो एक सिंगल ब्रांड केर 120 देश मे सर्वाधिक विक्रय केर लेल स्वर्ण पदक सं 2018 मे सम्मानित कयल गेल छल। हुनका भारत सरकार द्वारा सेहो अनेको अवसर पर सम्मानित कयल गेल अछि। एतबहि नहि श्री झा वेस्ट इंडीज केर क्रिकेट लीग सं सेहो जुड़ल छथि। 1989 बैच केर आईपीएस अधिकारी (वर्तमान मे मध्य प्रदेश मे एडीजीपी) श्री संजय झा आ बिहार सरकार मे सिविल सेवक श्री अभय झा केर सहोदर अजय बाबू अपन अग्रज आ अनुज दुनू सं सर्वथा फराक मार्ग अपनौलन्हि। ओ अपन परिवारमे एकमात्र व्यक्ति छथि जे एहि तरहक जीवन वृत्ति स्वीकार कएलन्हि आ एहि कारणे आइ ओ मिथिलाक सर्वाधिक समृद्ध मैथिल सभमे शामिल भ गेलाह अछि। हुनक कहब छनि जे मिथिलाक उत्थान उद्यम आ व्यवसायहि केर मार्ग सं संभव अछि। एखन देशमे सेहो उद्यमिता कें नीतिगत प्रोत्साहन भेट रहल अछि। एहनामे आशा करबाक चाही जे, मिथिलाक युवा लोकनि हिनका सं प्रेरणा ल उद्यमिता दिश प्रवृत्त होएताह।

राजेश झा (एग्जीक्यूटिव वीपी, माइक्रोसॉफ्ट)

कम्प्यूटरक दुनियाक सबसं अग्रणी कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट केर प्रबंधनक अग्रणी पांतिमे सेहो एक गोट मैथिल श्री राजेश झा मजगूती सं ठाढ़ छथि। श्री झा माइक्रोसॉफ्टमे सत्या नडेलाक बाद दोसर नंबरक सबसे प्रभावी भारतीय (मूल केर) अधिकारी मानल जायत छथि। माइक्रोसॉफ्ट केर एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट केर भूमिकामे श्री राजेश झा ओहि टीम कें लीड क रहल छथि जे डिवाइस, विंडो क्लाइंट, नव अनुभव आ तकनीकि, मोबिलिटी आ प्रबन्धन तथा ऑफिस प्रोडक्ट केर कार्य देखैत अछि। हालहि ओ माइक्रोसॉफ्ट केर 'ऑफिस 365 क्रॉस' प्लेटफार्म केर निर्माण ामे कॉर्पोरेट वाइस प्रेसिडेंट केर रूपें प्रमुख भूमिका मे छलाह। 'ऑफिस 365 क्रॉस' विश्व मे प्रयुक्त होमय बला सबसे तेज गति सं मांगमे रहय बला एहेन कमर्शियल सर्विस अछि जे सम्प्रति पैघ कॉर्पोरेट हाउस आ सरकार सब द्वारा प्रयोग कयल जायत अछि।

श्री राजेश झा केर तकनीकि शिक्षा प्ध्ज मद्रास सं भेल छलनि। ओकर बाद ओ अमेरिका केर मेसाचुसेट्स विश्वविद्यालय सं कम्प्यूटर साइंसमे मास्टर्स डिग्री हासिल कयलनि। माइक्रोसॉफ्टमे हुनक करिअर केर आरम्भ 1990 ईस्वीमे भेल छलनि। श्री झा मूल रूप सं भरतपुर ग्राम केर निवासी छथि।

प्रशांत प्रभाकर (जायसवाल)

(टीवी आ फ़िल्म अभिनेता, जर्मनी)

मैथिल लोकनि जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे प्रगति क रहल छथि आ अपन महत्वपूर्ण स्थान बना रहल छथि। रंगमंच सेहो एहिसं अछूत नहि। मधुबनीमे जन्मल प्रशांत प्रभाकर एकटा एहन रंगकमी छथि जे सात समंदर पार जा जर्मनीमे, जर्मन भाषामे अपन अभिनय लोहा मनबा रहल छथि। प्रशांतक जन्म 13 अक्टूबर 1974 कें भेल छल। ओ उच्च शिक्षाक क्रममे 2002 मे जर्मनी प्रवासित भेल छलाह मुदा फेर ओतहि रमि गेलाह। एखन ओ जर्मनीक टीवी आ फिल्मक दुनियामे स्थापित भ गेल छथि। वर्ष 2005 मे हुनका पहिल बेर टीवी शो केर अवसर भेटल छल, तदुपरांत अवार्ड विजेता टीवी शो 'स्ट्रोम्बर्ग' सं भरि जर्मनी प्रसिद्ध भ गेलाह। आगू चलि त हुनक अभिनयक सफर त्वरित प्रवाह पकड़ि लेलक।

प्रशांत केवल अपन अभिनय धरि सीमित नहि छथि, वरन जर्मनीमे रहि अपन माटि-पानि सं सम्बद्ध रहबाक लेल सतत सचेष्ट रहैत छथि। ओ जर्मनीमे 'बिहार फ्रेटर्निटी' केर प्रमुख सदस्य छथि। ई संस्था जर्मनीमे बिहारी डायस्पोराक सांस्कृतिक-सामाजिक सजगता आ जड़ि स जुड़ाव लेल काज करैत अछि।

शरद कुमार झा

(कंजर्वेटिव डायवर्सिटी चैम्पियन, यूके)

जीविकाक लक्ष्य स विदेश गेल अनेक मैथिल ओतहि स्थायी निवास सेहो भ गेलाह। अनेक देशमे ओ सब ओतुका राजनीति आदि कें सेहो प्रभावित क रहल छथि। एहने एकटा व्यक्ति छथि श्री शरद कुमार झा जे लंदनमे सामाजिक आ राजनैतिक रूप सं खूब सक्रिय छथि। ओतय ओ कंजर्वेटिव पार्टीक कंजर्वेटिव डायवर्सिटी चैम्पियन सेहो छथि। ब्रिटिश राजनीति मे सक्रिय रूप सं जुड़' बला भरि सक ओ पहिल पांतिक मैथिल छथि, स्वयं लन्दन मे दू गोट वार्ड सं चुनाव सेहो लड़ने छथि। इंग्लैंड मे प्रवासी भारतीय समुदाय सबकें जोड़ि कें रखबा मे सेहो हुनक प्रमुख भूमिका रहैत छनि। एहि काज पर केन्द्रित संस्था 'सेंटर फॉर एक्सीलेंस' केर ओ प्रमुख सदस्य छथि। एहि संस्थाक प्रयास सं 2019 मे विश्व मातृभाषा दिवसक अवसर पर 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स' मे भारतीय भाषा सभक कवि सम्मेलन आयोजित भेल। ताहिमे श्री झा मैथिलीक प्रतिनिधि सेहो छलाह। शरद झा मूल रूप सं दरभंगा जिलाक सखवार ग्रामक निवासी छथि। सम्प्रति ओ ब्रिटिश नागरिक छथि आ 18 बरख सं बेसी सं इंग्लैंडमे रहि रहल छथि। हुनक पत्नी श्रीमती अनीता झा कंप्यूटर इंजीनियर छथि। ■

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशाः ....

शिक्षा : ....

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली : **विजय चन्द्र झा** (9650461788)
: **विद्यानंद ठाकुर** (9717539000)
जी-116, दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली-110095
: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
: सोनू बुक कॉर्नर, मो. 9931291259

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : विभा रानी, मो. 887970891

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
: किताब कोनचर,
लगिचः सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना- 800010
संपर्कः 9955995509

भागलपुर : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

सहरसा : अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' मो. 9771006810

रांची : कृष्णमोहन झा 'मोहन', मो. 9835903711

मधेपुरा : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

समस्तीपुर : नरेश कुमार 'विकल', मो. 9430244114

कोलकाता : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

सिलचर : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

सुपौल : केदार कानन, मो. 7004917511

रायपुर : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

विश्वक गण्य-प्रतिभा मे मान्य मिथिलाक विरल विभूति : डॉ. श्रीनिवास

✍ डॉ. नरेश कुमार विकल



समस्तीपुर जिलाक भगवानपुर देसुआ गामक निवासी डॉ. नरेश कुमार विकल सात काव्य संग्रह, पांच कथा संकलन, सात नाटक आ एक दर्जन सं बेसी पोथीक संपादन केने छैथ. मराठी उपन्यास 'ययाती', गुजराती उपन्यास 'तत्वमसि' और तमिल उपन्यास 'चित्रप्रिया' केर अनुवाद विकल जी केने छैथ। कतेक रास फिल्म मे अभिनय संग निर्देशन सेहो केने छैथ।

विश्वक गण्य-प्रतिभा मे जनिक नाम सर्वथा मान्य अछि, ओ थिकाह, मिथिलाक विरल विभूति - डॉ. श्रीनिवास। विद्या विनयक श्री-सम्पन्नताक कारणें हिनक यश: कीर्तिक धवल धूजा एहि धरा-धाम पर सदति फहराइत रहल। चिकित्सा विज्ञानक एहि अद्वितीय कल्पवृक्षक सुख्याति अन्तरराष्ट्रीय आध्यात्मिक, समदर्शी विचारक एवं साहित्यकारक रूप मे सेहो भेल।

अमरीकाक जाहि शिकागोक धर्म-सभा मे विलक्षण संबोधनक कारणें स्वामी विवेकानन्द सुविख्यात आ प्रेरक-पुरुष संन्यासी बनलाह, ओही धर्म-सभा द्वारा स्वामी विवेकानन्दक भाषणक शताब्दी वर्ष समारोहक अवसर पर 1993 ई. मे जाहि भारतीय विद्वान कें प्रवचनार्थ सादर आमंत्रित कयल गेल छल, ओ छलाह, अक्षर-चेतना सम्पन्न पुरुष-पुंगव सरस्वतीक वरदपुत्र डॉ. श्रीनिवास अर्थात् 'वाणी'। हिनक घरक लोग हिनका 'बाणी' कहैत छलनि। 'बाणी' विशिष्ट संत कें कहल जाइत छैक। हिनक ओहि प्रवचन कें आनो भाषा सभ मे रूपान्तरण कयल गेलैक, जकरा 'स्पेक्ट्री' कहल गेलैक। ओ एहि माध्यमे प्रमाणित कयलनि जे धर्म कें विज्ञानक माध्यम बना क' सेहो भगवानक लग जायल जा सकैत अछि। धर्म कें विज्ञान सं जोड़ि क' ओ ओहि सभा मे उपस्थित अपन सारगर्भित व्याख्यान सं चमत्कृत कयने छलाह। हिनक ओ प्रवचन बहुप्रशंसित भेलनि। ओहि धर्म सभाक प्रवचनक पछाति हिनक आध्यात्मिक संतक विशिष्ट स्वरूप लोकक सोझां अयलैक।

देशक पहिल हृदय रोग विशेषज्ञक रूप मे सेहो हिनका पर्याप्त प्रसिद्धि ओ लोकप्रियता भेटलनि। भारत मे सभ सं पहिने ईसीजी मशीन डॉ. श्रीनिवास अमरीका सं ल' क' आयल छलाह आ एही मशीन सं पंडित जवाहर लाल नेहरू, नेपाल नरेश किंग महेन्द्र, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. श्री कृष्ण सिंह, डॉ. जाकिर हुसैन आदिक इलाज कयल गेलनि।

हिनक दिव्यावतरण समस्तीपुर जिलान्तर्गत दलसिंहसराय अनुमण्डलक गढ़सिसई गामक कमला देवी आ रामप्यारे शरण सिंहक पुत्र रत्नक रूप मे 30 दिसंबर, 1919 ई. कें भेलनि। गामक प्रारंभिक शिक्षोपरान्त समस्तीपुर शहर स्थित किंग एडवर्ड हाई इंगलिश स्कूल, जे आब आर.एस.बी. इंटर स्कूल नाम सं जानल जाइछ, सं आगांक शिक्षा प्राप्त कयलनि। ओ उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक लेल साइंस कॉलेज, पटना चलि गेलाह। प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल (आब पी.एम.सी.एच.) सं 1944 ई. मे एम.बी.बी.एस. (सी.) स्वर्णपदकक संग कयलनि। एला लैमन काबेट फेलोशिप ल' क' 1948 ई. मे हार्वर्ड गेलाह। ओत्तहि सं डॉक्टर ऑफ मेडिसिन, डॉक्टर ऑफ साईंसक डिग्री प्राप्त कयलनि। हार्वर्डक मैसेचुसेट्स जनरल हॉस्पिटल मे आधुनिक हृदय रोग चिकित्सा विज्ञानकक जनक डॉ. पाल डडले व्हाइटक संग रहि क' हुनका सं कार्डियोलॉजीक विशेष ज्ञान ओ प्रशिक्षण प्राप्त कयलनि। एहिठाम ई विशेष रूप सं द्रष्टव्य थिक जे डॉ. श्रीनिवास हुनका सं प्रशिक्षण पओनिहार पहिल आ अंतिम भारतीय छलाह।

संपर्क : विशाखा', बारह पत्थर (जल विहार), वार्ड नंबर-14, समस्तीपुर-848101
मोबाइल: 9430244114, 8051986749

अमरीका सं शिक्षण-प्रशिक्षण-समापनक मुक्तिक पश्चात् श्रीनिवास मनसा-वाचा-कर्मणा स्वराष्ट्रक प्रेम सं अभिभूत भ' गेलाह। यद्यपि उच्च आधुनिकतम ज्ञान अर्जित लोभ-पांक मे फंसल शरीरक अमरीकाक अनिच्छित जीवन-यापनक विवशता छल, मुदा आत्मा हुनक भारतक दीन-हीन, समुचित सर्वसुलभ चिकित्सा आ सामाजिक सम्पदा सं नितान्त वंचित लोक-जीवनक पक्ष मे छलनि। प्राण-पण सं एकरा प्रतिएं निवेदित होम' चाहैत छलाह। पीड़ा सं पीड़ित प्रदेश-देशवासीक लेल बहुविध सेवा-भावना हिनक अन्तस् कें अहर्निश आलोड़ित करैत छलनि। विपुल वैदुष्यक विभा सं विभासित, अखण्ड अनुरागक साक्षात् विग्रह, पावन धवल चरित्र, अविगलित उछाह, अकुतोमयता मनोवृत्ति, अकुण्ठ हिआओ, अकृत्रिम औदार्य, उपेक्षित जनक निजगूत आस, विद्या आ साधनाक नियत संरक्षण ओ मनोबलक अखण्ड-अजस्र भण्डार श्रीनिवास देश आबि गेलाह, ओहो स्वप्रांत पटना।

एहिठाम ओकॉर्डियोलॉजी स्पेश्यालिटीक स्थापना कयलनि। ओहि समय जे जेनरल फिजिशियन होइत छलैक, वैह हृदय रोगक रोगीक सेहो इलाज करैत छलैक। पी.एम.सी.एच. हिनक अप्रतिम प्रतिभा सं प्रभावित भ' अपना ओहिठाम नियुक्त क' लेलकनि, मुदा बड़ कम लोक अछि जे अपन जीवनक उच्चतम आदर्श कें व्यक्तिगत जिनगी धरि सीमित नहि राखि क' समग्र राष्ट्र कें ओहि महान आदर्श सं परिचालित करबाक प्रबल इच्छाशक्ति रखैछ। हिनका दलित-मर्दित, मूक-मूढ़, निमूधन-निःसहाय जनताक दुःख-दर्द असह्य होइत छलनि। प्रशासनक बिनु अनुमतिए हृदयक रोगी सभ कें जनरल वार्ड सं उठा क' संक्रमण रोग सं ग्रसित करा सभक लेल बनिक' तैयार खाली पड़ल भव्य भवन मे ल' गेलथिन। पी.एम.सी.एच.क प्रशासनक मांझ हरबिरड़ो मचि गेलैक। प्रशासन हिनका चेतौनी देलकनि, नौकरी करै छी, ओहो सरकारी। सरकारी नियम-कानूनक अतिक्रमण नहि क' सकैत छियैक। ई तकरा मोजर नहि दैत, अनठिया देलनि। हारि-हिआ क' प्रशासने कें नत होम' पड़लै, हिनका सोझां।

फलतः भारतक पहिल कार्डियोलॉजी सेंटर ओहि बिल्डिंग मे खुजलैक नाम-करणक समस्याक समाधान सेहो हिनके कर' पड़लनि। डॉ. श्री निवास स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सं भेट क', हुनका सं ओहि संस्थानक नाम 'इंदिरा गांधी हृदय रोग संस्थान' राखबाक अनुमति आ अनापत्ति पत्र ल' अनलथिन। ई भारतक पहिल संस्थान अछि जे इंदिरा गांधीक जीविते मे हुनका नाम पर बनलैक, आइयो यैह नाम छैक, एहि संस्थानक। सत्यता, विचार, वचन आ आचरण मे समरूपता, व्यक्ति कें आत्मबल आ प्रभाव कें अमोघ बना दैत छैक।

डॉ. श्रीनिवास चिकित्साक क्षेत्र मे पहिल

डॉ. श्रीनिवास चिकित्साक क्षेत्र मे पहिल व्यक्ति छथि जे हृदय रोगक चिकित्सा मे योग कें सेहो सम्मिलित कयलनि। तकरा लेल मुंगेरक योग स्कूलक संचालक स्वामी सत्यानन्द सरस्वती सं सहयोग लेलनि आ योगक माध्यमे रक्तचाप कें नियंत्रण करबाक काज कयलनि। बिहार मे 'योग रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया'क स्थापना सेहो कयलनि।

व्यक्ति छथि जे हृदय रोगक चिकित्सा मे योग कें सेहो सम्मिलित कयलनि। तकरा लेल मुंगेरक योग स्कूलक संचालक स्वामी सत्यानन्द सरस्वती सं सहयोग लेलनि आ योगक माध्यमे रक्तचाप कें नियंत्रण करबाक काज कयलनि। बिहार मे 'योग रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया'क स्थापना सेहो कयलनि।

लोक जीवनक प्रति हुनक असीम अनुराग हुनक ओहि कर्मण्यता कें किंचितो क्लांत नहि होमय देलकनि। शोध-प्रज्ञता आकुल-व्याकुल कयने रहलनि। किछु नब करबाक लेल सदति औनाइत रहथि। परिणामस्वरूप चिकित्साक क्षेत्र मे एकटा नब खोज 'पॉलीपैथ' कयलनि जे हिनका सम्पूर्ण विश्व मे मान-सम्मान बढ़ौलकनि, अर्चित-चर्चित कयलकनि, यश-प्रतिष्ठा दियौलकनि। एहि सर्वधारा चिकित्सा-पद्धति मे एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, यूनानी, नेचुरोपैथी, कॉस्मेटिक थेरेपी इत्यादि कें समघंट क' क' इलाज कयल जाइछ। एहि विशिष्ट पद्धतिक ई जनक मानल जाइत छथि।

20 सं 25 जनवरी, 1997 ई. कें दिल्लीक तालकटोरा स्टेडियम मे सय सं बेसी देशक चिकित्सा विज्ञानक प्रतिनिधि लोकनि कें बजा क' प्रथम विश्वधारा चिकित्सा महासम्मेलन (फर्स्ट वर्ल्ड पॉलीपैथी कांग्रेस) करौलनि। एहि सम्मेलनक एक गोट विशिष्टता छलैक जे जतेक देशक प्रतिनिधि छलाह, हुनका आगां ओही देशक झंडा मंच पर लागल छलैक। हिनक एहि चिकित्सा पद्धतिक प्रशंसा चर्चित धार्मिक गुरु दलाईलामा सेहो खूब नीक जकां कयने छलथिन। एहि महासम्मेलन मे भगवान बुद्धक तथाकथित नब अवतारी बालक सेहो सम्मिलित भेल छलैक। एतय डॉ. श्रीनिवास कें 'फादर ऑफ पालीपैथी'क उपाधि सं अलंकृत ओ विभूषित कयल गेल छलनि। (छायाचित्र एहि पांतीक लेखकक लग सुरक्षित अछि)।

डॉ. श्रीनिवास कें चिकित्सा विज्ञानक क्षेत्र मे नव-नव शोध करबाक प्रवृत्ति कहियो क्षीण नहिं भेलनि। फोरेंसिक साइंस मे ईसीजीक प्रयोग पर शोध कयलनि आ ओकर एक गोट मॉडल बनौलनि जे आइयो दुनिया भरि मे फोरेंसिक साइंसक पढ़ौनी मे व्यवहृत होइछ। एकरा 'The EV Method of Identification' कहल जाइछ। एतय सं फोरेंसिक साइंस मे आंगुरक निसानक अतिरिक्त ईसीजीक उपयोग होम' लगैत छैक। इंग्लैंडक स्कॉटलैंड यार्ड पुलिस एहि तरीकाक व्यवहार आइयो करैत अछि।

डॉ. श्रीनिवास अपन प्रातिभ-पुण्या-श्लोक सं युगान्तरकारिणी शोध-सृष्टिक विविध लोकोपकारी योजना कें अनुपम आकर्षण आ प्रभावक द्वारा चिरन्तन तथा सार्वभौम बनयबाक सार्थक चेष्टा करैत रहलाह।

अपन साधना-संयमक साहित्यानुभूतिक मुक्त आकर्षणक चमत्कारिक दृश्य सेहो अंकित कए डॉ. श्रीनिवास युग प्रतिनिधि कवि, साहित्यकार ओ दैदीप्यमान दार्शनिक प्रतिभाक मार्मिक, दुर्लभ परिचय सेहो देलनि अछि। ओहि कलात्मक भाषाक ऐतिहासिक आ साहित्यिक स्वरूप-परिचय एतय करायब आवश्यक बुझना जाइछ।

एक गोट ख्यात-विख्यात अस्त-व्यस्त चिकित्सक रहितो साहित्यकारक भावुकता पयबाक विलक्षणता हिनका मे विद्यमान छल। ओ सहज, सरल, सहृदय, परोपकारी आ उदार व्यक्तित्वक स्वामी सेहो छलाह। गरीब सं गरीबक मुफ्त मे चिकित्सा तं करिते छलाह, ओकरा दवाइ आ आनो-आन आवश्यकता, खगताक सेहो पूर्ति करैत छलाह।

ई प्रकीर्ण रचना सेहो कयलनि जाहि मे- 'गांधी जी को मेरा प्रणाम!' एक गोट अत्यंत प्रशंसित रचना थिक। गांधी जी हिनका हिनक उपनयन संस्कारार्थ शुभकामना ओ आशीर्वादार्थ 26 फरवरी, 1935 ई. कें एक गोट व्यक्तिगत पत्र लिखने रहथिन, जखन ई मात्र 15 बरखक छलाह। पत्र अविकल एतय प्रस्तुत अछि-

– कुमार श्री श्रीनिवास
बीरसिंहपुर, वाया वैनी,
जिला दरभंगा, बिहार

चि. श्रीनिवास

यज्ञोपवीत का अर्थ यह है कि तब से नया जीवन शुरू होता है। नए से युवक सेवा क्षेत्र मे प्रवेश करता है। ईश्वर करे कि तुम्हारे मे सेवा भाव बढ़ता रहे, तुमको दीर्घायु करे।

वर्धा 26-2-35
बापू के आशीर्वाद
(एकर प्रतिछवि एहि पांतीक
लेखकक लग सुरक्षित अछि)

हिनका द्वारा प्रणीत पोथी सभ मे प्रमुख अछि- 'इस कगार से उस कगार तक', 'गूलर और गुलनार', 'मैं कहां हूं', 'श्रृंगीनाद' आदि। 'श्रृंगीनाद' मे ई धर्म आ विज्ञानक विलक्षण ओ विस्तृत विश्लेषण कयलनि अछि।

हिनक परिवारक आन सदस्य सभ सेहो लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार ओ विद्वान भेल छथि। हिनक अनुज मदन वात्स्यायन हिन्दीक विख्यात कवि छलाह, जनिक कविता अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'तीसरा सप्तक' मे संकलित अछि। भारतीय ज्ञानपीठ सं 2005 ई. मे 'शुक्रतारा' नामक संकलन प्रकाशित भेलनि। ई (वात्स्यायन) हिन्दी, रूसी, अंग्रेजी बंगला आ संस्कृत भाषाक उच्च कोटिक ज्ञाता छलाह। श्रीनिवासक कतेको नाटक आकाशवाणी, पटना सं प्रसारित भेल अछि। रवि निवास आशुकवि, 'कोषा महादेश'क संपादक आ दर्शन पर मारते रास पोथीक प्रणेता आकाशवाणी, पटना, 'मैना बहन' किशोरी सिन्हा आ बिहार विश्वविद्यालयक उप कुलपति डॉ. ललिता सिन्हा आदि हिनक परिवारक लोक छथि। हिनक पुत्र ताण्डव आइन्सटाईन समदर्शी अमेरिके मे बसि गेल छथि आ ओतहि डॉक्टर छथि।

> **एक गोट ख्यात-विख्यात अस्त-व्यस्त चिकित्सक रहितो साहित्यकारक भावुकता पयबाक विलक्षणता हिनका मे विद्यमान छल। ओ सहज, सरल, सहृदय, परोपकारी आ उदार व्यक्तित्वक स्वामी सेहो छलाह। गरीब सं गरीबक मुफ्त मे चिकित्सा तं करिते छलाह, ओकरा दवाइ आ आनो-आन आवश्यकता, खगताक सेहो पूर्ति करैत छलाह।**

मिथिलाक एहि अक्षर-पुरुषक जीवन-दर्शन अथर्ववेदक दिव्य मंत्र सं अनुप्राणित बुझना जाइछ- 'कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य अहितः।' - अर्थात् हमर दहिना हाथ मे कर्तव्य आ बामा मे विजय थिक। मुदा, मिथिलाक इतिहासकार, साहित्यकार ओ पत्रकारक अपन अल्पज्ञान शोध-प्रज्ञताक प्रति अरुचि, जनतबक खगता, जिज्ञासाक प्रति अन्यमनस्कता, मानसिक संकीर्णताक कारणें ई मिथिलाक क्षेत्र मे उपेक्षित रहलाह, अचर्चित रहलाह, जखन कि हिनक स्मृति मे भारत सरकार 2017 ई. मे एक गोट लिफाफ जारी कयलक, जकरा पर लिखल छैक- ''डॉ. श्रीनिवास भारत के पहले हृदय रोग विशेषज्ञ।'' प्रायः ओही साल बिहार सरकार सेहो पटनाक डाक बंगला चउबटिया सं सटले पच्छिम बामा कातक, मौर्या लोक सं सटले पूर्बक सड़कक नामकरण हिनक नाम पर कयलक। तथापि जे सम्मान आ प्रतिष्ठा भेटबाक चाही से नै हिनका जीबैत मे, नै देहावसानक पछाति भेटलनि, जखन कि वीभत्स नृत्य कयनिहारि अखोर-बखोर सभ कें पद्म पुरस्कार, कोन-कोन रत्न आ अलंकरण सं अलंकृत ओ विभूषित कयल जा रहल अछि।

मृत्यु सं एक बरख पूर्व ई अपन गामहिक कुलदेवी (बन्नीमाय)क मंदिर दस लाख टाका खर्च क' क' बनबौलनि। हिन्दीक 'प्रगद्य' शैलीक एहि प्रवर्तकक लोकान्तरण 8 नवंबर, 2010 ई. कें भ' गेलनि। ■

संदर्भ

1. समस्तीपुर जिला दर्शन : रमाकांत चौधरी
2. समस्तीपुर जिला महोत्सव स्मारिका (1991), सम्पादक : डॉ. नरेश कुमार विकल
3. समस्तीपुर परिचय, दैनिक जागरण, लेखक : डॉ. नरेश कुमार विकल
4. जिला स्मारिका क्षितिज (2007), समस्तीपुर
5. रेल सुरभि, सम्पादक : शरत्चन्द्र, पृष्ठ-3-5
6. गांधी जी को मेरा प्रणाम : लेखक डॉ. श्रीनिवास गांधी शताब्दी पारिजात स्मारिका, 2 अक्टूबर, 1968 सम्पादक : डॉ. शंकर दयाल सिंह, पृष्ठ-88, 89, 90
7. हिन्दुस्तान दैनिक : 15-11-2018 ई.
8. दैनिक जागरण : 10-11-2010 ई.
9. दैनिक हिन्दुस्तान : 16-11-2010 ई.
10. कनक किरण, सम्पादक : डॉ. अशोक कुमार सिन्हा, पृष्ठ-11
11. उत्कर्ष, जिला स्मारिका-2009, समस्तीपुर
12. महाप्राण कर्पूरी ठाकुर-जियालाल आर्य, कुणाल कुमार, पृष्ठ-95-96
13. बिहारी प्रतिभा, बिहार ने दिया था देश को पहला हृदयरोग विशेषज्ञ डॉक्टर, समस्तीपुर के डॉ. श्रीनिवास, लेखक : रवीश कुमार, पत्रकार एनडीटीवी, डेली बिहार-जून 24, 2019.
14. पारिवारिक सदस्य सभ सं बातचीत पर आधारित किछु प्रसंग।

इंग्लैंडमे नौकरी कएनिहारि पहिल मिथिलानि : डॉक्टर गौरी मिश्र

✍ हितनाथ झा



सहरसा जिलाक मुराजपुर गामक पंडित रामानुग्रह झाक चारिम पुत्री गौरी मिश्रक जन्म 11 फरवरी 1934 कें भेलनि। हिनक पिता पटना विश्वविद्यालयसं इतिहासमे स्वर्ण पदक संग प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कय ब्रिटिश सरकारमे उच्च पद पर कार्यरत रहथि।

मधुबनी जिलाक कोइलख गामक कलकत्ता विश्वविद्यालयक प्राध्यापक प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित बबुआजी मिश्र (श्री कृष्ण मिश्र) केर चारिम पुत्र डॉक्टर (प्रोफेसर) भवनाथ मिश्रक संग तेरह वर्षक अवस्थामे हिनक विवाह 08 जुलाइ 1946 कें भेलनि।

स्त्री-शिक्षाक प्रबल समर्थक डॉक्टर भवनाथ मिश्र हिनक लगन, प्रतिभा आ पढ़बाक रुचि देखि, आगूक अध्ययन हेतु सदैव उत्साहित करैत रहलथिन, तकरे फलस्वरूप हिनक ऊर्जाक सदुपयोग आगू जा चतुर्दिक पसरलनि।

डॉक्टर भवनाथ मिश्र दरभंगामे क्षयरोग (टीबी) (ताहि दिन टीबी जानमारा बीमारी होइत छल) विशेषज्ञक रूपमे ख्यात भेलाह। हुनका गणेश शंकर विद्यार्थी स्कॉलरशिप भेटलनि। ओ एमआरसीपी हेतु, हिनका पर बच्चा लोकनिकें छोड़ि इंग्लैंड गेलाह। किछु दिनक बाद अस्वस्थ रहबाक कारणे इहो इंग्लैण्ड गेलीह। ओतय जा ई पढ़ाइ तं जारी रखबे कयलनि, उदार सोचक धनिक, नारी सशक्तीकरण आ स्वावलम्बन हेतु ओतय नौकरी सेहो कयलनि। ई मिथिलाक नारीक हेतु ऐतिहासिक घटना छल, कारण ई प्रायः पहिल मैथिलानी छलीह, जे इंग्लैण्डमे नौकरी कयलनि, संगहि मिडलैंड लंदनसं डिप.इन. जर्नलिज्म सेहो कयलनि।

इंग्लैंडसं वापस अयलाक बाद मिथिला विश्वविद्यालयसं एम.ए. कयलनि। विद्यारत्न (डॉक्टरेटक समकक्ष) उपाधि लेलनि। तदुपरांत एम.आर.एम. कॉलेज, दरभंगामे प्राध्यापिका भ' गेलीह।

हिनक जीवनमे मोड़ अयलनि जर्मन विद्वान मानवविज्ञानी डॉक्टर एरिका स्मिथ (Dr. Erika (Moser) Shmidt.) सं सम्पर्कक बाद। डॉक्टर मिश्र हुनका संग मिथिलाक गाम-गाम घुरलीह आ नारीक दीनता-परवशता-असहायताक साक्षात दर्शन कयलनि। जाहि महिलाक पति दरभंगा मेडिकल कॉलेजमे प्रोफेसर, विख्यात चिकित्सक, अपने स्वयं प्राध्यापिका, आर्थिक संपन्नता, ओहि महिलाकें मिथिलाक गरीबीक दर्शन मनकें झकझोरि कय राखि देलकनि, दिन-राति सोचबाक हेतु बाध्य कय देलकनि, एतेक धरि जे ओ स्वयं अपनाकें दोषी मानय लगलीह। एक दिस ऐश्वर्यक संग जीवन, प्राध्यापकक नौकरी तं दोसर दिस निरीह दलित नारी जे अन्न-पानि, दवाइक पुड़िया लेल बेकल, अशिक्षा आदि हिनक मनमे अशान्ति पसारि देलकनि। ओ एहि द्वन्द्व मे बेसी दिन नहि रहलीह आ ई नारीक उत्थानमे अपनाकें समर्पित कय देलनि। नौकरी छोड़ि देलनि। ई गामे-गाम जा गरीब परिवारमे दबाइ बांटथि, ओकर घर आंगनमे संग रहथि, ओकर झोपड़ीमे सुतथि आ ओकर सुख-दुःखक सहभागी बनथि आ एही कारणसं ओहि क्षेत्रमे मांजीक नामसं जानल जाय लगलीह।

हिनक ध्यान मिथिला चित्रकला

इलाहाबाद बैंकक सेवानिवृत्त वरीय प्रबंधक श्री हितनाथ झा कोइलख (ग्रामगाथा) लिखि चर्चित भेलाह। एहिसं पूर्व 'मैथिली इतिहासक रेखांकन'क संपादन कयने छथि। झारखंडक मैथिली साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे सक्रिय।

संपर्क : संपर्क : जयप्रभा नगर, सेलिब्रेशनक पूर्ब, स्टील गेट, हज़ारीबाग, 825301, झारखंड। मो. 9430743070, ईमेल : hitanathjha@gmail.com

दिस सेहो गेलनि। विशिष्टसं विशिष्टतम कलाकारक चित्र बिचौलिया अवमूल्यन कय खरीदैत छल आ ओसभ अत्यधिक दाममे बेचैत छल। श्रीमती मिश्र एहि शोषणक कुप्रयासकें विफल कयलनि। ओ प्रत्येक चित्रमे ओकर मूल्य टैग कय दिल्ली, मुम्बईमे प्रदर्शनी लगौलनि आ बेचलनि। उचित मूल्य दय कलाकारकें उत्साह बढौलनि।

1974मे डॉ. सतीश चन्द्रा (ऑल इंडिया हेंडीक्राफ्ट बोर्ड) हिनका सुझाव देलथिन जे आर्टिस्ट्स एसोसिएशनक गठन कय पैंटिंग्सक उपयोग होइ बला सामान, उचित मूल्य पर बिक्री आदिक व्यवस्थासं कलाकारक स्थितिक सुधार कैल जा सकैछ। मानवशास्त्री डॉक्टर रेमंड ली ओवेन्स 1976 मे 'फॉक आर्ट एंड मिथिला कल्चर' पर अध्ययन हेतु मधुबनी अयलीह। हुनका एहि विषयक सहायकक आवश्यकता छलनि। श्रीमती मिश्र मिथिला विश्वविद्यालयमे डॉक्टरेट उपाधिक हेतु पंजीकरण करौने छलीह, विषय छलनि 'सोशल, कल्चरल एंड लिटरेरी बैकग्राउंड ऑफ मिथिला पेंटिंग्स।' डॉ. रेमंड हिनका सहयोग करबाक हेतु निवेदन कयलकनि, कारण हिनका एहि विषयक गूढ़ अध्ययन छलनि, मैथिली-अंग्रेजीमे विषयकें विस्तारसं बुझा सकैत छलथिन। प्रत्येक चित्रक शास्त्रानुसार, उद्‌गम, प्रकार, चक्र, तंत्र पेंटिंग्स, इतिहासकारक कथन संग अपन निष्कर्ष सहित तर्कसं संतुष्ट करबाक क्षमता छलनि। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहितहुं, डॉक्टर रेमंडक संग कार्य करय लगलीह।

किछु मासक बाद, डॉक्टर रेमंड, डॉ. सतीश चन्द्राक सुझावपर अमल करबाक लेल आर्थिक सहयोग केलकनि आ डॉ. एरिकाक सहायतासं जितवारपुरमे जमीन लेलनि आ Mastercraftmen's Association for Mithila क गठन कयलनि आ तकर पंजीकरण करौलनि।

'सेवा (SEWA) मिथिला' (सेल्फ एम्प्लॉयड वूमंस एसोशिएशन) हिनक महत्वपूर्ण अवदान थिकनि, जाहि संस्थासं जुड़ि क' हजारो गरीब महिला आत्मनिर्भर भेलीह आ भ' रहलीह अछि। ई मिथिला चित्रकला गूढ़सं गूढ़ बात पर ध्यान दय एकरा आगां लय गेलीह, विश्व बाजारमे एकर मांग बढौलनि आ कलाकारकें उचित पारिश्रमिक देअयबामे सफलता प्राप्त कयलनि।

'वर्ल्ड आर्ट फिल्म आइएनसी प्रोजेक्ट'क अंतर्गत फिल्म मुन्नीमे सहायक निदेशकक रूपमे काज कयलनि। यूनिसेफ प्रोजेक्टक अन्तर्गत पददलित वर्गक कलाकार 'शान्ति देवी' फ़िल्ममे सलाहकारक रूपमे छलीह। महिला सशक्तीकरण ाक दिशामे हिनक प्रयास एक नव मोड़ अनलक आ 'सेवा मिथिला'क प्रतिनिधि रूपमे देश-विदेशक भ्रमण कयलनि आ सम्मेलन सभमे भाग लेलन्हि। जाहिमे प्रमुख थिक -विश्व महिला सम्मेलन, नैरोबी (1985) प्रतिनिधि भारत सरकार, BRAC बांग्लादेश (1986) प्रतिनिधि भारत सरकार, दक्षेस शिखर सम्मेलन, भूटान (1987) डेलिगेट हैंडीक्राफ्ट्स एक्जीबिशन, प्लानिंग एंड मैनेजमेंट ऑफ सर्विस डेलिवरी प्रोग्राम इन फैमिली प्लानिंग, हेल्थ एंड डेवलपमेंट, वाशिंगटन (1988) तथा हिडेलबर्ग मार्केट मीट, जर्मनी (1992)।

गौरी मिश्र मैथिली भाषा आ साहित्यक विकास हेतु सेहो अपन योगदान दैत रहलीह। प्रथम अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन रांची, 1993मे भाग लेलनि। मैथिलीक गतिविधिमे सहभागिताक हेतु आचार्य सुमनजीसं प्रशंसा पत्र पौलनि।

ई स्वाभाविक थिक जे एहन महत्त्वपूर्ण जनकल्याणकारी कार्यकें देशभरिक सामाजिक/सांस्कृतिक संगठन सभसं व्यापक स्वीकृति भेटलैक आ हिनका अनेक-अनेक पुरस्कार-सम्मानसं विभूषित कयल गेलनि, जाहिमे इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'द मैन ऑफ अचीवमेंट अवार्ड (1999), अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट द्वारा प्रोफेशनल वूमन एडवायजरी बोर्डक सदस्य (1999), इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी द्वारा 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सेलेंस' 2000 (ई अवार्ड 25 फरवरी 2000कें तत्कालीन तमिलनाडुक राज्यपाल महामहिम डॉक्टर भीष्म नारायण सिंह द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान कैल गेलनि।), विद्यापति सेवा संस्थान द्वारा मिथिला विभूति, नरेन्द्र झा चिट्टी-मिट्टी फाउंडेशन द्वारा झारखण्ड मिथिला मंच, रांचीसं सम्मान 2019, आदि।

एतय हिनक एक सम्मानक प्रशस्तिपत्र अविकल प्रस्तुत करय चाहब जे हिनका 1999मे इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'द मैन ऑफ अचीवमेंट अवार्ड 1999' देल गेलनि।

समयसं आगांक सोच रखनिहारि, मिथिलाक गौरव, परिवारक सम्मान, छियासी वर्षक आयुमे 17/08/2019 कें हिनक देहावसान दरभंगामे भेलनि आ कोइलख (सासुर)मे हिनक ज्येष्ठ पुत्र श्री अमरनाथ मिश्र (बच्चनजी) मुखाग्नि देलथिन आ मांजी (गौरी मिश्र) सदा-सर्वदाक हेतु पंचतत्वमे विलीन भ' गेलीह। ■

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि।

– संपादक

कर्तव्य बूझि लिखैत छी

✍ बिन्देश्वर ठाकुर



लेखक मैथिली आ नेपाली भाषाक कवि, गीतकार, साहित्यकार छथि। सम्प्रति कतार देशक राजधानी ‘दोहा’मे एकटा सरकारी कम्पनीमे कार्यरत छथि। मैथिली गीतक अनेक एलबम आबि चुकल छनि। अनेक सामाजिक-साहित्यिक संस्था सभमे सक्रिय भूमिकामे छथि। प्रकाशित पोथी : नेपालक नोर मरुभूमिमे (कविता संग्रह), प्रेमक टाइमलाईन (लघुप्रेमकथा संग्रह)।

गहीर सं देखल जाए त हरेक व्यक्तिक भीतर अपन अन्तर्निहित प्रतिभा होइत छै जे समय, परिस्थिति आ वातावरण हिसाबे अपने आप प्रस्फुटित होइत छै। एकरा अहुना कहल जा सकैए जे पृथ्वीपर जन्मल हरेक प्राणीके प्रकृति द्वारा कोनो खास प्रयोजनसं पठाओल जाइत छै। मुदा ई बात प्रणी स्वयं केर जीवन जिबाक क्रममे समय-परिस्थिती हिसाबे अपनेआप बुझ' पड़ैत छै वा अवस्था ओकरा स्वयं एहन वातावरणमे ढालि दैत छै। अपन अपन जिनगीमे सेहो एहने किछु अनुभव केने छी। ओना इतिहास गबाह छै जे मैथिलीक भरण-पोषण ओ संरक्षण-संबर्धन लेल प्रवास बहुत बेसी महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलने छै। सायद इएह कारण रहै जे समय काल हमरा सात समुन्द्र पार खाडी मुलूक दोहा-कतार पठेलक आ ओहिठाम मैथिली पुत्रसभक सहयोगमे मां मैथिलीक सेवाके मौका देलक। मरुभूमिमे मैथिलीक हरियरी प्रदान करबाक अवसर प्रदान केलक। तें बुझू हम जे एखन लिखि रहल छी से समयक मांग, प्रवासी सभक मोनक वेदना आ अपना भीतर गुम्सल नोस्ट्याल्जिक साहित्य थिक।

हम एकटा मध्यमवर्गीय परिवार सं छी। बाबूजी किसान आ माए गृहणी। तें साहित्यिक महौल त घरमे रहल नै कहियो यद्यपि साहित्य प्रति लगाब हमरा स्कूलिए जिनगी सं पड़ल रहए। गामक स्कूल सं पांच कक्षा पढलाक उपरान्त जखन 6 मे तिनकौरिया चौक एलौ, ओहिठाम नेपालीक एकगोट बहुत नीक आ समर्पित शिक्षक भेटल। कहबी छैक जे घरमे अभिभावक आ स्कूलमे शिक्षक जेहन बनाबए विद्यार्थी ओहने बनि जाइत छैक। हमर रुचि सबदिन सं साहित्यमे हेबाक कारणे एहन गतिविधि ओ कार्यक्रम सब प्रति हम मनलग्गु होइत गेलौं। विभिन्न ठाम ओ जगह सं पुरुस्कार पबैत गेलौ। सबगोटे सं प्रोत्साहित होइत गेलौ आ अपना आपके बेसी सं बेसी एहि क्षेत्रमे लगबैत गेलौं। ई क्रम लगभग कॉलेजधरि चलैत रहल यद्यपि साहित्य लिखैत रही। लिखि सकब वा कि अहिना लिखाइत छै से सब किछु नै बुझल रहए। मुदा लेखनी तैयो अनवरत चलैत रहए।

बदलैत समयक चपेटामे आ अपन जिनगीक संघर्षक पेनीपर ससरैत-ससरैत हम जखन प्रवासी भऽ दोहा-कतार एलौ। तखन अपन माटि-पानि, देश-कोस, अपन-अपनैती आ बन्धु-बान्धब बेसी जोर मारए लागल। एतुका काजके थकाबट आ एस्गरपना बेसी सताबए लागल। तखन कान्तिपुर पत्रिकामे एकटा विज्ञापन देखलियै आ सीधे कविता प्रतियोगितामे फानि गेलियै। ओ प्रतियोगिता नेपाली भाषामे रहैक। पैघ-पैघ कविसबहक जमघट रहैक अपितु ओहिमे जनाइ, कविता पढनाइ आ हुनका सबहक प्रोत्साहन सं हमर मोनमे अंकुरित भेल एकटा नेना कवि मोनके बढबाक लेल बहुत बेसी प्रोत्साहन आ समुच्चित वातावरण भेटलै। से आइ लेखकके रुपमे जगजियार होइत अछि आ होइत रहत।

तकरा बाद धीरे-धीरे नेपाली भाषामे लिखैत गेली। फेर कवि अब्दूर रज्जाक, बेचन महतो आदि सं भेट भेल। धीरे-धीरे फेसबूक ओ समाजिक संजालदिस पसरैत गेलौं। फेसबूक पर बहुत रास सर्जक ओ साहित्यकारलोकनि संग परिचय, सहकार्य आ सहयोग भेटल। जाहि कारणे मैथिली भाषामे लिखब शुरु केलौं। शुरुमे अध्यन,

संपर्क : पिता-श्री सूर्यनारायण ठाकुर, योगियारा-7, धनुषा, नेपाल (संप्रतिः दोहा, कतर) मो. 0097470032871, ईमेलः bindeshwarthakur@yahoo.com

लेखन ओ भाषिक शुद्धीकरणमे बहुत बेसी दिक्कत भेल। मुदा कहबी छै जे निरन्तर लगनसं एकदिन गगनमे सेहो अगन ल' गा सकैए लोक। मेहनेत, लगनशीलता आ तत्परतासं धीरे-धीरे सबकिछु ठीक होइत गेल आ हम अपना लेल, देश लेल, समाज लेल लिखैत गेलहुं।

जखन विदेह ग्रुप द्वारा हमर लिखल रचनासबके एकटा पोथी छपएबाक प्रस्ताव आएल हम भावविभोर भऽ गेलौं। 'नेपालक नोर मरुभूमिमे' नाम सं आएल ओ पोथी हमरा लेल साहित्य लेखन लेल ऊर्जा टॉनिक रुपमे काज केलक। तत्पश्चात कवि प्रणव नार्मदेय, असरफ राईन, सोगारथ यादव, राम अधिन सम्भव आदि संगक भेट सं आयोजना भेल कविगोष्ठी 'सांझक चौपाड़ि पर', 'कश्यप विद्यापीठ सुनसरी इनर्वा (नेपाल) एवं मैथिली जिन्दाबाद' (ऑनलाइन पत्रिका विराटनगर)केर संयोजकत्वमे देल गेल- 'युवा प्रतिभा पुरस्कार-2016' मैथिली सुपरस्टार विकास झा द्वारा नैनकसैया एलबममे गाओल गीत, चहटगर चटनी एलबममे तेजु मैथिल द्वारा गाओल गीत- "अपन मिथिलाके भैया जबाब नै कोनो" तहिना मैथिली लघु प्रेम कथा- 'प्रेमक टाइमलाइन' केर लोकार्पण, कतार सं बहराइत मैथिली त्रैमासिक पत्रिका- 'परदेशी आखर' केर सकारात्मक परिचर्चा ओ बड़ाइ हमरा लेल लेखनमे निरन्तर प्राण संचारके काज केलक। तखन लेखन एकटा जिम्मेवारी रहल आ एहि लेल अपनाके ठाढ़ कर पड़बाक बातक चेतना भेल। तहन लिखैत गेलौ आ लिखैत रहब।

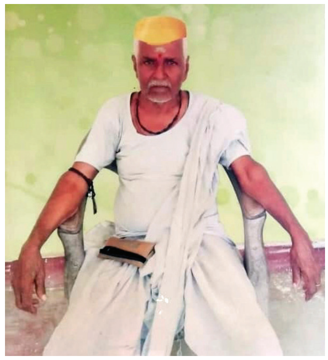
एखुनका स्थितीमे साहित्यमे जे किछु हमर अध्यन, लेखन ओ अनुभव अछि तांहि सं हम अतेकधरि शर उठाक' कहि सकैत छी जे साहित्य हमरा लेल जिनगी अछि। संतुष्टि अछि। जिनगीक सार अछि। जीवनक आधार अछि। कारण ई जे साहित्यमे हम जिनगीक बहुरंग देखैत छी, सिखैत छी, लिखैत छी आ एहि सं संतुष्ट होइत छी। संतुष्टिसं पैघ ओहुना संसारमे किछु नै। दोसर बात हमरा कारण सं आइ दर्जन सं बेसी नवतुरिया युवा-युवती सब लिखि रहल छै। जकरा हम केलियै किछु नै बस कनिका प्रोत्साहन, कने टर्चलाइट आ हमरा जे अबैए जे सुझाब ओ परामर्श देलियै। हमरा कारणे आइ ओ दर्जनो युवा जे लिखि रहल छै हमरा बहुत बेसी प्रसन्नता होइय। आ हम चाहैत छी जे एहन आओर दर्जनो, दर्जनो नवतुरियासब आगा आबए आ साहित्यिक नव-नव पीढी तयार होइक। तें हम लिखि रहल छी।

नेपालक राष्ट्रकवि माधव प्रसाद घिमिरे जीक अनुसार मृत्युक तीन किसिम होइत छै। उच्च, मध्यम आ निम्न। देशक सिपाही, पुलिस, सेना उच्च वर्गक मृत्यु प्राप्त करैत छै त लेखक-समाजसेवी मध्यम वर्गक मृत्यु। तहिना एहन व्यक्ति जे जीवनभरि अपना आ अपन कुटुम्ब लेल मात्रटा जिबैए ताहि व्यक्तिसभक लेल निम्न (सबसं नीच) स्तरके मृत्यु निर्धारण कएल गेल छैक। ई त सत्य छैक जे जन्मल हरेक व्यक्ति एक दिन मरतै। जन्म आ मृत्यु बीचके अवधिमे जे जतेक सुकर्म क' सकी सएहटा मरलाक उपरान्त संसारमे जीवित रहैत छैक आ एहि लेल समाज, देश, भाषा-साहित्य, कला-संस्कृति आदि लेल किछु कर्म कर पड़ैत छैक। तें हम अपन जीवनमे नइं कोनो पैघ काम मुदा अपन भाषा-साहित्य ओ संस्कृति लेल जतेक सकब ततेक पढ़ब, लिखक, संरक्षण-संवर्धन करब, संस्कार ओ संस्कृतिकें उजागर करब। समाजमे सचेतना पसारब। इएह अभिप्रायसं लिखैत छी आ आमरण लिखैत रहब।

एकरा आओर फरिछाक जऽ कहल जाए त एना कहल जा सकैछै। शुरुमे हम साहित्य लौल-चौल वा कि अपन एस्गरपनाके मिटाबए लेल लिखैत रही। मुदा एखन साहित्य लिखब हमर जिनगीक सार, संतुष्टिक आधार, समाज ओ देशप्रतिके जिम्मेवारी एवं हमरा आदर्श मानए बला ओ सम्पूर्ण नवतुरिया सबहक प्रेरणाप्रद होएबाक परम् कर्तव्य भऽ गेल अछि। आ हम एकरा सहर्ष स्वीकारैत छी। हमर मानब अछि जे हमरासं अग्रजलोकनि केर बाद अथवा हमरा बाद जे नवतुरिया तयार हेतैक ओकरा लेल कियो ने कियो त मार्गदर्शक चाही ने? कियो ने कियो त प्रेरक चाहिं ने? ओ भूमिकामे हम ठाढ़ रही। हम मानैत छी ओइ नवतुरियासबके श्रेष्ठ बनाएब, उच्च वर्गक विद्वान ठाढ़ करब हमर ब'स के बात नइं मुदा ओ बाट त अवस्से देखा सकैत छी जइ बाट होइत ओ डॉ. राजेन्द्र बिमल, महेन्द्र मलङ्गिया, अजित आजाद, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाबा नागार्जुन, राजकमल चौधरी आदिक पदचिन्ह धरि आसानी सं पहुंच सकए... तें हम लिखि रहल छी आ सदैव लिखैत रहब। ■

शोध पत्र जमा करबाक लेल दिशा-निर्देश

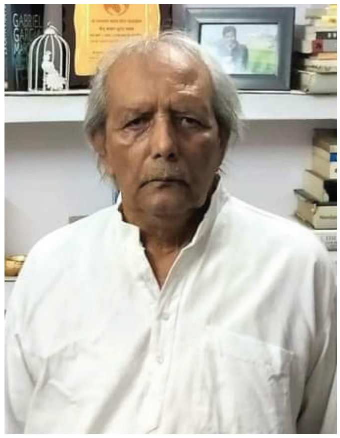
- शोध-पत्र एमएस वर्डमे मंगल वा कृतिदेव फॉण्टमे 14 पॉइंट साइजमे टंकित करायके ई-मेल करू।
- शोध-पत्र लिखैत काल सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख करू। पुस्तकक सन्दर्भ, पत्र-पत्रिकाक सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष आ संस्करणक अंकित हैब अनिवार्य अछि। सन्दर्भक लेल ए.पी.ए.-छठम शैली (A PA 6th Edition) के उपयोग करब अनिवार्य अछि।
- शोधपत्र पूर्ण रूपेण मौलिक हेबाक चाही, जेकर घोषणा-पत्र संलग्न हेबाक चाही, नहि त' शोध-पत्र पर विचार नहि कयल जायत।
- शोध-पत्रक प्रकाशन संपादक-मंडल पर निर्भर अछि। संपादक-मंडल के संतुष्ट हेबाक बादे शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत।
- शोध-पत्रक आरंभमे शोध-सारांश (बेसी सं बेसी 100 शब्द) आ अंतमे निष्कर्ष अवश्य लिखू।
- पोथी-समीक्षाक लेल संपादकक लग कार्यालय कें पता पर पठाबी।



डॉ. शिवाकान्त झा

(03/05/1935–21/10/2020)

ज्योतिष शास्त्र विशारद पूर्व प्राचार्य डॉ. शिवाकान्त झा जी संस्कृत जगत आ मिथिला कें धरोहर छलाह। फलित ज्योतिषक क्षेत्र कें महारथी डॉ. झा जी'क सन् 1957 मे रामेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालयमे नियुक्ति भेल छलन्हि। सन् 1976 मे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय'क स्नातकोत्तर ज्योतिष विभागमे हिनक स्थानान्तर भेलन्हि। एहि विश्वविद्यालय सं 31 मार्च 1995 कें सेवानिवृत भेलाह। हिनक शास्त्र-कीर्ति-पताका सदिखन शास्त्र-साम्राज्य-कीर्ति'क स्थापित करैत रहत।



पद्मनारायण झा 'विरंचि'

(जनवरी 1940–31.12.2020)

अखिल भारतीय मिथिला संघक भूतपूर्व कार्यसमिती सदस्य, मैथिली आ हिन्दीक दिग्गज पत्रकार तथा प्रखर समाजवादी चिंतक श्री पद्मनारायन झा 'विरंचि' केर निधन 31 दिसम्बर 2020 कें भ गेल।

स्वर्गीय विरंचि जी समाजवादी आंदोलनमे अनेक महत्वपूर्ण दायित्व सबहक निर्वाह केने छलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघमे ओ 1980 केर दशकमे सक्रिय भेल छलाह। ओ सोशलिस्ट पार्टीक मुखपत्र 'जनता' केर संपादक सेहो रहलाह। संगहि 1969 से 1973 धरि ओ मैथिली पत्रिका 'मिथिला मिहिर' मे लिखय छलाह। एहि पत्रिका लेल ओ जनसंघक शीर्ष नेता अटल बिहारी वाजपेयी के साक्षात्कार मैथिली भाषाक परिप्रेक्ष्यमे कएने छलाह जे बेश चर्चित रहल।

बिहारक मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार सहित अनेकानेक वरिष्ठ नेतागण विरंची जीक निधन पर शोक व्यक्त कयलनि। अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष श्री विजय चन्द्र झा कहलनि जे हुनका विरंचि जी सं बहुत स्नेह भेटय छल। विरंचि जीक निधन स मिथिला मैथिलीक अपूरणीय क्षति भेल अछि।



डॉ. योगमाया झा

(1947–23.12.2020)

वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार डॉ. योगमाया झाक देहावसान 23 दिसम्बर 2020 कें 72 वर्षक अवस्था मे भ गेल। ओ मैथिलीक प्रतिनिधि साहित्यकार श्री चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक सुपुत्री आ प्रो. डॉ. रामदेव झाक अर्द्धांगिनी छलीह।

"मैथिली साहित्यमे गंगा'' डॉ. योगमाया झाक शोध कृति प्रकाशित छनि।

(स्रोत: श्री बिभूति आनंद जीक फेसबुक वाल)

डॉ. रामानन्द झा

(निधन: 31 अक्टूबर, 2020)

इतिहासक विद्वान प्राध्यापक, अध्येता, 'हिस्ट्री ऑफ सरकार तिरहुत अंडर द ईस्ट-इंडिया-कंपनीक लेखक एवं महारानी कल्याण ी महाविद्यालय, लहेरियासरायक सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, कबिलपुर ग्राम निवासी डाक्टर रमानन्दझाक निधन दिसंबरमे भऽ गेलनि। अस्सी वर्षीय डाक्टर झा पछिला किछु दिनसं अस्वस्थ चलि रहल छलाह। व्यवहार कुशल ओ सामाजिक आचार-विचारमे पटु डाक्टर रमानन्दझाक निधनसं नहि केवल कबिलपुर ग्रामवासी अपितु मिथिला समाज लोकनि शोकाकुल भऽ उठलाह अछि। ■

(स्रोत: श्री शंकर देव झा जीक फेसबुक वाल)

सिमानक पार मिथिला





सिंगापुर केर ईस्ट कोस्ट बीच पर आयोजित छठि (2019) पाबनिक दृश्य



ओमानक राजधानी मस्कटमे आयोजित
मैथिल मिलन समारोह (2019)



मैथिल्स ऑफ नार्थ अमेरिका (मोना) आ एशोसिएशन
ऑफ नेपाल तराईन इन अमेरिका (एएनटीए) द्वारा आयोजित
विद्यापति समारोहक (2019) झलकी

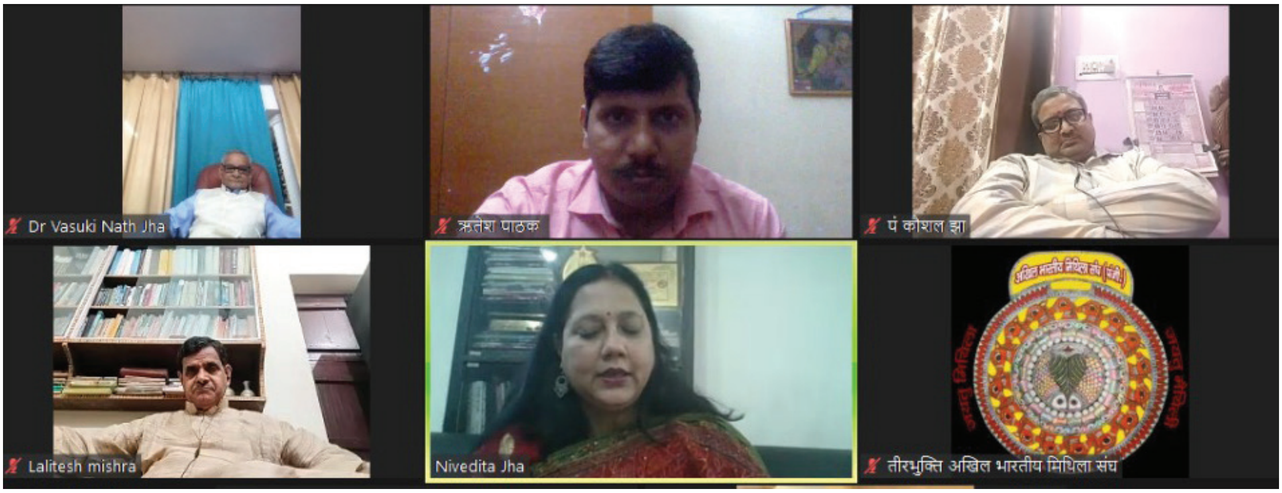
ISSN : 2582-1660
29 दिसंबर, 2020 कें प्रकाशित

TEERBHUKTI - The Journal of Akhil Bhartiya Mithila Sangh
RNI No. : DELMAI/2018/76698

मिथिला विभूति स्मृति व्याख्यानमाला : किछु चित्र



महाकवि आरसी प्रसाद सिंह स्मृति के आयोजित ई-व्याख्यानमाला मे शामिल प्रतिभागीगण



ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र स्मृति मे आयोजित ई-व्याख्यानमाला मे प्रतिभागीगण



मैथिली भाषाक प्रथम पत्रकार महामहोपाध्याय मुरलीधर झा केर स्मृति मे आयोजित ई-व्याख्यानमाला मे प्रतिभागीगण

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'